आ पुस्तक अमदावाद प्रसिद्ध कर्ता पासेथी तेमज निचेना ठेकाणेथी मळशे. जैनस्थानकवासी विद्यालय सी. पी. टेंकरोड नं. ५३–५७ मुंबाइ. श्रावक भीमसी माणेक–मांडवी बंदर–मुंबाइ. शा. बालाभाइ छगनलाल कीकाभटनी पोळ–अमदावाद. संघवी–वाडीलाल काकुभाइ सारंगपर तळीयानी पोळ–अमदावाद.

इंडियादिक घरनाले छिद्रेकरी । कर्म पापरूप जलनो प्रवाह आवे । तेहने आश्रवतत्व कहिये ॥५॥ संवरतत्व ते जीवरूप तलावने विषे ॥ कर्मरूप जल आवतां व्रतपच्चखाणादिक द्वार देवेकरी रोकीये ॥ तेहने संवरतत्व कहिये ॥६॥ निर्जरातत्व ते ॥ आत्माना प्रदेशथि बार नेदे तपस्याये करी देशथकि कर्मनुं निर्जरवुं ऊरीने दुर थावुं ॥ तेहने निर्जरातत्व कहिये ॥ ७ ॥ बंधतत्व ते । आत्माना प्रदेशने कर्मपुद्गलना दल खीरनीरनी परे ॥ लोहपिंड अग्निनी परे । लोलीनूत थइबंधाय ॥ तेहने बंधतत्व कहिये ॥८॥ मोक्षतत्व ते सकल आत्माना प्रदेशथि सकल कर्मनुं बुटवुं ॥ सकल बंधनुं मुकाववुं ॥ सकल कार्यनि सिद्धि थाय ॥ तेहने मोक्षतत्व कहिये ॥९॥ ए नव पदार्थनुं जाणपणुं ॥ तेहने तत्व कहिये ॥ हवे जीवनो एक नेद छे ॥ सकल जीवोनुं चैतन्य लक्षण एक छे ॥ माटे संग्रहनये करि एक नेदे जीव कहिये ॥ तथा बे प्रकारे पण जीव कहिये ॥ त्रस ॥१॥ थावर ॥२॥ तथा ॥ सिद्ध ॥१॥ ने संसारी ॥२॥ तथा त्रण नेदे जीव ॥ स्त्री वेद ॥ १ ॥ पुरुषवेद ॥ २ ॥ नपुंसकवेद ॥ ३ ॥ तथा नवसिद्धिया ॥१॥ अनवसिद्धिया ॥२॥ नोनवसिद्धिया नोअनवसिद्धिया ॥३॥ तथा-च्यार नेदे जीव ॥ नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ मनुष्य ॥ ३ ॥ देवता ॥ ४ ॥ तथा

ए ५ ना अप्रजाप्ता । ने । प्रजाप्ता । एवं ॥१०॥ तथा ॥ इग्यार ज्ञेदे जीव ॥ एकेंड्रिय ॥१॥ बेइंड्रिय ॥ २ ॥ तेइंड्रिय ॥३॥ चउरिंड्रिय ॥४॥ नारकी ॥५॥ तिर्यंच ॥६॥ मनुष्य ॥ ७ ॥ ज्ञवनपति ॥ ८ ॥ वाणव्यंतर ॥ ए ॥ ज्योतिषी ॥ १० ॥ वैमानिक ॥ ११ ॥ तथा ॥ १२ ॥ ज्ञेदे जीव ॥ पृथवी ॥१॥ अप ॥ २ ॥ तेउ ॥३॥ वाउ ॥४॥ वनस्पति ॥५॥ त्रसकाय ॥६॥ ए ठना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ॥ एवं ॥ १२ ॥ तथा तेरज्ञेदे जीव ॥ कृष्णलेशी ॥ १ ॥ निललेशी ॥ २ ॥ कापुतलेशी ॥ ३ ॥ तेजुलेशी ॥ ४ ॥ पद्मलेशी ॥ ५ ॥ शुकललेशी ॥ ६ ॥ ए । ठना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एवं ॥ १२ ॥ ने । एक अलेशी ॥ १३ ॥ एवं ॥ १३ ॥ हवे जीवना ॥ १४ ॥ ज्ञेद कहे ठे ॥ सुक्ष्म एकेंड्रियनो अप्रजाप्तो ॥ १ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ २ ॥ वादर एकेंड्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ ४ ॥ बेइंड्रियनो । अप्रजाप्तो ॥ ५ ॥ ने । प्रजाप्तो ॥६॥ तेइंड्रियनो । अप्रजाप्तो ॥७॥ ने । प्रजाप्तो ॥८॥ चउरिंड्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ए ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १० ॥ असंज्ञी पंचेंड्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ११ ॥ ने प्रजाप्तो ॥१२॥ संज्ञी पंचेंड्रियनो अप्रजाप्तो ॥१३॥ ने प्रजाप्तो ॥१४॥ हवे व्यवहार विस्तार नये करीने पांचसेंत्रे-

प्रस्तावना.

श्रीजिनवरेंद्रायनमः ॥ श्री जैनधर्मी साधु साध्वी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघने ज्ञान दर्शन चारित्र तप ए ४ मोक्ष मार्गना हेतु छे तेहमां पण ज्ञान ए मुख्य हेतु छे, केमके दशवैकालिक अध्ययन चोथे पढमंनाणं तओदया कह्युं छे वळि नंदिसूत्रमां नवपूर्वना भणनार मां सम्यक्त्व भजना कहि छे, ने उपरना पूर्व भणनारमां नियमां सम्यकत्व कह्युं छे. तेमज भगवतीमां एकला शीलसंपन्न ने देशआराधक कह्या छे, ने एकला श्रुतसंपन्न ने देशविराधक कह्या छे माटे सूत्र सिद्धांत तपासतां जैनमां ज्ञान विशेष छे. ते ज्ञान भणवाथि हेय ज्ञेय ने उपादेय पदार्थनुं जाणपणुं थाय छे. जेथि जिवने वैराग्य दशा प्राप्त थाय छे. ने परंपराए मोक्षनि गतिनो लाभ थाय छे, एवुं ज्ञाननुं महातम्य जाणिने आजना अल्प बुद्धि जिवोने थोडा काळमां विशेष ज्ञान थवा माटे श्री सिद्धांत प्रकरण संग्रह ३२ थोकडानुं पुस्तक मर्हुम श्रीमन्मंगलजी महाराजना शिष्य मुनि करसनजी महाराज पासे शुद्ध करावी छपावि प्रसिद्ध कर्युं छे तेमां कोइ भूल चुक रहि गइ होय तो पंडित जन अमारा उपर कृपा करि सिद्धांत तथा ग्रंथ जोइ सुधारि लेशो ए अमारि विज्ञप्ति छे आ पुस्तक उघाडे मुखे तथा दिवाने अजवाळे वांचवुं नहि जेथि ज्ञाननि असातना न थाय.

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा सोम संवत १९७८. } ली. जीवनदास रुगनाथदास शाह.
आकाशेठना कुवानी पोळ–अमदावाद.

तेहने फरतो ॥८॥ लाख जोजननो । अर्द्धपुष्कर । द्वीप छे ॥ तेहमां ॥ २ भरत ॥ २ इरवत ॥ २ महाविदेह छे ॥ एवं । छ ॥१२॥ ने ॥३॥ पनर कर्मभूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे ३० अकर्मभूमिना मनुष्य कहेछे ॥ अकर्मभूमि ते केहने कहिये ॥ ३ कर्मरहित दशप्रकारना कल्पवृक्षेकरीने जीवे तेहने अकर्मभूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते केटला छे ॥५॥ हेमवय ॥ ५ हिरणवय ॥ ५ हरिवास ॥ ५ रमकवास ॥ ५ देवकुरु ॥ ५ उतरकुरु ॥ एवं ॥३०॥ अकर्मभूमिना मनुष्य जाणवा ॥ हवे जंबुद्वीपमां ॥ १ हेमवय ॥ १ हिरणवय ॥ १ हरिवास ॥ १ रमकवास ॥ १ देवकुरु ॥ १ उतरकुरु ॥ एवं ॥ ६ ॥ क्षेत्रजंबुद्वीपमां छे ॥ धातकिखंडमां बबे जाणवा ॥ एवं ॥ १८ ॥ अर्द्धपुष्करद्वीपमां बबे जाणवा ॥ एवं ॥३०॥ अकर्मभूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे छपनअंतरद्वीपना मनुष्य कहे छे ॥ जंबुद्वीपना भरतक्षेत्रनि मर्यादानो करणहार । चुल हिमवंतनामा पर्वत छे ॥ ते पीला सोनामय छे ॥ ते सो जोजननो ऊंचो छे ॥ सो गाउनो ऊंडो छे ॥ एकहजार बावन जोजन ने बार कलानो पहोलो छे ॥ चोविशहजार नवशेंबत्रिश जोजननो लांबो छे ॥ तेहने पूर्व पश्चिमने छेहडे बबे दाढा निकलि छे ॥ एकेकि दाढा चोराशीशें चोराशीशें जोजननी

जाणवा ॥ अंतरद्वीपाना मनुष्य ते कहेने काहेय ॥ हठ समुद्र ७ ॥ अने उपर अथर झाढामां द्वीपाना रहेनार छे ॥ माटे अंतर द्वीपाना मनुष्य कहिये । हवे १०१ क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्य ॥१४ स्थानकमां उपजे छे ते कहेछे ॥ उच्चारेसुवा तें वडिनितमां उपजे ॥१॥ पासवणेसुवा ते लघुनितमां उपजे ॥२॥ खेले सुवा ते वलखामां उपजे ॥३॥ संघाणेसुवा ते लिंटमां उपजे ॥४॥ वंतेसुवा ते वमनमां उपजे ॥५॥ पीतेसुवा ते निलापिला पीतमां उपजे ॥६॥ पुइएसुवा ते परुमां उपजे ॥७॥ सोणिएसुवा ते रुधिरमां उपजे ॥८॥ सुक्केसुवा ते विर्यमां उपजे ॥९॥ सुक्कपोगलपरिसाडिएसुवा ते विर्यादिकना पुद्गलसुकाणा ते फिरि भीना थाय तेहमां उपजे ॥ १० ॥ विगयजीव कलेवरेसुवा ते मनुष्यना कलेवरमां उपजे ॥ ११ ॥ इत्थिपुरिस संजोगेसुवा ते स्त्रीपुरुषना संजोगमां उपजे ॥ १२ ॥ नगरनिधमणेसुवा ते नगरनी खालोमां उपजे ॥१३॥ सव्वेसुचेवअसुइठाणेसुवा ते सर्वमनुष्य संबंधिअशुचिस्थानकोमां उपजे ॥१४॥ एवं ॥ १०१ क्षेत्रनासमुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता ॥ एवं सर्व मिली ॥३०३॥ भेद मनुष्यना कह्या ॥ हवे देवताना ॥ १९८ ॥ भेद कहेछे ॥ तेहमां । दश भवनपतिना नाम ॥ असुर

—— ॥ [illegible] प्रनेश ने केवले कहिये॥ ते ते समुद्र ठे ॥ अने उपर अधर
स्थिर ते अढि द्विपबाहिर ठे ॥ एवं ॥१०॥ हवे ॥३॥ किल्विषिना नाम ॥ त्रण पलिया ॥१॥ त्रण सागरिया ॥२॥ तेर सागरिया ॥३॥ नव लोकांतिकना नाम ॥ सारस्वत ॥ १ ॥ आदित्य ॥२॥ विन्हि ॥३॥ वरुण ॥४॥ गर्द्दतोया ॥५॥ तोषिया ॥ ६ ॥ अव्यावाधा ॥ ७ ॥ अगिच्चा ॥ ८ ॥ रिठा ॥९॥ बार देवलोकना नाम ॥ सुधर्म ॥१॥ इशान ॥२॥ सनत्कुमार ॥३॥ माहेंद्र ॥४॥ ब्रह्मलोक ॥५॥ लंतक ॥ ६ ॥ महाशुक्र ॥ ७ ॥ सहसार ॥ ८ ॥ आणत ॥९॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अच्चुय ॥ १२ ॥ नव ग्रीवेकना नाम ॥ नद्दे ॥ १ ॥ सुनद्दे ॥ २ ॥ सुजाए ॥ ३ ॥ सुमाणसे ॥ ४ ॥ प्रियदर्शणे ॥ ५ ॥ सुदर्शने ॥ ६ ॥ आमोहे ॥७॥ सुपडिवद्धे ॥८॥ जशोधरे ॥ ९ ॥ पांच अनुत्तर विमानना नाम ॥ विजय ॥ १ ॥ विजयंत ॥२॥ जयंत ॥३॥ अपराजित ॥४॥ सर्वार्थसिद्ध ॥ ५ ॥ ए ९९ जातना देवता अप्रजाप्ता ने ॥९९ जातना प्रजाप्ता । एवं ॥१९८॥ नेद देवताना कह्या ॥ हवे तिर्यंचना॥४८॥ नेद कहेठे ॥ पृथवी ॥१॥ पाणि ॥२॥ तेउ ॥ ३ ॥ वाउ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ सुक्ष्म ने ॥ ४ वादर ॥ एवं ॥८॥ ए ना अप्रजाप्ता ने ॥ ८ ना प्रजाप्ता ॥ एवं ॥१६॥ वनस्पतिना ॥३॥ नेद ॥

… ॥ नेवे समज छे ॥ अने उपर अधर

देश ॥ ५ ॥ प्रदेश ॥ ६ ॥ आकाशास्ति कायनो स्कंध ॥ ७ ॥ देश ॥ ८ ॥ प्रदेश ॥ ए ॥ अद्धासमयकाल ॥१०॥ ए ॥१०॥ नेद अरूपि अजीवना कह्या ॥ हवे रूपि अजीवना ॥ ४ नेद कहेछे ॥ पुद्गलास्तिकाय नो स्कंध ॥ ११ ॥ देश ॥ १२ ॥ प्रदेश ॥ १३ ॥ परमाणु पुद्गल ॥ १४ ॥ एवं ॥ १४ ॥ हवे व्यवहार विस्तारनयेकरी ॥ ५६० ॥ नेद अजीवतत्वना कहेछे ॥ तेहमां ॥३०॥ नेद । अरूपि अजीवना कहेछे ॥ धर्मास्तिकाय द्रव्यथकि एक॥१॥ क्षेत्रथकि आखा लोक प्रमाणे ॥२॥ कालथकि अनादिअनंत ॥३॥ नावथकि । अवर्णे अगंधे । अरसे । अफासे । अमूर्ति ॥४॥ गुणथकि चलणसहाय ॥ ५ ॥ अधर्मास्तिकाय द्रव्यथकि एक ॥६॥ क्षेत्रथकि आखा लोकप्रमाणे ॥७॥ कालथकि अनादिअनंत ॥ ८ ॥ नावथकि । अवर्णे । अगंधे । अरसे । अफासे । अमूर्ति ॥ए॥ गुणथकि स्थिर सहाय ॥१०॥ आकाशास्तिकाय द्रव्यथकि एक ॥११॥ क्षेत्रथकि लोकालोक प्रमाणे ॥ १२ ॥ कालथकि अनादि अनंत ॥ १३ ॥ नावथकि । अवर्णे । अगंधे । अरसे । अफासे । अमूर्ति ॥ १४ ॥ गुणथकि ॥ अवगाहनादान ॥१५॥ हवे काल द्रव्यथकि अनेक ॥१६॥ क्षेत्रथकि । अढिद्वीपप्रमाणे॥१७॥

सो ॥ हवे ॥८॥ स्पर्श । खरखरो ॥१॥ सुहालो ॥२॥ भारि ॥३॥ हलवो ॥४॥ टाढो ॥५॥ उन्हो ॥६॥ चोपरूयो ॥७॥ लुखो ॥८॥ एकेका स्पर्शमां । त्रेविश त्रवीश भेद लाभे ॥ ५ वर्ण ॥२॥ गंध ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ६ ॥ स्पर्श ॥ एवं ॥ २३ ॥ भेद लाभे । खरखरामां खरखरो ने सुंहालो बे वर्जवा ॥ एम बबे स्पर्श वर्जवा ॥ एवं ॥ २३ अठा १८४ ॥ एवं सर्व मिलिने ॥५३०॥ भेदरूपि अजीवना कह्या ॥ एवं सर्व मिलिने ॥५६०॥ भेद । अजीवना जाणवा ॥ इति अजीवतत्त्वं समाप्तं ॥ २ ॥ हवे नव भेदे पुण्यउपराजे ते कहे छे ॥ अन्नपुन्ने ॥१॥ पाणपुन्ने ॥२॥ लयणपुन्ने ॥३॥ शयणपुन्ने ॥ ४ ॥ वस्त्रपुन्ने ॥ ५ ॥ मनपुन्ने ॥ ६ ॥ वचन पुन्ने ॥७॥ कायपुन्ने ॥८॥ नमस्कार पुन्ने ॥९॥ ए ॥९॥ भेदे पुण्य उपराजे ॥ तेहना शुभ फल ॥४२॥ भेदे भोगवे ॥ शातावेदनिय ॥१॥ उंच गोत्र ॥२॥ मनुष्यगति ॥३॥ मनुष्यानुपूर्वी ॥४॥ देवतानि गति ॥५॥ देवानुपूर्वी ॥६॥ पंचेंद्रियनि जाति ॥७॥ उदारिक शरिर ॥८॥ वैक्रेय शरिर ॥९॥ अहारक शरिर ॥१०॥ तैजस शरिर ॥११॥ कार्मण शरिर ॥१२॥ उदारिकना अंग उपांग ॥१३॥ वैक्रेयना अंग उपांग ॥१४॥ आहारकना अंग उपांग ॥१५॥ वज्ररिषभ-

॥ श्री सिद्धांत प्रकरण संग्रह ॥

सुधारा वधारा सहित,

छपावी प्रसिद्ध करनार,

जीवनदास रुगनाथदास शाह,

आकाशेठना कुवानी पोळ—अमदावाद.

आवृत्ति १ ली. प्रत १०००. संवत १९७८. सने १९२१.

किम्मत बे रुपैया पाका पुंठाना २—४—०



परिग्रह ते आ० ॥१०॥ श्रोतेंद्रियअसंवरे ते आ०॥११॥ चक्षुइंद्रियअ०आ०॥१२॥ घ्राणेंद्रियअ० आ० ॥१३॥ रसेंद्रियअ०आ० ॥१४॥ स्पर्शेंद्रियअ०आ० ॥१५॥ मनअ०आ० ॥ १६ ॥ वचन अ०आ० ॥१७॥ कायअ०आ० ॥१८॥ जंमउपगरणउपधिजिमतिमलियेमुके ते आ० ॥१९॥ शुचिकुसग्ग करे ते आ० ॥ २० ॥ हवे विशेषे ॥ ४२॥ जेद कहेबे ॥ ५ ॥ आश्रव ॥ ५ ॥ इंद्रिय मोकलि मुके एवं ॥ १० ॥ ने ॥ ४ ॥ कषाय ॥ एवं ॥ १४ ॥ ने त्रण अशुज जोग । एवं ॥ १७ ॥ ने ॥ २५ ॥ क्रिया ते ॥ कायिकी क्रिया ॥ १ ॥ अधिकरणकी क्रिया ॥ २ ॥ पाउसिया ॥ ३ ॥ पारितावणिया ॥ ४ ॥ पाणाइवाय ॥ ५ ॥ आरंजिया ॥ ६ ॥ परिग- हिया ॥ ७ ॥ मायावतिया ॥ ८ ॥ अपच्चखाणवतिया ॥ ९ ॥ मिबादंशणवतिया ॥ १० ॥ दिठीया ॥११॥ पुठिया ॥१२॥ पाडुचिया ॥ १३ ॥ सामतोवणिया ॥ १४ ॥ नेसथिया ॥१५॥ सहथिया ॥१६॥ अणवणिया ॥१७॥ विदारणिया ॥ १८ ॥ अणाजोगी ॥ १९ ॥ अणवकंख- वतिया ॥ २० ॥ अनापउगी ॥ २१ ॥ सामुदाणी ॥ २२ ॥ पेजवतिया ॥ २३ ॥ दोसवतिया ॥ २४ ॥ इरियावहिया क्रिया ॥ २५ ॥ एवं ॥२५॥ ने ॥२७॥ बेतालीश जेद आश्रव तत्वना

॥१३॥ जाचवानो० ॥ १४ ॥ अलाभनो० ॥ १५ ॥ रोगनो० ॥ १६ ॥ तृणस्पर्शनो० ॥ १७ ॥ मेलनो० ॥ १८ ॥ सत्कार पुरस्कारनो० ॥ १९ ॥ प्रज्ञानो० ॥२०॥ अज्ञाननो० ॥२१॥ दंशण परिसह ॥ २२ ॥ ए ॥ २२ ॥ ने ॥ ८ ॥ पूर्वें कह्या ते । एवं ॥ ३० ॥ खंति ॥ ३१ ॥ मुत्ति ॥ ३२ ॥ अज्जवे ॥ ३३ ॥ मद्दवे ॥ ३४ ॥ लाघवे ॥ ३५ ॥ सच्चे ॥३६॥ संजमे ॥ ३७ ॥ तवे ॥३८॥ चियाए ॥ ३९ ॥ बंभचेरवासे ॥४०॥ ए ॥ १० ॥ प्रकारे जतिधर्म आराधवो ने ॥१२॥ भावना भाववी । तेहना नाम ॥ अनित्यभावना ॥ १ ॥ अशरणभा० ॥२॥ संसारभा० ॥३॥ एकत्वभा० ॥ ४ ॥ अन्यत्वभा० ॥५॥ अशुचिभा० ॥६॥ आश्रवभा० ॥ ७ ॥ संवरभा० ॥८॥ निर्जराभा० ॥ ९ ॥ लोकभा० ॥ १० ॥ बोधभा० ॥ ११ ॥ धर्मभा० ॥ १२ ॥ ए ॥ ४० ॥ ने ॥ १२ ॥ बावन । शामायकचारित्र ॥५३॥ छेदोपस्थापनिय० चा० ॥ ५४ ॥ परिहारविशुद्ध ॥५५॥ सुक्ष्मसंपराय० ॥ ५६ ॥ जथाख्यात० ॥५७॥ ए ॥ ५७ ॥ भेद संवरतत्वना जाणवा ॥ इति संवरतत्वं समाप्तं ॥६॥ हवे निर्जराना ॥१२॥ भेद कहेछे ॥ अनशन ॥१॥ ऊणोदरि ॥२॥ वृत्तिसंक्षेप ॥ ३ ॥ रसपरित्याग ॥४॥ कायक्लेश ॥५॥ पडिसंलिणया ॥६॥ ए छ भेद बाह्य-

बंधतत्वं समाप्तं ॥ ७ ॥ हवे मोक्षतत्व ते ॥ १५ ॥ भेदे सिद्ध थाय ते कहेछे ॥ तिर्थ सिद्धा ॥१॥ अतिर्थ सिद्धा ॥२॥ तिर्थंकर सिद्धा ॥३॥ अतिर्थंकर सिद्धा ॥४॥ ग्रहस्थलिंग सिद्धा॥५॥ अन्यलिंग सिद्धा ॥६॥ स्वलिंग सिद्धा ॥७॥ स्त्रीलिंग सिद्धा ॥८॥ पुरुषलिंग सिद्धा ॥ ९ ॥ नपुंसकलिंग सिद्धा ॥ १० ॥ स्वयंबुद्ध सिद्धा ॥ ११ ॥ प्रत्येकबुद्ध सिद्धा ॥ १२ ॥ बुद्धबोहि-सिद्धा ॥ १३ ॥ एक सिद्धा ॥ १४ ॥ अनेक सिद्धा ॥ १५ ॥ तथा ॥ ४ ॥ प्रकारे जीवमोक्ष जाय ते कहेछे ॥ ज्ञानेकरि ॥ १ ॥ दर्शनेकरि ॥ २ ॥ चारित्रेकरि ॥ ३ ॥ तपेकरि ॥ ४ ॥ तथा ॥ ९ ॥ द्वार मोक्षना कहेछे ॥ सत्पदरूपणा ते ॥ मोक्षगति पूर्वकाले हति हमणा पण छे । आगमिये काले हशे ते छति अस्ति छे । पण आकाशना फुलनिपरे नास्ति नथि ॥१॥ द्रव्यप्रमाणे ते सिद्ध अनंता छे ॥ अभव्य जीवथि अनंतगुणा अधिक छे । वनस्पति वर्जिने॥२३॥ दंमकथि सिद्धना जीव अनंतगुणा अधिक छे ॥२॥ क्षेत्रद्वार ते सिद्धशिला प्रमाणे छे ॥ ते। सिद्धशिला पिशतालिस लाख जोजननी लांबि पहोलि छे ॥ अने त्रिगुणि काझेरि परिधि छे ॥ अने उंचपणे ॥ ३३३ ॥ धनूष ने ॥ ३२ ॥ आंगुलप्रमाणे ॥ एटला क्षेत्रमां सिद्ध रह्या

धणि होयते मोक्ष जाय ॥ जघन्य बे हाथनि अवघणावालो ॥ उत्कृष्टि पांचशें धनुषनि अवघेणावालो । जघन्य नव वरसनो ॥ उत्कृष्ट पूर्वकोडिना आयुषवालो कर्मभूमिनो होय ते मोक्षमा जाय ॥ इति मोक्षतत्वं समाप्तं ॥ ए ॥ इति नव तत्वना बोल संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री छकायना बोलनो थोकडो. ॥

अथश्री छकायना बोल लिख्यते ॥ पहेले बोले इंद्री थावरकाय ॥१॥ बीजे बोले बंभी थावरकाय ॥ ३ ॥ सपि थावरकाय ॥ ४ ॥ सुमति थावरकाय ॥ ५ ॥ पयावच्च थावरकाय ॥६॥ जंगमकाय ए छकायनां नाम कह्यां ॥ हवे गोत्र कहेछे ॥ पृथवी काय ॥ १ ॥ अपकाय ॥२॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ वाउकाय ॥ ४ ॥ वनस्पतिकाय ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥ हवे पृथ्वीकायना बे भेद ॥ सुक्षम अने बादर ॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमां भरयांछे ॥ ते आपणी नजरे न आवे ॥ ज्ञानी जाणे देखे ॥ हवे बादरपृथ्वीकायनां नाम कहेछे ॥ पहेले बोले माटीने भीठानी जात ॥१॥ खमीने खारानी जात ॥३॥ कालमिंढ मरकीया पाहणा ने सिल्लानी जात ॥४॥ हिं

मतिज्ञानावरणिय ॥१॥ श्रुतज्ञानावरणिय ॥ २ ॥ अवधिज्ञानावरणिय ॥ ३ ॥ मनपर्जवज्ञा-
नावरणिय ॥ ४ ॥ केवलज्ञानावरणिय ॥ ५ ॥ दानांतराय ॥ ६ ॥ लाभांतराय ॥ ७ ॥
भोगांतराय ॥ ८ ॥ उपभोगांतराय ॥ ९ ॥ वीर्यांतराय ॥ १० ॥ निद्रा ॥ ११ ॥ निद्रा-
निद्रा ॥ १२ ॥ प्रचला ॥ १३ ॥ प्रचलाप्रचला ॥ १४ ॥ थीणद्धिनिद्रा ॥१५॥ चक्षुदर्शना-
वरणिय ॥ १६ ॥ अचक्षुदर्शनावरणिय ॥ १७ ॥ अवधिदर्शनावरणिय ॥ १८ ॥ केवलदर्श-
नावरणिय ॥ १९ ॥ निचगोत्र ॥ २० ॥ अशातावेदनीय ॥ २१ ॥ मिथ्यात्वमोहनिय ॥२२॥
स्थावरपणुं ॥२३॥ सूक्ष्मपणुं ॥२४॥ अप्रजासपणुं ॥२५॥ साधारपणुं ॥२६॥ अस्थिरनाम ॥२७॥
अशुभनाम ॥ २८ ॥ दौर्भाग्यनाम ॥ २९ ॥ दुःस्वरनाम ॥ ३० ॥ अनादेयनाम ॥ ३१ ॥
अजशोकीर्तिनाम ॥ ३२ ॥ नरकनिगति ॥ ३३ ॥ नरकनुंआउखुं ॥ ३४ ॥ नरकानुपूर्वी
॥ ३५ ॥ अनंतानुबंधि क्रोध ॥ ३६ ॥ मान ॥ ३७ ॥ माया ॥ ३८ ॥ लोभ ॥ ३९ ॥
अपच्चखाणावरणिय ॥ क्रोध ॥ ४० ॥ मान ॥ ४१ ॥ माया ॥ ४२ ॥ लोभ ॥ ४३ ॥ पच्चखा-
णावरणिय ॥ क्रोध ॥ ४४ ॥ मान ॥४५॥ माया ॥ ४६ ॥ लोभ ॥ ४७ ॥ संजलनो ॥ क्रोध

लाख जोजनना जंबुद्विपमां समाय नही ॥ तेना कुल सात लाख कोमुठे ॥ तेनुं आउखुं जघन्य ॥ अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टुं सातहजार वर्षनुं तेनी दया पालीये तो ॥ अनंता मोक्षनां सुख पामीये ॥१॥ हवे तेउ काय ते अग्नी तेना वे नेद । सुक्ष्म ने वादर ॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमां नरयां छे ॥ ते आपणी नजरे न आवे ॥ हवे वादर अग्नीनां नाम कहेछे ॥ पहेले वोले चूला ने नठीनी अग्नि ॥ २ ॥ धुमामुी तापणीनी अग्नि ॥३॥ चकमक ने वीजलीनी अग्नि ॥ ४ ॥ दीवाने उमामुानी अग्नि ॥ ५ ॥ लोढा धगधगता ने अरणीनी अग्नि ॥ ६ ॥ ए आदिलेइने घणी जातिनी अग्नि छे ॥ तेना एक तणखामां ॥ असंख्याता जीव श्रीनगवंते कह्याछे ॥ तेमांथी एकेको जीव नीकलीने । खसखसना दाणा जेवमुी ॥ काया करे तो जंबुद्विपमां समाय नहि । तेना कुल ॥ त्रण लाख कोमुठे ॥ तेनुं आउखुं । जघन्य ॥ अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टुं ॥ त्रण अहोरात्रनुं तेनी दया पालीये तो ॥ अनंता मोक्षनां सुख पामीये॥३॥ हवे वाउकायना वे नेद । सुक्ष्म ने वादर ॥ सुक्ष्मते आखा लोकमां नरयांछे । ते आपणी नजरे न आवे ॥हवे वादर वायराना नाम कहेछे ॥ पहेले वोले उगमणो ने आथमणो वा ॥१॥

गुलमनी जात ॥३॥ एरंडा आकडा धतुरानी जात ॥४॥ दाडम सेलडी ने केलानी जात ॥५॥ अ्रो-केवडो दाभडो ने तरणानी जात ॥ ६ ॥ फूल कमल ने नागरवेलनी जात ॥ ७ ॥ बोरडी केरडा ने कसेलानी जात ॥ ८ ॥ जुवार बाजरो मठ मकाइनी जात ॥ ९ ॥ तांजलजो सूवा मोघरी वालोर फलीनी जात ॥ १० ॥ ए आदि लेइने घणी जातिनी प्रत्येक वनस्पति छे ॥ तेमां भगवाने बे प्रकारना जीव कह्याछे॥संख्याता॥ अ-संख्याता तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीए तेनुंआउखुं ज०अंत० उत्० दशह-जार वर्षनुं॥हवे साधारण वनस्पतिना नाम कहेछे ॥पहेले बोले लीलफूल सेवालनी जात॥गाजर मूलानी जात ॥ झुंगली लसणनी जात ॥ आदुने गरमरनी जात ॥ रताळु पिंडाळुनी जात ॥ कंटालो थोर खुरसाणी कुंवार सेलरानी जात ॥ मोथ लुणीनी जात ॥ उगता अंकुरा अने कुणी काकडीप्रमुखनी जात ॥ ए आदि लेइने घणी जातिनी साधारण वनस्पति छे ॥ एक कंद मुलना ककडामां अनंता जीव छे॥तेनुं आउखुं॥जघन्य॥उत्०अंतर्मुहुर्तनुं॥बेहुना कुल२०लाख क्रोडछे तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ हवे त्रसकायना चार भेद बे इंद्रीय

भमरा । तीड । पतंग । करोलीया । कंसारी । वींछी । खडमांकडी । बगा । धुडीया । फुदा ॥ एआदि लेइने घणी जातिना ॥ चौइंद्रीय जीव छे ॥ तेना कुल नवलाख कोडछे । तेनुंआउखुं। जघन्य । अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टु ॥ छमासनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ हवे पंचेंद्रीय ते कोने कहीये । जेने काया । मुख नासिका । आंख । कान । ए प्रमाणे होय । तेने पंचेंद्रीय कहीये ॥ तेना बे भेद ॥ अप्रजाप्ता । अने प्रजाप्ता । तेनी ॥४॥ जाति ॥ नारकी । तिर्यंच । मनुष्य । देवता । तेमां ॥ १४ भेद नारकीना ॥४८ भेद तिर्यंचना ॥ ३०३ भेद मनुष्यना ॥ १९८ भेद देवताना ॥ वली तेमां देवताना चार भेद ॥ भवनपति ॥ वाणव्यंतर ॥ जोतिषी ॥ वैमानिक ॥ मनुष्यना चार भेद ॥ १५ ॥ कर्मभूमीना मनुष्य ॥ ३० अकर्म भूमीना मनुष्य ॥ ५६ अंतरद्वीपना मनुष्य ॥ १४ स्थानकना समूर्छीम मनुष्य ॥ हवे नारकीने देवतानी स्थिती ॥ जघन्य दशहजार वर्षनी । उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी ॥ तिर्यंचने मनुष्यनी स्थिती । जघन्य अंतर्मुहूर्तनी । उत्कृष्टी त्रण पल्योपमनी तेमी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ इतिश्री छकायना बोल सम्पूर्ण ॥

ज्ञमरा । तीरू । पतंग ।करोलीया । कंसारी । वींछी । खरूमांकरी । बगा । धुरुीया । कूदा ॥ एआदि लेइने घणी जातिना ॥ चौइंद्रीय जीव छे ॥ तेना कुल नवलाख कोरुछे । तेनुंआउखुं। जघन्य । अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टु ॥ ढमासनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ हवे पंचेंद्रीय ते कोने कहीये । जेने काया । मुख नासिका । आंख । कान । ए प्रमाणे होय । तेने पंचेंद्रीय कहीये ॥ तेना बे ज्ञेद ॥ अप्रजाप्ता । अने प्रजाप्ता । तेनी ॥४॥ जाति ॥ नारकी । तिर्यंच । मनुष्य । देवता । तेमां ॥ १४ ज्ञेद नारकीना ॥४७ ज्ञेद तिर्यंचना ॥ ३०३ ज्ञेद मनुष्यना ॥ १९७ ज्ञेद देवताना ॥ वली तेमां देवताना चार ज्ञेद ॥ ज्ञवनपति॥ वाणव्यंतर ॥ जोतिषी ॥ वैमानिक ॥ मनुष्यना चार ज्ञेद ॥ १५ ॥ कर्मज्ञूमीना मनुष्य ॥ ३० अकर्म ज्ञूमीना मनुष्य ॥ ५६ अंतरद्वीपना मनुष्य ॥ १४ स्थानकना समूर्छीम मनुष्य ॥ हवे नारकीने देवतानी स्थिती ॥ जघन्य दशहजार वर्षनी । उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी ॥ तिर्यंचने मनुष्यनी स्थिती । जघन्य अंतर्मुहूर्तनी । उत्कृष्टी त्रण पल्योपमनी तेमी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ इतिश्री ढकायना बोल सम्पूर्ण ॥

हाथनी ॥ तेजस कार्मण सरीरनी अवघेणा जगन्य अंगुलनो असख्यातमोन्नाग । उत्कृष्टी चौद राजलोक प्रमाणे ॥ केवल समुद्घातनी अपेक्षाये ॥ तथा पोतपोताना सरीर प्रमाणे जाणवी ॥ एम अवघेणा जाणवी ॥ २॥ संघयण कहेता संघयण ६ वज्ररुषन्ननाराचसंघयण ॥१॥ रुषन्ननाराचसंघयण ॥ २ ॥ नाराचसंघयण ॥ ३ ॥ अर्धनाराचसंघयण ॥ ४ ॥ किलकुसंघयण ॥५॥ छेवट्ठसंघयण ॥ ६॥३ ॥ संठाण कहेता संठाण ६ समचउरंस संठाण ॥ १ ॥ निगोहपरिमंरुल संठाण ॥२॥ सादि संठाण ॥३॥ वामन संठाण ॥४॥ कुवज संठाण॥५॥ हुंरू संठाण ॥ ६ ॥ ४ ॥ कसाय कहेता कषाय च्यार ॥ ४ ॥ क्रोध १ मान २ माया ३ लोन्न ॥ ४ ॥ ५ ॥ तहहुंति कहेता तिमज होय ॥ सणाउं कहेता संज्ञा च्यार ॥ आहारसंज्ञा ॥ १ ॥ न्नयसंज्ञा ॥ २ ॥ मैथुनसंज्ञा ॥ ३ ॥ परिग्रहसंज्ञा ॥ ४॥ ६ ॥ लेसा कहेतां लेस्या ६ ॥ कृष्णलेस्या ॥ १ ॥ नीललेस्या ॥ २ ॥ कापोतलेस्या ॥ ३ ॥ तेजुलेस्या ॥४॥ पद्मलेस्या ॥ ५ ॥ सुकललेस्या ॥६॥७ ॥ इंदिय कहेता। इंद्रिय पांच श्रोतेंद्रिय ॥ १ ॥ चक्षुइंद्रिय ॥ २ ॥ घ्राणेंद्रिय ॥३॥ रसेंद्रिय ॥ ४॥ फरसेंद्रिय ॥५॥७॥ समुघाए

॥ अनुक्रमणिका ॥

हवे स ातना गोत्र कहेछे। पहेली रतनप्रभा॥बीजी सकरप्रभा॥त्रीजी वालुप्रभा। चोथी पंकप्रभा ॥ पांचमी धुमप्रभा ॥ छठी तमप्रभा ॥ सातमी तमतमाप्रभा ॥ ए सात मलिने एक दंरूक थयो ॥१॥ हवे दश भवनपतिना दस दंरूक ॥ तेहना नाम कहेछे ॥ पेहेला असुरकुमार ॥ बीजा नागकुमार ॥ त्रीजा सोवनकूमार ॥ चोथा विजुकुमार ॥ पांचमा अग्निकुमार ॥ छठा दिपकुमार ॥ सातमा उदहिकुमार ॥ आठमा दिसाकुमार ॥ नौमा पवनकुमार ॥ दशमा थणितकुमार ॥ एवं अगियार दंरूक थया ॥११॥ हवे पांच थावरना पांच दंरूक कहेछे ॥ इंदिथावरकाय ॥ बंभीथावरकाय ॥ सपीथावरकाय ॥ सुमतिथावरकाय ॥ पयावचथावरकाय॥ ए नाम कह्या ॥ हवे गोत्र कहेछे प्रथवीकाय ॥ अपकाय ॥ तेउकाय ॥ वाउकाय ॥ वणसइ काय एवं सोल दंरूक थया ॥ १६ ॥ हवे त्रण विगलेंद्रीयना त्रण दंरूक कहेछे ॥ बेइंद्रीय । तेरिंद्रीय ॥ चउरिंद्रीय॥एवं उगणीस दंरूक थया॥१९॥ हवे विसमो तिर्यंच पचेंद्रीयनो दंरूक कहेछे ॥ तिर्यंच पंचेंद्रीयना पांच भेद ॥ जलचर ॥ थलचर ॥ उरपर ॥ भुजपर। खेचर । हवे जलचर ते केहने कहिये ॥ जे जलमां चाले तेहने जलचर कहिये ॥ तेहना अनेक भेद ॥ मछ

पंखी ते श्रावकानीपेरे बीडीरहे पांख जेहनी ते समुग पंखी॥ए वे पंखी अढी द्विप बाहारे ज छे॥ ए पांच तिर्यंच पचेंद्री ते पांच समुर्छिम ने पांच गर्ज्जज जाणवा ए विसमो तिर्यंच पचेंद्रिनो दंडक थयो ॥ २० ॥ हवे एकविसमो मनुष्य पचेंद्रीयनो दंडक कहेछे ॥ ते मनुष्य पचेंद्रीना च्यार भेद ॥ पनर कर्मभुमि ना मनुष्य ॥ १ ॥ त्रीस अकर्मभुमि ना मनुष्य ॥ २ ॥ छपन्न अंतर द्वीप ना मनुष्य ॥ ३ ॥ चउद थानकना समुर्छिम मनुष्य ॥ ४ ॥ ते एकसो एक क्षेत्रना गरभज मनुष्य अपर्याप्ता ॥ ने एकसो एक पर्याप्ता एवं २०२ ने एक सो एक क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्य अपर्याप्ता । एवं त्रणसें त्रण भेदनो एकविसमो मनुष्यनो दंडक थयो ॥ २१ ॥ हवे बाविसमो वाणव्यंतर नो दंडक कहेछे ॥ तेहनी सोल जाति । पिशाच ॥१॥ भूत ॥२॥ जक्ष ॥ ३ ॥ राक्षस ॥ ४ ॥ किनर ॥ ५ ॥ किंपूरुष ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपनी ॥ ९ ॥ पाणपनी ॥ १० ॥ इसीवाइ ॥ ११ ॥ भूइवाइ ॥ १२ ॥ कंदिय ॥ १३ ॥ महाकंदिय ॥ १४ ॥ कोहंड ॥ १५ ॥ पयंगदेव ॥ १६ ॥ इति बाविसमो वाणव्यंतर नो दंडक संपूर्ण ॥ २२ ॥ हवे त्रेविसमो जोतीषी नो दंडक कहेछे ॥ तेहनी दस जाति चंद्रमा ॥ १ ॥

महासुक्र ॥ ७ ॥ सहसार ॥ ८ ॥ आणत ॥ ए ॥ प्राणत ॥१०॥ आरण ॥ ११ ॥ अचुय ॥ १२ ॥ ए बार देवलोक ना नाम कह्या ॥ हवे नवग्रैवेयक ना नाम कहेछे ॥ नदे ॥ १ ॥ सुनदे ॥ २ ॥ सुजाए ॥ ३ ॥ सुमाणसे ॥ ४ ॥ प्रीयदंसणे ॥ ५ ॥ सुदंसणे ॥ ६ ॥ आमोहे ॥७॥ सुपडिबधे ॥८॥ जसोधरे ॥ ए ॥ ए नव ग्रैवेयक ना नाम कह्या ॥ हवे पांच अनुत्तर विमान ना नाम कहे छे । विजय ॥ १ ॥ विजयंत ॥२॥ जयंत ॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४ ॥ सर्वार्थ सिद्ध ॥ ५ ॥ ए पांच अनुत्तर विमान ना नाम कह्या । ए छविस भेदनो वैमानीक नो दंडक थयो ॥ २४ ॥ हवे पनर परमाधामी ना नाम कहेछे । अंब ॥ १ ॥ अंबरस ॥ २ ॥ साम ॥ ३ ॥ सबल ॥४॥ रुद्र ॥५॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असी-पत्र ॥ए॥ धनुष ॥ १० ॥ कुंभ ॥ ११ ॥ वालु ॥ १२ ॥ वेतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥१५॥ ए पनर परमाधामी ते असुरकुमार मां भल्या । हवे दस जातिना जंभका तेहना नाम कहेछे ॥ आणजंभका ॥ १ ॥ पाणजंभका ॥ २ ॥ लयणजंभका ॥ ३ ॥ सयण जंभका ॥ ४ ॥ वत्थजंभका ॥ ५ ॥ पुष्पजंभका ॥ ६ ॥ फलजंभका ॥ ७ ॥ वीयजंभका

सिधितिवा ॥ ५ ॥ सिद्धालएतिवा ॥ ६ ॥ मुत्तितिवा ॥ ७ ॥ मुत्तालएतिवा ॥ ८ ॥ लोयगेतिवा ॥ ए ॥ लोगथुभियातिवा ॥ १० ॥ लोगपडिवोहेतिवा ॥ ११ ॥ सवपाणभुयजीवसत्तसुहावहेतिवा ॥ १२ ॥ ए बार मोक्षना नाम कह्या ॥ ए नामडुवार किंचित्मात्र संपूर्ण ॥ १ ॥ हवे चोविस डुवार ते चोविस दंडक उपरें उतारवा ते कहे छे ॥ पेहलो नारकीनो दंडक ॥ ते मांहे सरीर त्रण ॥ वैक्रेय ॥ तेजस ॥ कार्मण० ॥ अवघेणा भवधारणि सरीरनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० पांचसे धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय सरीरनी ॥ ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० हजार धनुषनी ॥ पेहेली नरके भवधारणी ज० अंगु० असं० ॥ उ० पोणा आठ धनुष ने छ आंगुलनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० साढापनर धनुष ने बार अंगुलनी ॥ वीजी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० साढापनर धनुष ने वार अंगुलनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० सवाएकत्रिस धनुषनी ॥ त्रीजि नरकेज० अंगु० असं० ॥ उ० सवाएकत्रिस धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० साडावासठ धनुपनी । चोथी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० साडावासठ धनुपनी ॥ अने

सत्यवचनजोग ॥ १ ॥ असत्यवचनजोग ॥ २ ॥ मिश्रवचनजोग ॥ ३ ॥ व्यवहारवचनजोग ॥ ४ ॥ हवे सात कायाना कहेछे ॥ उदारिक ॥१॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥ वैक्रेय ॥ ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ॥ ४ ॥ आहारक ॥ ५ ॥ आहारकनो मिश्र ॥ ६ ॥ कार्मणकायजोग ॥ ७ ॥ एवं पनर जोग ॥ १७ ॥ उवयोग कहेता उपयोग बार ॥ पांच ज्ञान ॥ त्रणअज्ञान ॥ च्यार दर्शन ॥ एवं बार ॥१८॥ तहाकिमाहारे कहेता ॥ तिमज अनुक्रमे आहार लीए ॥ जघन्य त्रण दिसनो ॥ उत्कृष्टो छ दिसनो ॥ त्रण दिस ते कइ ॥ उंची नीची ने त्रीछी॥ ए त्रण दिशनो लीए ॥ छदिस ते कइ ॥ पूर्व ॥१ ॥ पछिम ॥ २ ॥ उत्तर॥३॥दक्षण ॥ ४ ॥ उंची॥५॥ नीची ॥६॥ ए छ दिसनो आहार लीए ॥ तथा वलि त्रण प्रकारनो ।आहार । सचेत ॥अचेत ने मिश्र । उज ॥१॥ रोम ॥ २ ॥ कवल ॥ ३ ॥ ए त्रण प्रकारनो आहार ॥ १९ ॥ उववाय कहेता आवीने उपजे चोविस दंडक नो ते आगल कहेवासे ॥२०॥ ठिइ कहेता थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त्तनी ॥ अने उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी ॥ ते आगल कहेवासे ॥ २१ ॥ समुहाए कहेता । समोहियामरण ॥१॥ असमोहियामरण ॥ २ ॥ समोहियामरण ते केहने कहिये

सनि कहेता पहेली नरके संज्ञी असंज्ञी वे होय ॥ बीजीथी मांडी सातमी नरक सुधी एकला संज्ञी छे ॥ वेद एक नपुंसकवेद ॥ ५ पर्या लाभे ते भाषा मन भेला बांधे। दृष्टी त्रण ॥ समकीतदृष्टी ॥ मिथ्यातदृष्टी॥समा मिथ्यादृष्टी ॥ दर्शण त्रण ॥ चक्षुदर्शन॥अचक्षुदर्शन । अवधिदर्शन॥ ज्ञान त्रण । मतिज्ञान । श्रुतज्ञान ॥ अवधिज्ञान ॥ अज्ञान त्रण । मतिअज्ञान ॥ श्रुतअज्ञान। विभंग अज्ञान ॥ जोग इग्यार ॥ च्यार मनना । च्यार वचनना । त्रण कायाना ॥ ते वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ने कार्मणकाय जोग ॥ एवं इग्यार जोग ॥ उपयोग नव ॥ त्रण ज्ञान त्रण अज्ञान । त्रण दर्शन एवं नव ॥ तहा तेमज आहार लेतो जघन्य उत्कृष्टो छ दिसनो । आहार ले ॥ ते वे प्रकारनो ॥ ओज आहार ने रोम आहार ॥ तेपण असुभ ते अचेत ॥ उववाय ते आवीने उपजे पहेलीनर्के वे दंडकना ते मनुष्य गर्भज ॥ ने तिर्यंचगर्भजने समुर्छिम ॥ ए वे दंडकना आविने उपजे अने बीजीथी मांडीने सातमी सुधी गर्भजतिर्यंच ने गर्भज मनुष्यना आवी उपजे । स्थिति पहेली नरके जघन्य दस हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी एक सागरनी ॥ बीजी नरके ज० एक सागरनी ॥ उ० त्रण सागरनी त्रीजी नरके ज० त्रणसागरनी ॥

संठाण एक समचउरंस संठाण ॥ कषाय च्यारे पण देवताने लोभ वणो ॥ संज्ञाच्यारे पण देवताने परिग्रह संज्ञा घणी । लेस्या च्यार कृष्णलेस्या । नीललेस्या । कापुतलेस्या ॥ तेजुलेस्या । इंद्री पांच छे ॥ समुद्घात पांच ॥ वेदनी कषाय मारणांतिक वैक्रेय ने तेजस संज्ञी असंज्ञी बे जाणवा ॥ वेद बे स्त्री ने पुरुष । प्रजा ५ भाषामन भेला बांधे ॥ दृष्टी त्रण ॥ दर्शण त्रण ॥ केवल दर्शन एक नही ॥ ज्ञान त्रण ॥ मति ज्ञान श्रुत ज्ञानने अवधि ज्ञान ॥ अज्ञान त्रण ॥ मतिअज्ञान । श्रुतअज्ञान ॥ विभंगअज्ञान ॥ जोग इग्यार ॥ च्यार मनना । च्यार वचनना त्रण कायाना । वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ॥ कार्मण कायजोग । एवं इग्यार ॥ उपयोग नव ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन ॥ एवं नव ॥ तहा तिमज आहार ले ॥ जघन्य ने उत्कृष्टो ठ दिसनो आहार ले । वली बे प्रकारे आहार ले । ओजआहार ने रोम आहार ॥ ते पण सुभ ने अचेत आहार ॥ उववाय ते आवीने उपजे बे दंडकनो ॥ मनुष्यने तिर्यंचनो ॥ स्थिति भवनपतिमां दक्षण दिसना । असुरकुमारनी । ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक सागरनी ॥ तेहनी ॥ देवीनी ज० दस हजार वरसनी । उ० साढा त्रण पल्योपमनी ॥

[illegible] संगण ॥ कषाय च्यारे पण देवताने लाभ त्रण ॥ संज्ञाच्यार पण ।
वाउ ए च्यारेनी ॥ जघन्य ने उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो नाग ॥ अने वनस्पतिनी जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो नाग ॥ उत्कृष्टी हजार जोजननी झाझेरी कमल प्रमुखनी ॥ संघेण एक छेवट्ठ ॥ संठाण एक हुंरु । पांचे ना संठाण कहेछे ॥ प्रथवीनुं संठाण मसुरनी दाल तथा चंद्रमाने आकारे ॥ १ ॥ पाणीनुं संठाण पाणीना परपोटाने आकारे ॥ २ ॥ तेउनुं संठाण सोयना नाराने आकारे ॥३॥ वायरानुं संठाण धजापताकाने आकारे ॥ ४ ॥ वनस्पतिनुं संठाणनाना प्रकारनुं ॥ ५ ॥ कषाय च्यारे ॥ संज्ञा च्यारे ॥ लेस्या पृथवी पाणी वनस्पीत ने अपर्याप्ता वेला च्यार पेहेली ॥ अने पांचे ने लेस्या त्रण पेहेली ॥ इंद्री एक कायानी । समुद्घात पृथवी पाणी तेउ वनस्पीत ने ॥ ३ ॥ वेदनी कषायमारणांतिक ॥ अने वायराने समुद्घात च्यार वैक्रेयनी वधी ॥ संज्ञी ते पांचे स्थावर असंज्ञी ॥ वेद एक नपुंसक ॥ पर्या च्यार ॥ आहार पर्या ॥ सरीरपर्या ॥ इंद्रीपर्या ॥ स्वासो स्वासपर्या ॥ द्रष्टीएकमिथ्यात ॥ दर्शन एक अचक्षुदर्शन । ज्ञान नथी। अज्ञान बे । मतीअज्ञान ॥ श्रुत अज्ञान । जोग पृथ्वी पाणी तेउ वनस्पति ने त्रण ॥ उदारीक ॥१॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥

नव ॥ ग[illegible]० ते मरीने पृथ्वी पाणी ने वनस्पति वे गतिमां जाय मनुष्य ने तिर्यंचमां ॥ अने तेउ वाउ एकगतिमां जाय तिर्यंचमां ॥ आगइ ते आवे पृथ्वी पाणी ने वनस्पतिमां त्रण गतिनो आवे ॥ देवता मनुष्यने तिर्यंचनो ॥ अने तेउ वाउमां वेगतिनो आवे । मनुष्य ने तिर्यंचनो । प्राण पांचे ने च्यार ॥ एकेंद्रिपणुं ॥ १ ॥ कायबल ॥ २ ॥ स्वासोस्वास ॥ ३ ॥ आउखु ॥ ४ ॥ जोग एक कायजोग ॥ इति पांच स्थावरना पांच दंडक संपूर्ण ॥ १६ ॥ हवे त्रण विगलेंद्रियना ३ दंडक कहेछे बेइंद्रि ॥ तेरंद्री ॥ चोरिंद्रीमां सरीर त्रण ॥ उदारिक । तेजस । कार्मण । अवघेणा बेइंद्रीनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उ० बार जोजननी ॥ तेरिंद्रीनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उ० त्रण गाउनी ॥ चउरिंद्रीनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग । उ० च्यार गाउनी ॥ संघेण एक छेवटु ॥ संठाण एक हुंड ॥ कषाय च्यारे ॥ संज्ञा च्यारे ॥ लेस्या त्रण पेहेली ॥ इंद्री बेरिंद्रीने ॥ बे ॥ काया ॥२॥ जिभ ॥ २ ॥ तेरिंद्रीने इंद्री त्रण । नासिकावधी ॥ चउरिंद्रीने इंद्रीचार॥ आंख वधि॥ समुद्घात त्रण वेदनी कषायने मारणांतिक ए त्रण ॥ संज्ञी के० ते असंज्ञी ॥ वेद एक नपुंसक ॥

अंगलनो असंख्यातमो नाग ॥ अने वनस्पतिनी

मनुष्य ने त्रिजंचमां ॥ आगइ ते आवे पण बेगतिनो मनुष्यने त्रिजंचनो ॥ प्राण बेरिंद्री ने ठ प्राण । बेइंद्रीना बे प्राण ॥ कायबल ॥ स्वासोस्वास ॥ आउखू । वचन । ए ठ । तेरिंद्री ने सात प्राण । ते नासिका वधी । चउरिंद्रीने आठप्राण आंख वधी ॥ जोग बे ॥ वचनजोग ने । कायजोग ॥ इति त्रण विगलेंद्रीना त्रण दंरुक संपूर्ण ॥ १ए ॥ हवे विसमो तिर्यंच पंचेंद्रीनो दंरुक कहेठे । हवे पांचे समुर्छिमने सरीर त्रण ॥ उदारिक ॥ तेजस ॥ ने कार्मण ॥ अने गर्नजने च्यार सरीर वैक्रेय वध्युं ॥ अवघेणा पांचेनी कहे ठे ॥ हवे जलचर समुर्छिम ने गर्नजनी । ज० अंगु० असं० ॥ उ० हजार जोजननी ॥ थलचर समुर्छिमनी ज० अंगु० असं ॥ उ० । प्रत्येक गाउनि ॥ गर्नजनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० ठ गाउनी । उरपर सर्प समुर्छिमनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० प्रत्येक जोजननी ॥ अने गर्नजनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० हजार जोजननी ॥ भुजपर समुर्छिमनी । ज० अंगु० असं० ॥ उ० प्रत्येक धनुषनी । गर्नजनी । ज० अंगु० असं० ॥ उ० प्रत्येक गाउनी ॥ खेचर समूर्छिमने गर्नजनी ज० अंगु० असं० । उ० प्रत्येक धनुषनी ॥ उत्तर वैक्रेय करे तो ॥ ज० अंगु० संख्या० । उ० नवसें

॥ अथ श्री नवतत्वनो थोकडो. ॥ 2772

श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥ अथ श्री नवतत्व लिख्यते ॥ हवे विवेकि सम्यक्त्वदृष्टि जीवने । नव पदार्थ जेहवा छे । तेहवा । तथारूप बुद्धिप्रमाणे गुरु आम्नायथि धारवा ॥ ते नवपदार्थना नाम कहेछे ॥ जीवतत्व ॥ १ ॥ अजीवतत्व ॥ २ ॥ पुण्यतत्व ॥ ३ ॥ पापतत्व ॥ ४ ॥ आश्रवतत्व ॥ ५ ॥ संवरतत्व ॥ ६ ॥ निर्जरातत्व ॥ ७ ॥ बंधतत्व ॥ ८ ॥ मोक्षतत्व ॥ ९ ॥ हवे जीवतत्व ते केहने कहिये ॥ चैतन्यलक्षण ॥ सदासउपयोगी ॥ असंख्यात प्रदेशी । सुख दुःखनो जाण ॥ सुखदुःखनो वेदक तेहने जीवतत्व कहिये ॥ १ ॥ अजीवतत्व ते केहने कहिये जडलक्षण ॥ चैतन्यरहित ॥ तेहने अजीवतत्व कहिये ॥ २ ॥ पुण्यतत्व ते शुभ कमाणिये करी ॥ शुभ कर्मने उदये करी ॥ जेहना फल आत्माने भोगवतां मीठां लागे तेहने पुण्यतत्व कहिये ॥ ३ ॥ पापतत्व ते अशुभ कमाणिये करी ॥ अशुभ कर्मने उदये करी ॥ जेहना फल आत्माने भोगवता कडुवां लागे । तेहने पापतत्व कहिये ॥४॥ आश्रवतत्व ते । अव्रतने अपच्चखाणे करी । विषय कषायने सेववेकरी ॥ आत्मारूपतलावने विषे ॥

वैक्रेय करे तो ॥ ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० लाख जोजन झाझेरी ॥ हेमवय इरणवयमां ज० अंगु० असं० ॥ उ० एक गाउनी ॥ हरिवास रमकवासमां ॥ ज० अंगु० असं० ॥ उ० बे गाउनी । देवकुरु उत्तरकुरुमां ज० । अंगु० असं० । उ० त्रण गाउनी ॥ हवे छपन्न अंतर द्वीपामां ज० अंगु० असं० ॥ उ० आठसें धनुषनी ॥ संघयण ॥ समुर्छिम ने एक छेवटु ॥ जुगलियाने एक वज्रऋषभनाराचसंघयण ॥ पन्नर कर्मभुमिना गर्भज मनुष्यने छ संघयण ॥ संठाण समुर्छिमने एक हुंड ॥ जुगलियाने । एक समचउरंस ॥ कर्मभुमिना गर्भज मनुष्यने छ संठाण । कषाय च्यारे पण मनुष्यने मानघणुं ॥ संज्ञा च्यारे पण मनुष्यने मैथुन संज्ञा घणी ॥ लेस्यासमुर्छिमने त्रण पेहेली ॥ जुगलीयाने लेस्या च्यार पेहेली ॥ गर्भज ने छ लेस्या । इंद्री पांचे ॥ समुद्घात समुर्छिमने त्रण ॥ वेदनी कषाय ने मारणांतिक ॥ जूगलियाने समुद्घात त्रण तेहीज ॥ कर्मभुमीना गर्भज मनुष्यने ॥ सात समुद्घात ॥ समुर्छिम असंज्ञी ॥ गर्भज संज्ञी ॥ वेद समुर्छिमने एक नपुंसक ॥ जुगलियामां वेद बे ॥ स्त्री ने पुरुष । कर्मभुमिना गर्भज मनुष्यमां त्रण वेद ॥ स्त्री पुरुष ने नपुंसक ॥ पर्या समुर्छिमने

ले उंज रोमने कवल । ते पण सचेत अचेतने मिश्र ॥ उववाय ते आवीने उपजे । समुछिममां आठ दंमकना ॥ पृथ्वी पाणी वनस्पति त्रण त्रिगलेंद्री ॥ मनुष्यने तिर्यंच ॥ ए आठनो ॥ जुगलीयामां २ दंमकनो ते मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ गर्जज मनुष्यमां बाविस दंमकना उपजे ते तेउ वाउना नही ॥ स्थिति समुछिमनी जघन्यने उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ गर्जजनी आरानी परे जाणवी ॥ पेहेले आरे बेसतां त्रण पल्योपमनी । उतरतां बे पल्योपमनी ॥ बीजे आरे बेसतां बे पल्योपमनी ॥ उतरतां एक पल्योपमनी ॥ त्रीजे आरे वेसतां एक पल्योपमनी ॥ उतरतां पूर्व क्रोमनी ॥ चोथे आरे बेसतां पूर्व क्रोमनी ॥ उतरतां सो वरस जाजेरानी । पांचमे आरे वेसतां सो वरस जाजेरानी । उतरते आरे विस वरसनी ॥ छठे आरे वेसतां वीस वरसनी । उतरते आरे सोल वरसनी ॥ एम चमतां उतरतां अवला सवली जाणवी । हिमवय इरणवयमां एक पल्योपमनी ॥ हरिवास रमकवासमां । बे पल्योपमनी ॥ देवकुरू उतरकुरूमां त्रण पल्योपमनी । छपन्न अंतरद्वीपामां । पल्योपमनो । असंख्यातमो जाग । ५ महाविदेहमां पूर्व क्रोमनी ॥ समोहिया ने असमोहिया ए बे मरण छे ॥ चवण

जोग अगीयार ॥ च्यार मनना च्यार वचनना ॥ त्रण कायाना ते वैक्रेय ॥ वैक्रेयनो मिश्र ॥ कार्मण कायजोग ॥ एवं अगीयार । उपयोग नव त्रण ज्ञान त्रण अज्ञान । त्रण दर्शन ॥ एवं नव ॥ तेमज आहार ले तो जघन्य ने उत्कृष्टो ठ दिसनो ॥ तथा वे प्रकारे उज ने रोम ते पण सुत्त ते पण अचेत आहार । उववाय ते आवीने उपजे वे दंरुकना ॥ मनुष्यने तिर्यचना । स्थिति वाणव्यंतरनी । ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक पल्योपमनी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० अरध पल्योपमनी ॥ समोहिया ने असमोहिया ए बे मरण छे ॥ चवण ते चविने जाय पांच दंरुकमां ॥ पृथ्वी पाणी ने वनस्पति मनुष्य ने तिर्यंच ए पांच ॥ गइ ते मरीने बे गतिमां जाय ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमां ॥ आगइ ते आवे पण बेगतिना मनुष्य ने तिर्यंचना ॥ प्राण दस ॥ जोग त्रण । मन वचन ने कायाना ॥ इति बाविसमो वाणव्यंतरनो दंरुक संपूर्ण ॥२२॥ हवे त्रेविसमो जोतिषीनो दंरुक तेहमां सरीर त्रण ॥ वैक्रेय तेजस । ने कार्मण । अवघेणा ज० अंगु० असं० उ० सातहाथनी अने उत्तर वैक्रेय करे तो ॥ ज० अंगु० संख्या० उ० । लाख जोजननी ॥ संघयण नथी ॥ संठाण एक

जо पल्यनो आठमो नाग ॥ उ० पा पल्यनी ॥ तारानादेवतानी ज० पल्यनो आठमो नाग। उ० पा पल्यनी ॥ तेहनी देवीनी ॥ ज० पल्यनो आठमो नाग ॥ उ० पल्यनो आठमो नाग फाझेरी ॥ समोहिया ने असमोहिया ए वे मरण छे ॥ चवण ते चविने जाय। पांच दंमकमां। पृथ्वी पाणी वनस्पति मनुष्य ने तिर्यंचमां ॥ गइ ते मरीने वे गतिमां जाय ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमां । आगइ ते मनुष्य ने तिर्यंचनो आवे ॥ प्राण दस ॥ जोग त्रण ॥ इति त्रेविसमो ज्योतिषीनो दंमक संपूर्ण ॥२३॥ हवे चोविसमो वैमानिकनो दंमक ॥ तेहमां सरीर त्रण ॥ वैक्रेय तेजस ने कार्मण ॥ अवघेणा सुधर्म इशान ए वे देवलोके ज० अंगु० असं० ॥ उ० सात हाथनी। त्रीजे चोथे देवलोके छ हाथनी ॥ पांचमे छठे देवलोके पांच हाथनी ॥ सातमे आठमे देवलोके च्यार हाथनी ॥ नवमे दशमे इग्यारमे । बारमे दे०। त्रण हाथनी ॥ नव ग्रैवेयकें वे हाथनी ॥ च्यार अनुत्तर विमानमां एक हाथनी ॥ सर्वार्थसीद्धमां मुंढा हाथनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो। बार देवलोक सुधी ज० अंगु० संख्या० ॥ उत्कृष्टी लाख जोजननी ॥ संघयण नथी ॥ संठाण एक समचउरंस ॥ कषाय च्यारे पण लोभ घणो ॥ संज्ञा चारे पण

उत्कृष्टो ढ दिसनो आहार ले ॥ तथा त्रण प्रकारें आहार ले । उंज रोमने कवल आहार ले ते पण सचेत अचेतने मिश्र ॥ उववाय ते । आवीने उपजे ॥ समुर्छिममां दस दंरुकना ॥ पांच स्थावर त्रण विगलेंद्री ॥ मनुष्यने त्रिजंच ॥ गर्त्तजमां चोविसे दंरुकना आविने उपजे । स्थिति जलचर समुर्छिमने गर्त्तजनी । ज० अंत० । उ० पूर्व क्रोरुनी । थलचर समुर्छिमनी ज० अंत० ॥ उ० चोरासी हजार वर्षनी । अने गर्त्तजनी ज० अंत० ॥ उ० त्रण पल्योपमनी ॥ उरपर सर्प समुर्छिमनी ज० अंत० । उ० त्रेपन हजार वरसनी ॥ अने गर्त्तजनी ज० अंत० ॥ उ० पूर्वक्रोरुनी ॥ नुजपर समुर्छिमनी । ज० अंत० ॥ उ० बेतालिस हजार वरसनी अने गर्त्तजनी ज० अंत० । उ० पूर्व क्रोरुनी ॥ खेचर समुर्छिमनी ज० अंत० उ० बोहोतेर हजार वरसनी ॥ अने गर्त्तजनी ज० अंत० उ० पल्योपमनो असंख्यातमो नाग । समोहियामरण ने असमोहियामरण ॥ ए बे मरण ढे ॥ चवण के० चवीने ॥ समुर्छिम जाय तो बाविस दंरुकमां । जोतिषीने विमानीकमां जाय नही ॥ अने गर्त्तज चोविसे दंरुकमां जाय । गइ ते० समुर्छिम ॥ अने गर्त्तज मरीने च्यार गतिमां

छ दिसनो तथा बे प्रकारे उज ने रोम ते पण अचेत ने सुत्र आहार ॥ उववाय ते आवीने उपजे पेहेला देवलोकथी मांडीने आठमा देवलोक सुधी बे दंडकना मनुष्य ने तिर्यंचना । अने नवमेथी ते सर्वार्थसिद्ध लगे एक मनुष्यनो आवे ॥ स्थिति पेहेले देवलोके जघन्य एक पल्यनी ॥ उत्कृष्टी बे सागरनी ॥ तेहनी परिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी । उ० सात पल्यनी ॥ अने अपरिग्रहीत देवीनी ॥ ज० एक पल्यनी । उ० पचास पल्यनी ॥ बीजे देवलोके ज० एक पल्यनी झाझेरी ॥ उ० बे सा० झाझेरी ॥ तेहनी परिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी झाझेरी । उ० नव पल्यनी ॥ अने अपरिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी झाझेरी ॥ उ० पंचावन पल्यनी ॥ त्रीजे देवलोके ज० बे सा० ॥ उ० सात सा० तिहां देवी नथी, पण तेडावी जाय ॥ चोथे देवलोके ज० बे सा० झाझेरी ॥ उ० सात सा० झाझेरी ॥ पांचमे देवलोके ज० सात सा० ॥ उ० दस सा० ॥ छठे देवलोके ज० दस सा० उ० चउद० सा० ॥ सातमे देवलोके ज० चउद० सा० उ० सतर० सा० ॥ आठमे देवलोके ज० सतर० सा० ॥ उ० अढार सा० ॥ नवमे देवलोके । ज० अढार सा० । ज० [illegible]

एक दंमकमां जाय मनुष्यमां ॥ गइ ते मरीने पेहेलाथी मांमीने आठमा देवलोकना देवता बे गतिमां जाय । अने नवमाथी मांमीने सर्वार्थसिद्ध सुधिना एक मनुष्यनी गतिमां जाय। आगइ ते पेहेलाथी मांमीने आठमां देवलोक लगे बे गतिनो आवे । मनुष्य ने त्रिजंचनो । अने नवमाथी मांमीने सर्वार्थसिद्ध लगे एक मनुष्य नो आवे ॥ प्राण दस ॥ जोग त्रण ॥ इतिश्री चोविसमो वैमानिकनो दंमक संपूर्ण ॥ २४ ॥ हवे सिद्धनो द्वार कहेछे । सीद्धने सरीर नथी ॥ अवघेणा सीद्धनी अरूपि जीवना प्रदेशना घननी । ज० एक हाथने आठ अंगुलनी । मझम च्यार हाथ ने सोल अंगुलनी । अने उत्कृष्टी त्रणसें तेत्रीस धनुष ने । बत्रीस अंगुलनी ॥ सिद्धने संघयण नथी ॥ सिद्धने संठाण नथी । सिद्धने कषाय नथी । सिद्धने संज्ञा नथी। सिद्धने लेस्या नथी ॥ सिद्धने इंद्रीय नथी ॥ सिद्धने समुद्‌घात नथी। सिद्धसंज्ञी असंज्ञी नथी ॥ सिद्धने वेद नथी ॥ सिद्धने प्रजा नथी ॥ सिद्ध समकितदृष्टी छे ॥ सिद्धने एक केवल दर्शन छे ॥ सिद्धने एक केवल ज्ञान छे ॥ सिद्धने अज्ञान नथी ॥ सिद्धने जोग नथी। सिद्धने उपयोग बे छे ॥ केवलज्ञान। केवल दर्शन ॥ सिद्धने आहार नथी ॥ उववाय

पूर्वे १ए कह्या तेह्मांथि ॥ १ खेचर वर्ज्या । गत ४० नि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ पांचमी नर्के आगत १७ न्नेदनि ते । पूर्वे १७ कह्या तेह्मांथि ॥ १ थलचर वर्ज्या ॥ गत ४० नि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ बठी नर्के आगत ॥ १६ ॥ न्नेदनि ते ॥ १७ ॥ पूर्वे कह्या तेह्मां थि ॥ १ उरपर वर्ज्या ॥ गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत् ॥ ६ ॥ सातमी नर्के आगत १६ न्नेदनि ते ॥१५॥ कर्मन्नूमी ने ॥ १ जलचरमह्न ॥ ए १६ ना प्रजाप्ता तेमां स्त्री वर्जीने । गत ॥ १० न्नेदनि ते ॥ ५ संज्ञीतिर्यंचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्तानि ॥ ७ ॥ दश न्नवनपति ॥ १५ ॥ पर्माधामी ॥ १६ ॥ वाणव्यंतर ॥ १० ॥ जंन्नका । ए ॥ ५१ जातिना देवतामां ॥ आगत १११ न्नेद- नि ते ॥ १०१ क्षेत्रना संज्ञीमनुष्य ॥ ५ संज्ञीतिर्यंच ॥ ५ असंज्ञीतिर्यंच । ए १११ ना प्रजाप्तानि । गत ४६ नि ते ॥ १५ कर्मन्नूमी ॥ ५ संज्ञीतिर्यंच ए ॥ २० ॥ ने पृथ्वी ॥ १ ॥ पाणि ॥ २ ॥ वनस्पति ॥ ३ ॥ ए ॥ २३ ॥ ना अप्र० ने प्रजाप्तानि ॥७॥ दस ज्योतषी ने पहिला देवलोकमां ॥ आगत ॥ ५० न्नेदनि ते ॥ १५ कर्मन्नूमी ॥ ५ संज्ञी तिर्यंच ने ३० अकर्मन्नूमी । ए ५० ना प्रजाप्तानि । गत ॥ ४६ नि पूर्ववत् ॥ ए ॥ बिजा देवलोकमां आगत

जंनका ॥ १० ज्यातषा । एवं ६१ ने ॥ श देवलोक ॥ एक किल्विषी ॥ एवं ॥ ६४ ना प्रजा-
सानि ॥ एवं २४३ नि ॥ गत १७ए लटनि ॥ १४ ॥ तेज ॥ १ ॥ वाज ॥ २ ॥ ए २ मां
आगत ॥१७ए लटनि ॥ गत ॥४ठ नेदतिर्यंचनी ॥ १५॥ त्रण विगलेंडियमां आगत ॥ १७ए
लटनि । गत पण १७ए लटनि ॥ १६ ॥ असंज्ञीतिर्यंचमां आगत ॥ १७ए लटनी ॥ गत
॥ ३एए नेदनि ते ॥ ५६ अंतरद्वीपा ने ॥ ५१ जातिना देवता । ते ॥ १० नवनपति ॥ १५ परमा-
धामी ॥ १६ वाणव्यंतर ॥ १० जंनका ए ॥ ५१ जातिना देवता ॥ एवं सर्व मिलि १०७ नेद
थया अने ॥ १ पहिली नर्क ॥ एवं ॥ १०ठ ना अप्र० ने प्रजासा एवं २१६ अने १७ए लट ।
सर्वमिली ॥ ३एए नेदनि ॥ १७ ॥ संज्ञीतिर्यंचमां आगत ॥ २६७ नेदनि ॥ ते ठ१ नेद
देवताना । ते एए मांहिथि ॥ ४ देवलोक ॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान । ए ॥ १ठ वर्ज्या
ने १७ए लट । एवं सर्व मिलि ॥ २६० ने ७ नर्कना प्रजासा ॥ एवं ॥ २६७ नि ॥
पांचे त्रीयंचनी गत जुदी जुदी कहे छे ॥ जलचरनी ५२७ नी ते ५६३ मांहिथि नवमा
देवलोकथी सर्वार्थ सिद्ध सुधि ॥ ए १ठ ना अप्र० ने प्रजा० एवं ३६ वर्ज्या ॥ शेष ५२७

ते ॥ १२ देवलोक ॥ ए लोकांतिक ॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान । एवं ॥ ३५ ना अप्र०॥ प्रजासा । एवं ॥ ७० नी ॥ २८ ॥ श्रावकमां आगत ॥ २७६ ॥ भेदनि । ते । पूर्वे २७५ कह्या ते । अने ॥ १ छठी नर्कवधि । ए २७६ नि ॥ गत ४२ भेदनि ते ॥ १२ देवलोक ने ॥ ए लोकांतिक । ए २१ ना अप्र० । प्रजासानि ॥२९॥ समदृष्टिमां आगत ॥ ३६३ भेदनि ते ॥ ९९ जाति देवताना प्रजासा ॥ १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजासा ॥ १०१ संज्ञी मनुष्यना प्रजासा ॥ १५ कर्मभूमीना अप्रजासा ॥ ७ नरकना प्रजासा । अने ४८ ॥ तिर्यंचमांहिथि तेउ वाउना ८ वर्ज्या । शेष ४० रह्या ते । एवं सर्व थइने ॥ ३६३ नि ॥ गत २२२ नि ते ॥ ८१ जातिना देवता ते ९९ मांहीथिं १५ परमाधामि ने ३ किल्विषि ए १८ भेद वर्ज्या ॥ ने १५ कर्मभूमी ॥ ५ संज्ञी तिर्यंच ने ६ नरक । एवं ॥ १०७ ना अप्र० । प्रजासा बसें चउद अने ॥ ३ विगलेंद्रिना । अप्र० । अने ॥ ५ असंज्ञीतिर्यंचना अप्र० । एवं २२२ नि० ॥ ३० ॥ मिथ्यातिमां आगत ॥ ३७१ भेदनि ते । पूर्वे ॥ ३६३ कह्यां तेहमां तेउ वाउना ॥ ८ ॥ वध्या ॥ गत ५५३ भेदनि ते ५६३ भेदमांहीथि ॥ ५ अनुत्तर विमानना अप्र० ने प्रजासा । ए ॥ १० वर्ज्या ॥ शेष ५५३

चक्षुदर्शनी ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शिनी ॥ २ ॥ अवधि दर्शनी ॥३॥ केवलदर्शनी ॥४॥ तथा पांच
प्रकारे जीव ॥ एकेंद्रिय ॥१॥ बे इंद्रिय ॥२॥ तेइंद्रिय ॥३॥ चउरिंद्रिय ॥४॥ पंचेंद्रिय ॥५॥
तथा । सजोगी ॥ १ ॥ मनजोगी ॥ २ ॥ वचनजोगी ॥ ३ ॥ कायजोगी ॥ ४ ॥ अजोगी ॥ ५ ॥
तथा । ७ प्रकारे जीव ॥ पृथवीकाय ॥१॥ अप्काय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥३॥ वाउकाय ॥ ४ ॥
वनस्पतिकाय ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥ तथा ॥ सकषायी ॥ १ ॥ कोहकषायी ॥ २ ॥ मानक-
षायी ॥ ३ ॥ मायाकषायी ॥ ४ ॥ लोभकषायी ॥ ५ ॥ अकषायी ॥६॥ तथा सात प्रकारे
जीव । नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ तिर्यचणी ॥ ३ ॥ मनुष्य ॥ ४ ॥ मनुष्यणी ॥ ५ ॥
देवता ॥ ६ ॥ देवी ॥ ७ ॥ तथा । आठ प्रकारे जीव सलेशी ॥१॥ कृष्णलेशी ॥२॥ निल-
लेशी ॥ ३ ॥ कापुतलेशी ॥ ४ ॥ तेजुलेशी ॥ ५ ॥ पद्मलेशी ॥ ६ ॥ शुकललेशी ॥ ७ ॥
अलेशी ॥ ८ ॥ तथा नव । प्रकारे जीव ॥ पृथवी ॥ १ ॥ अप ॥२॥ तेउ ॥३॥ वाउ ॥४॥
वनस्पति ॥५॥ बेइंद्रिय ॥६॥ तेइंद्रिय ॥ ७ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ८ ॥ पंचेंद्रिय ॥ ९ ॥ तथा दश
भेदे जीव ॥ एकेंद्रिय ॥१॥ बेइंद्रिय ॥२॥ ते इंद्रिय ॥३॥ चउरिंद्रिय ॥४॥ पंचेंद्रिय ॥५॥

विचमां छे ॥ तिहांसुधि सास्वादान समकित कहिय ॥ अने जीवारे धरतीये आवि पड्युं । तिवारे मिथ्यात्व ॥३॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवंतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो ॥ तिवारे श्रीभगवंत कहेछे । कृष्णपक्षी हतो ते शुकलपक्षी थयो ॥ अर्द्ध पुद्गल संसार भोगववो रह्यो । जिम कोइ पुरुषने माथे लाख कोडनुं देणुं हतुं ते परदेश जइने कमाइ आव्यो देणुं देतां एक अधेलिनुं देणुं रह्युं तेहनुं व्याज थयुं । तेटलो संसार भोगववो रह्यो । सास्वादान समकित पांचवार आवे ॥ २ ॥ हवे त्रिजा गुणठाणानां लक्षण कहे छे ॥ त्रिजुं मिश्रगुणठाणुं । ते बे वस्तु मिलिने मिश्र श्रीखंडनो दृष्टांत ॥ श्रीखंड जिम खाटो ने मिठो । मिठास समान समकित ने खटास समान मिथ्यात्व ॥ ते जिनमार्ग पण रुडो जाणे तथा अन्य मार्ग पण रुडो जाणे जिम कोइक नगर बाहिर साधु महापुरुष पधार्याछे ॥ तेहने श्रावक वांदवा जायछे ॥ तेहवामां मिश्रदृष्टिवालो मित्र मिल्यो ॥ तिणे पुछयुं जे किहां जाओछो ॥ तिवारे श्रावक कहे जे । साधु महा पुरुषने वांदवा जइयेछै । तिवारे मिश्रदृष्टिवालो कहे ॥ एहने वांदे सुं थाय ॥ तिवारे

क्षयोपशमावे । अनंतानुबंधि क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ सम्यक्त्वमोहनीय ॥ ५ ॥ मिथ्यात्वमोहनीय ॥६॥ मिश्रमोहनीय ॥ ७ ॥ ए ७ प्रकृतिने कांइक उदय आवे तेहने क्षय करे ॥ अने सत्तामां दल छे तेहने उपशमावे तेहने क्षायोपशमसम्यक्त्व कहिये ॥ ते सम्यक्त्व असंख्याति वार आवे ॥ अने ७ प्रकृतिना दलने सर्वथा उपशमावे ढांके तेहने उपशमसम्यक्त्व कहिये । ते समकित पांच वार आवे ॥ अने ७ प्रकृतिना दलने सर्वथा क्षय करे तिवारे क्षायकसमकित कहिये ॥ ते सम्यक्त्व १ वार आवे ॥ चोथे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ ॥ द्रव्यथकि १ क्षेत्रथकि २ कालथकि ३ भावथकि ४ नोकारसी आदि छमासी तप जाणे सरदहे परुपे पण फरसि शके नहि ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवंतने पुछता हवा ॥ स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो ॥ तिवारे श्रीभगवंत कहे ॥ गौतम ते जीव समकितव्यवहारपणे शुद्ध प्रवर्तता ॥ ते जीव जघन्य त्रीजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो पंदर भवे मोक्ष जाय ॥ वेदक समकित एकवार आवे ॥ एक समयनि स्थिती छे । पूर्वे जो आयुष नो बंध पड्यो न होय तो ॥ ७ ॥ बो-

कारसी आदि देइने छमासीतप जाणे सरदहे परूपे शक्तिप्रमाणे फरसे । एक पच्चखाणथि मांफिने ॥१२ व्रत ॥११ श्रावकनि पफिमां आदरे जावत् संलेखणासुधि अनशन करि आराधे तिवारे गौतमस्वामी हाथ जोफि मान मोफि श्रीन्नगवंतने पुछताहवा । ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे श्रीन्नगवंते कह्युं ॥ ज० त्रिजे न्नवे मोक्ष जाय ॥उ०॥१५ न्नवे मोक्ष जाय॥ज० पहिले देवलोके उपजे ॥ उत्० १२ मे देवलोके उपजे । तेने साधुना व्रतनि अपेक्षाये देशविरति कहिये॥ पण परिणामथि अव्रतनि क्रिया उतरि गइ छे ॥ अल्प इछा ॥ अल्प आरंन्न ॥ अल्प परिग्रही ॥ सुशिल । सुव्रति ॥ धार्मिष्ट । धर्मव्रति । कल्पउग्रविहारी । महासंवेगविहारी ॥ उदासी ॥ वैराग्यवंत ॥ एकांतआर्य ॥ सम्यगमार्गी ॥ सुसाधु । सुपात्र ॥ उत्तम । क्रियावादि । आस्तिक्य । आराधक। जैनमार्गप्रन्नावक ॥ अरिहंतना शिष्य वर्णव्याछे । गीतार्थ जाणेछे॥ सिद्धांतनि शाख छे । श्रावकपणुं । एक न्नवमां प्रत्येक हजारवार आवे ॥ ५ ॥ छठुं प्रमत-संजतिगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ १५ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ११ प्रकृति पुर्वे कहि ते अने पच्चखाणावरणीय क्रोध ॥१॥ मान ॥२॥ माया ॥ ३ ॥ लोन्न ॥४॥ एवं ॥ १५ प्रकृतिने

पंचमा भणिया । एए पंच पमाया। जीवापडंति संसारे ॥१॥ ए ॥ ५ ॥ प्रमाद छांडे अने
१६ प्रकृतिने उपशमावे ॥ १५ ॥ पूर्वे कहि ते अने संजलनो क्रोध । एवं २६ ॥ प्रकृतिने
क्षयोप शमावे ॥ तेहने सुं गुण निपनो। ते जीव जीवादि पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि
भावथि तथा नोकारसि आदि देइने छमासी तप ध्यान जुगतपणे जाणे सरदहे परुपे फरसे। ते
जीव जघन्य०। तेज भवे मोक्ष जाय॥ उत्कृष्टो त्रिजे भवे मोक्ष जाय ॥ गति तो प्राये कल्पा-
तीतनि थाय ॥ ध्याननने विषे ॥ अनुष्टानने विषे। अप्रमत्त उद्यत थका रहेछे। तथा शुभ
लेश्यापणेज करिने नथि प्रमत्त कषाय जेहने तेहने अप्रमत्त संजतिगुणठाणुं कहिये ॥७॥आठ-
मुं नियट्टि बादरगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ १७ प्रकृति ने क्षयोपशमावे॥ १६ पूर्वे कहि ते।
अने संजलनो मान । ए ॥१७॥ प्रकृति ने क्षयोपशमावे। तिवारे गौतमस्वामी । हाथ जोडि
मान मोडि । श्रीभगवंतने पुछता हवा । स्वामीनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे
श्रीभगवंते कह्युं ॥ परिणामधारा । अपूर्व करण ॥ जे कोइ काले जीवने कोइ दिने आव्युं
नथि । ते श्रेणि जुगत जीवादिक पदार्थ । द्रव्यथि। क्षेत्रथि कालथि भावथि । तो ए

पांचमुं देशविरति गु० ॥ ५ ॥ बठुं प्रमत्तसंज त गु० ॥ ६ ॥ सातमुं अप्रमत्तसंजति गु० ॥ ७ ॥ आठमुं नियट्टिबादर गु० ॥ ८ ॥ नवमुं अनियट्टिबादर गु० ॥ ९ ॥ दशमुं सुक्ष्म-संपराय गु० ॥ १० ॥ इग्यारमुं उपशांतमोह गु० ॥ ११ ॥ बारमुं क्षिणमोह गु० ॥ १२ ॥ तेरमुं सजोगि केवलि गु० ॥ १३ ॥ चउदमुं अजोगि केवलि गुणठाणुं। ए नामद्वार समाप्तं हवे लक्षणगुणद्वार कहे बे ॥ पहेला मिथ्यात्व गुणठाणाना लक्षण कहेबे ॥ श्रीवीतरागनि वाणि थि उंबुं। अधिक। विपरीत शर्द्दहे परुपे फरसे तेहने मिथ्यात्व कहिये। उंबि परुपणा ते केहने कहिये। जिम कोइ कहे जे जीव अंगुठा मात्र बे। तंदुल मात्र बे ॥ शामा मात्र बे दीपक मात्र बे तेहने उंबि परुपणा कहिये ॥१॥ अधिकी परुपणा ते केहने कहिये ॥ एक जीव सर्व लोक ब्रह्मांड मात्रमां व्यापि रह्यो बे। तेहने अधिकी परुपणा कहिये ॥२॥ विपरीत परुपणा ते केहने कहिये ॥ कोइ कहे जे पंच भूत थकि आत्मा उपनो बे ॥ अने एहने विनाशे जीव पण विणशे बे ॥ ते जड बे। ते थकि चैतन्य उपजे विणशे। इम कहे तेहने विपरीत परुपणा कहिये ॥ ३ ॥ ए मीथ्यात्व इम नव पदार्थनुं विपरीतपणुं सरदहे परुपे फरसे

प्रकृति पुर्वे कहि ते अने संजलनि माया ॥ १ ॥ स्त्रीवेद ॥ २ ॥ पुरुषवेद ॥ ३ ॥ नपुसक वेद ॥ ४ ॥ एवं ॥ २१ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडी मान मोडी श्रीभगवंतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो ॥ तिवारे भगवंते कह्युं । ते जीव जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदि देइने छमासी तप ॥ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि निर्विकार असाथी ॥ विषयनिरवंछापणे। जाणे सरदहे परुपे फरसे ते जीव ॥ जघन्य तेज भवे मोक्षजाय । उत्० । त्रीजे भवे मोक्ष जाय ॥ हवे अनियट्टि बादर ते । सर्वथा प्रकारे निवर्त्यो नथि अंश मात्र हजि बादरसंपरायक्रिया रहि छे माटे अनियट्टिबादर गुणठाणुं कहिये ॥ तथा आनमा नवमा गुणठाणाना शब्दार्थ घणा गंभिर छे ॥ ते अन्य पंचसंग्रहादिक ग्रंथ तथा सिद्धांतथि समजवा ॥ ९ ॥ दशमुं सूक्ष्म संपरायगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ २७ प्रकृति ने क्षयोपशमावे ॥ २१ प्रकृति पूर्वे कहि ते अने । हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ भय ॥ ४ ॥ शोक ॥ ५ ॥ दुगंछा ॥ ६ ॥ एवं॥ २७ प्रकृति ने क्षयो-पशमावे ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि ॥ श्रीभगवंतने पुछता हवा स्वामि

प्रकृति पुर्वे कहि ते अने संजलनि माया ॥ १ ॥ स्त्रीवेद ॥ २ ॥ पुरुषवेद ॥ ३ ॥ नपुसक वेद ॥ ४ ॥ एवं ॥ २१ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोरुी मान मोरुी श्रीजगवंतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो ॥ तिवारे जगवंते कह्युं । ते जीव जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदि देइने छमासी तप ॥ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि जावथि निर्विकार असाथी ॥ विषयनिरवंछापणे । जाणे सरदहे परुपे फरसे ते जीव ॥ जघन्य तेज जवे मोक्षजाय । उत्० । त्रीजे जवे मोक्ष जाय ॥ हवे अनियट्टि बादर ते । सर्वथा प्रकारे निवर्त्यो नथि अंश मात्र हजि बादरसंपरायक्रिया रहि छे माटे अनियट्टिबादर गुणठाणुं कहिये ॥ तथा आठमा नवमा गुणठाणाना शब्दार्थ घणा गंभिर छे ॥ ते अन्य पंचसंग्रहादिक ग्रंथ तथा सिद्धांतथि समजवा ॥ ए ॥ दशमुं सूक्ष्म संपरायगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ २७ प्रकृति ने क्षयोपशमावे ॥ २१ प्रकृति पूर्वे कहि ते अने । हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ जय ॥ ४ ॥ शोक ॥ ५ ॥ दुगंछा ॥ ६ ॥ एवं ॥ २७ प्रकृति ने क्षयोपशमावे ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोरुि मान मोरुि ॥ श्रीजगवंतने पुछता हवा स्वामि

पडि पके दशमांथि पके तो पहिला गुणठाणासुधि जाय । पण इग्यारमेथि चढवुं तो नथि। उपशांत ते उपशम्यो छे मोह सर्वथा जले करि अग्नि ढंलव्यानिपरे टाळ्यो नहि ढांक्योछे माटे उपशांतमोह गुणठाणुं कहिये ॥११॥ बारमुं क्षीणमोह गुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण जे ॥ ४७ प्रकृति ने सर्वथा खपावे । क्षपकश्रेणि । क्षायकभाव । क्षायक समकित ॥ क्षायकजथाख्यातचारित्र ॥ करणसत्य । जोगसत्य । भावसत्य अमायी ःअकषायी वीतरागी । भावनिर्ग्रंथ । संपूर्ण संवुरु ॥ संपूर्ण भावितात्मा ॥ महातपस्वी । महासुशिल । अमोही । अविकारी । महाज्ञानी ॥ महाध्यानी ॥ वर्द्धमान परिणामी । अपडिवाइ थइ अंतर्मुहुर्त्त रहे । ए गुणठाणे काल करवो नथि । पुनर्भव छे नहि । छेहले समये पांच ज्ञानावरणिय ॥ नव दर्शनावरणिय ॥ पंचविध अंतरायक्षयकरणोद्यमकरि ॥ तेरमा गुणठाणाने पहिले समये क्षयकरि । केवल ज्योति प्रकटे माटे क्षीणतेक्षयकरयोछे मोहसर्वथाजेगुणठाणे तेहने 'क्षीणमोह गुणठाणुं कहिये ॥१२॥ तेरमुं सजोगी केवलि गुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण । दश बोल सहित तेरमे गुणठाणे विचरे ॥ सजोगी ॥१॥ सशरिरी ॥ २ ॥ सलेशी ॥ ३ ॥ शुकललेशी ॥ ४ ॥ जथाख्यातचारित्र ॥ ५ ॥

नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ कर्म क्षीण करिने मुक्तिपद पामे ॥ शरिर उदारिक। तेजस कार्मण। सर्वथा छांमिने समश्रेणि रुजुगति अन्य आकाशप्रदेशने अवगाह्तो अणफरसतो। एक समय मात्रमां। उर्द्धगति। अविग्रहगतिये तिहां जाय। एरंमबीज बंधन मुक्तवत्। निर्लेप तुंबिवत्। कोदंम मुक्तबाणवत्॥ इंधनवह्निमुक्तधुम्रवत्। तिहांसिद्धक्षेत्रे जइ साकारोपयोगे सिद्ध थाय। बुद्ध थाय॥ पारंगत थाय। परंपरगत थाय। सकल कार्य अर्थ साधि॥ कृतकृतार्थ। निष्टितार्थ। अतुल शुखसागर निमग्न॥ सादिअनंत जागे सिद्ध थाय॥ ए सिद्धपदनो ज्ञावस्मरण॥ चिंतन मनन कदा काले मुझने होशे। सो घटि पल धन्य सफल होशे॥ हवे अजोगी ते। जोगरहित केवलसहित विचरे॥ तेहने अजोगी केवली गुणठाणुं कहिये॥ १४॥ इति लक्षण गुणद्वार बीजो संपूर्ण॥ २॥ हवे त्रिजो स्थितिद्वार कहेछे॥ पहिला गुणठाणानि स्थिति ३ प्रकारनि छे॥ अणादिया अपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि ने अंतपण नथि ते अत्नव्यजीव ना मिथ्यात्व आश्रि॥ १॥ अणादिया सपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि पण अंत छे ते त्नव्यजीवना मिथ्यात्व आश्रि॥ २॥

हवे चोथो क्रियाद्वार कहेछे । पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ॥ २४॥ क्रिया लाग्ने । इरियावहिया क्रिया वर्जिने ॥ विजे । चोथेगु० ॥ २३ क्रिया लाग्ने इरियावहिया ॥ १ ॥ ने मिथ्यात्वनि ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ पांचमे गु० ॥ २२ क्रिया लाग्ने मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ इरियावहिया ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ वर्जिने ॥ छठे गुणठाणे ॥ २ ॥ क्रिया । आरंभिया ॥ १ ॥ मायावत्तिया ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ लाग्ने । सातमे गुणठाणेथी ते दशमा गुणठाणा सुधो ॥ १ ॥ मायावत्तिया क्रिया लाग्ने ॥ इग्यारमे वारमे तेरमे गुणठाणे ॥ १ ॥ इरियावहिया क्रिया लाग्ने । चउदमे गुण० कोइ क्रिया लाग्ने नहि ॥ इति ४ थो ॥ क्रियाद्वार समाप्तं ॥ ४ ॥ हवे पांचमो सत्ताद्वार कहेछे ॥ पहिलागुणठाणाथिते इग्यारमा गुणठाणा सुधि। आठ कर्मनि सत्ता । वारमे ॥ ७ ॥ कर्मनि सत्ता १ मोहनियकर्म वर्जिने ॥ तेरमे चउदमे गुण० ॥४॥ कर्मनि सत्ता। वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ इति पांचमो सत्ताद्वार समाप्तं ॥ ५ ॥ हवे छठो वंधद्वार कहेछे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते सातमा गुणठाणासुधि त्रिजुं गुणठाणुं वर्जिने ॥ ८ कर्म वांधे । अने जो ॥ ७ वांधे तो आयुष वर्जिने । त्रिजे आठमे न-

सठ जेद जीवना कहे छे ॥ तेहमां त्रणसेंनेत्रणजेद मनुष्यना ॥ एकसोअठाणुजेद देवताना ॥ अमतालीस जेद तिर्यचना ॥ चउदजेद नारकीना ॥ एवं ॥५६३॥ जेद जीवना कह्या ॥ हवे तेहमां ॥ मनुष्यना ॥३०३॥ जेद कहेछे ॥ ते ॥ १५ कर्म जूमिना मनुष्य ॥३०॥ अकर्मजूमिना मनुष्य ॥ ५६ ॥ अंतर द्विपना मनुष्य ॥ एवं ॥ १०१ क्षेत्रना गर्जज मनुष्यना ॥ अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ॥ एवं ॥ २०२ ॥ ने एकसोने एक क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता एवं ॥३०३ जेद मनुष्यना ॥ हवे कर्मजूमि ते केहने कहिये ॥ असी ॥ १ ॥ मसी ॥ २ ॥ कृषी ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ प्रकारना व्यापारे करी जीवे तेहने कर्मजूमिनां मनुष्य कहिये ॥ ते कर्मजूमिना क्षेत्र केटलाछे ॥५॥ जरत ॥५॥ इरवत ने ॥ ५ महाविदेह । एवं ॥१५॥ ते कर्मजूमि किहां छे ॥ एकलाख जोजननो जंबुद्विप छे ॥ तेहमां ॥ १ ॥ जरत ॥ १ ॥ इरवत ॥ १ ॥ महाविदेह ए ॥३॥ क्षेत्र कर्मजूमिनां जंबुद्विपमां छे ॥ तेहने फरतो ॥ बे लाख जोजननो लवण समुद्र छे ॥ तेहने फरतो चारलाख जोजननो धातकीखंमद्विप छे ॥ तेहमां ॥ २ ॥ जरत ॥ २ ॥ इरवत ॥ २ ॥ महाविदेह छे ॥ तेहने फरतो ॥८॥ लाख जोजननो । कालोदधि समुद्र छे ॥

२ हि॥ तापनो तिहां टाढनो नहि॥चालवानो तिहां वेसवानो नहि ॥ वेसवानो चालवानो
नहि ॥ दशमे इग्यारमे वारमे ॥१४॥ परिसह लाभे॥आठ जे मोहनीय कर्मने उदये हता ते
वर्ज्या ॥ ते कहे छे ॥ अचेलनो ॥ १ ॥ अरतिनो ॥ २ ॥ स्त्रीनो ॥ ३ ॥ वेशवानो ॥ ४ ॥
आक्रोशनो ॥ ५ ॥ मेलनो ॥ ६ ॥ सत्कार पुरस्कारनो ॥७॥ ए ॥ चारित्र मोहनीय कर्मने
उदय हता ते ॥ ने ८ मो दंशण परिसह दर्शन मोहनीयने उदय हतो ते ॥ ए ८ वर्जिने
शेष ॥१४ रह्या ते मांहिला एक समये ॥१२ वेदे॥टाढनो तिहां तापनो नहि । तापनो तिहां
टाढनो नहि ॥चालवानो तिहां स्थानकनो नहि । स्थानकनो तिहां चालवानो नहि॥तेरमे
चउदमे गुणठाणे ॥ ११ परिसह लाभे ॥ पूर्वे ॥ १४ कह्या तेहमांथि ॥ प्रज्ञानो ॥ १ ॥
अज्ञाननो ॥ २ ॥ ए २ ज्ञानावरणिय कर्मने उदय हता ते ॥ अने ॥१अलाभनो अंतराय
कर्मने उदय हतो ते । ए ३ वर्जिने शेष ११ रह्या ॥ ते मांहिला ॥ १ समये ए वेदे ॥ टाढनो
तिहां तापनो नहि । तापनो तिहां टाढनो नहि । चालवानो तिहां स्थानकनो नहि । स्थानकनो
तिहां चालवानो नहि ॥ इति १३ मो परिसहद्वार समाप्तं ॥ १३ ॥ हवे ॥ १४ मो मार्गणाद्वार

कोमि लाने माटे ॥६॥ तेथि पांचमां गुणठाणावाला असंख्यातगुणा । तिर्यंच श्रावक नव्या माटे ॥७॥ तेथि बिजा गुणठाणावाला असंख्यातगुणा ४ गतिमां लान्ने माटे ॥ ८ ॥ तेथि त्रिजा गुणठाणावाला असंख्यातगुणा४ गतिमां विशेष छे माटे॥९॥ तेथी चोथा गुणठाणावाला असंख्यातगुणा घणि स्थिति छे माटे॥१०॥तेथि चौदमां गुणठाणावाला ने सिद्धनगवंतजि अनंतगुणा ॥११॥ तेथि पहेला गुणठाणावाला अनंतगुणा एकेंद्रिय प्रमुख सर्व मिथ्यादृष्टि छे माटे ॥१२॥ इति २२ मो अल्पबहुत्वद्वार समाप्तं ॥ २२ ॥ इतिगुणठाणाना २२ द्वार समाप्तं ॥ हवे नाव ६ कहेछे ॥ उदयनाव ॥१॥ उपशम नाव ॥ २ ॥ क्षायकनाव ॥ ३ ॥ क्षयोपशमनाव ॥४॥ परिणामिकनाव ॥५॥ सन्निपातिनाव ॥६॥ हवे उदयनावनाना ॥२॥ नेद ॥ जीवउदयनिष्पन्न ॥ १ ॥ ने अजीवउदयनिष्पन्न ॥ २ ॥ जीवउदयनिष्पन्नमा ॥ ३३ बोल पामे ॥ ४ ॥ गति ॥ ६ ॥ काय ॥ ६ ॥ लेश्या ॥ ४ ॥ कषाय ॥ ३ ॥ वेद । एवं ॥ २३ ने मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अज्ञान ॥ २ ॥ अविरति ॥ ३ ॥ असंज्ञिपणुं ॥ ४ ॥ आहारकपणुं ॥ ५ ॥ छद्मस्थपणुं ॥ ६ ॥ शजोगिपणुं ॥ ७ ॥ संसार परियट्टणा ॥८॥ असिद्ध ॥९॥ अकेवलि ॥१०॥

प्रथमना ॥३अज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ ३ दृष्टि ॥४ चारित्र प्रथमना ॥१चरित्राचरित्त ते श्रावकपणु पासे ॥ १ आचार्यगणिनि पदवी ॥ १ चौद पूर्व ज्ञाननी प्राप्ति ॥ ५ इंद्रिय नि लब्धि ॥ ५ दानादिलब्धि । एवं सर्व मिली ॥ ३० बोल ॥४॥ हवे परिणामिक भावनाना २ भेद । सादिपरिणामिक ॥ १ ॥ अनादिपरिणामिक ॥ २ ॥ सादि विणशे ॥ अनादि विणशे नहि । सादिपरिणामिकना अनेक भेद छे । जुनी सुरा मदिरा जुनो गोल तंदुल ए आदि ७२ बोल भगवतीनि शाखे छे ॥ अनादिपरिणामिकभावना १० ॥ बोल ॥ धर्मास्तिकाय ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकाय ॥२॥ आकाशास्तीकाय ॥३॥ पुद्गलास्तिकाय ॥४ ॥ जीवास्तिकाय ॥५॥ काल ॥ ६ ॥ लोक ॥७॥ अलोक ॥८॥ भव्य ॥९॥ अभव्य ॥ १० ॥ एवं १० ॥ ५॥ हवेसन्निवाइभावना २६ भांगा ॥ १० ॥ द्विकसंजोगीना १० ॥ त्रिकसंजोगीना ॥ ५ चोकसंजोगीना ॥ १ पंचसंजोगिनो । एवं २६ भांगा । एहनो विचार श्रीअनुयोगद्वार सिद्धांतथि जाणवो ॥ ६ ॥ हवे ॥ १४ गुणठाणा उपर ॥ १० क्षेपकद्वार उतारेछे । तेहमां प्रथम हेतुद्वार कहेछे ॥ २५ कषाय ॥ १५ जोग ॥ एवं ४० ने ॥ ६ काय ॥ ५ इंद्रिय ॥ १ मन ॥ ए १२ अव्रत । एवं ५२ ने ५

२२ हेतु ॥ए॥ नवमे गुण० १६ हेतु ते पूर्वे २२ कह्या तेहमांथि । हास्य १ ॥ रति २ ॥ अरति ३ ॥ नय ४ ॥ शोक ५ ॥ डुगंठा ६ ॥ ए ठ वर्ज्या । शेष १६ हेतु ॥ए॥ दशमे गुण० १० हेतु ते ॥ ए जोग ने ॥ १ संजलनो लोन । एवं १० हेतु ॥ १० ॥ इग्यारमे बारमे गुण० ॥ए हेतु ते ए जोग जाणवा ॥ ११ ॥ १२ ॥ तेरमे गुण० ७ हेतु ते ७ जोग जाणवा ॥ १३ ॥ चौदमे गुण० हेतु नथि ॥१४॥ इति पहिलो हेतुद्वार समाप्तं ॥१॥ हवे बीजो दंरूक द्वार कहेछे । पहिले गुण० २४ दंरूक । बिजे गुण० १ए दंरूक ते ५ स्थावरना वर्ज्या । त्रिजे चोथे गुण० १६ दंरूक ते ३ विकलेंद्रिय वर्ज्या । पांचमे गुण० २ दंरूक संज्ञिमनुष्य १ संज्ञितिर्यंच ॥ २ ॥ ए २ ॥ ठठाथि ते चौदमा गुणठा० सुधि १ मनुष्यनो दंरूक । इति २ दंरूकद्वार समाप्तं ॥ २ ॥ हवे त्रिजो जीवाजोनिद्वार कहेछे । पहेले गुण० ८४ लाख जीवा जोनि ॥ बिजे गुण० ३२ लाख ते एकेंद्रियनि वर्जि ॥ त्रिजे चोथे गुण० २६ लाख जीवा जोनि ॥ पांचमे गुण० ॥१८ लाख जीवा जोनि । ठठाथि ते १४ मा गुणठाणासुधि १४ लाख जीवा जोनि । इति त्रिजो जोनिद्वार समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे ४ थो अंतरद्वार कहेछे । पहिले गुण० जघ० अंतरमुहूर्त्तउत्० ६६

आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥२॥ वेदनीय । ए ३ वर्जिने । तथा २ नि करे तो । म ॥१॥ गोत्र ॥२॥ ए २ नि॥तेरमे गुणठाणे ॥ २ कर्मनि उदीरणा ॥ नाम ॥१॥ गोत्र ॥२॥ ए २ नि॥ चउदमे गुण० उदीरणा करे नहि ॥ इति ॥ ए ॥ मो उदीरणाद्वार समाप्तं ॥ ए ॥ चेवक० निश्चे ॥ हवे ॥ १० मो निर्जराद्वार कहेछे ॥ पहिलाथि ते ११ मा गुणठाणा सुधि ॥ ७ कर्म नि निर्जरा ॥ बारमे ॥ ७ कर्मनि निर्जरा मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे चउदमे ४ कर्मनि निर्जरा। वेदनीय ॥१॥ आयुष ॥२॥ नाम ॥३॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ४ नि । इति ॥ १० मो निर्जराद्वार समाप्तं ॥ १० ॥ हवे इग्यारमो भावद्वार कहे छे ॥ उदयभाव ॥ १ ॥ उपशमभाव ॥ २ ॥ क्षायकभाव ॥ ३ ॥ क्षयोपशमभाव ॥ ४ ॥ परिणामिकभाव ॥ ५ ॥ संनिवाइभाव ॥ ६ ॥ पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ॥ ३ भाव । उदय ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ परिणामिक ॥ ३ ॥ विजे गु० चोथे गु० पांचमे गु० छठे गु० सातमे गु० आठमेथि ते इग्यारमा गुणठाणा सुधि उपशम श्रेणिवालाने ॥ ४ भाव उदय ॥ १ ॥ उपशम ॥ २ ॥ क्षयोपशम ॥ ३ ॥ परिणा-मिक ॥ ४ ॥ तथा कोइक उपशमने ठेकाणे क्षायकपण कहेछे ॥ अने ७ मांथि मांकिने

ते इग्यारमा गुणठाणावाला अघोगाम विजयथि ५ अनुत्तर विमानसुधि फरसे ॥ बारमुं गुण० लोकनो असंख्यातमो नाग फरसे । तेरमुं गुण० सर्व लोक फरसे । चौदमुं गुण० लोकनो असंख्यातमो नाग फरसे ॥ इति ६ ठो फरसनाद्वार समाप्तं ॥ ६ ॥ हवे तिर्थंकर गोत्र ४ गुणठाणे बांधे ॥ चोथे पांचमे छठे ने सातमे ॥ ए ४ गुणठाणे बांधे । शेष गुणठाणे न बांधे ॥ तिर्थंकर देव ए गुणठाणा फरसे ते । ४ । ६ । ७ । ८ । ए । १० । १२ । १३ ॥ १४ ॥ ए ए फरसे इति ७ मो द्वार समाप्तं ॥ ७ ॥ गुणठाणा १४ मां । १ । ४ । ५ । ६ । १३ । ए ५ शास्वता । शेष ए गुण० अशास्वता । इति आठमो द्वार समाप्तं ॥८॥ गुणठाणा १४ मा । १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ए ७ गुण० ६ संघयण । आठमाथि ते १४ मा गुणठाणा सुधि एकवज्रऋषन नाराचसंघयण । इति ए मो द्वार समाप्तं ॥ ए ॥ आर्याजी ॥ १ ॥ अवेदि ॥ २ ॥ परिहारविशुद्धचारित्रवंत ॥ ३ ॥ पुलाक लब्धिवंत ॥ ४ ॥ अप्रमादि साधु ॥ ५ ॥ चौद पुर्वी साधु ॥ ६॥ आहारकशरीरि ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ नुं कोइ देवता साहारणकरि शके नहि । इति १० मो द्वार समाप्तं ॥१०॥ इति १० क्षेपक द्वार समाप्तं इति गुणठाणाद्वार समाप्तं॥

३ तिर्यंचणीमां जीवना भेद २ सज्ञाना अप्र० ने प्रजासो गुण० ५ प्रथमना ॥जोग१३॥उ-प० ए॥ ज्ञान ३ अज्ञान३ दर्श० ३ ॥लेशा ६

४ मनुष्यनि गतिमां जीवना भेद ३ संज्ञीनो अप्र० ने प्रजासो ॥ २ ॥ समुर्छिम मनुष्य असंज्ञीनो अप्र०॥ ३॥ ए ३॥ गुण० १४ । जोग० १५ ॥ उप० १२ । लेशा ६ ॥

५ मनुष्यणीमां जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गुण० १४। जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

६ देवतानि गतिमां जीवना भेद ३ संज्ञीनो अप्र० १ ने प्रजासो २ असंज्ञीनो अप्र०३॥ गुण० ४ पहिला ॥ जोग ११।४ मनना ४ ॥ वचनना। २ वैक्रेयना ॥ १ कार्मणनो ॥ एवं ११ ॥ उप० ए लेशा ६ ॥

७ देवांगनामां जीवना भेद २ संज्ञीनो अप्र-जासो १॥ ने प्रजासो २॥ गुण० ४ प्रथमना॥ जोग ११ । ४ मनना ४ वचनना ॥२ वैक्रे-यना ने १ कार्मणनो ॥ एवं ११॥ उपयोग ए॥ लेशा ४ प्रथमनी

८ सिद्धगतिमां जीवना भेद नथि॥ गुणठा-णा नथि ॥जोग नथि॥उपयो० २ केवल-ज्ञान १॥ केवलदर्शन २। लेशा नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वेथि थोडा मनुष्य-

१ अचक्षुदर्शन एवं ५॥अने चउरिंडियमां
६ ते १ चक्षुदर्शन वध्युं एवं ६॥ लेशा३॥
६ पंचेंडियमां जीवना ज्ञेद ४ ॥ संज्ञिनो
अप्रजासो १ ने प्रजासो २ असंज्ञीनो
अप्रजासो ३ ने प्रजासो ४ एवं ४॥ गुण० १२
प्रथमना॥ जोग१५॥उपयोग१०केवलज्ञान
१ केवलदर्शन २ ए २ वर्ज्या ॥ लेशा ६ ॥
७ आणिंदियामां जीवनोज्ञेद १ संज्ञिनो प्रजा-
सो ॥ गुणठाणा २ तेरमुं ने चउदमुं ॥ जो-
ग ७ । २ मनना ते सत्य मन १ व्यव-
हार मन २ वे वचनना ते सत्यवचन
१ व्यवहारवचन २ एवं ४ ॥ अने उदा-

रिकनो ५ उदारिकनो मिश्र ६ कार्मण-
कायजोग ए ७ ॥ उपयोग २॥ केवलज्ञान
१ केवलदर्शन २ । लेशा १ शुकल ॥ एह-
नोअल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा पंचेंड्रिया
१ । तेहथिचउरिंड्रिया विशेषाहिया २
। तेहथि तेइंड्रिया विशेषाहिया ३ तेह-
थि बेइंड्रिया विशेषाहिया ४ । तेहथि
आणिंदिया अनंतगुणा ५ । तेहथि एकें-
ड्रिया अनंतगुणा ६ ॥ तेहथि सइंड्रिया
विशेषाहिया ७ ॥ इति त्रिजोद्धार समाप्त.
१ सकायामां जीवनाज्ञेद १४ ॥ गुण० १४ ॥
जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

२ मनजोगीमां जीवनो नेद १ ॥ संज्ञीनो प्रजासो ॥ गुण० १३ जोग १४ एक कार्मणनो वर्जिने ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा ६ ॥

३ वचनजोगीमां जीवना नेद ॥ ५ ॥ बेइंद्रिय १ तेइंद्रिय २ चउरिंद्रिय ३ असंज्ञीपंचेंद्रिय ४ संज्ञिपंचेंद्रिय ५ ए ५ ना प्रजासा ॥ गुण० १३ जोग १४ कार्मण वर्जिने ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

४ कायजोगीमां जीवनानेद १४ ॥ गुण० १३॥ जोग १५ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

५ अजोगीमां जीवनो नेद १ संज्ञीनो प्रजासो ॥ गुणठाणुं ॥१॥ चौदमुं ॥ जोग नहि । उपयोग २ केवल ज्ञान ने केवलदर्शन ॥ लेशा नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा मन जोगी १ ॥ तेहथि वचन जोगी असंख्यातगुणा २ ॥ तेहथि अजोगी अनंतगुणा ३ ॥ तेहथि कायजोगी अनंतगुणा ४॥तेहथी सजोगी विशेषाहिया ५ ॥ इति पांचमो द्वार ॥

१ सवेदीमां जीवना नेद १४ गुण० ए प्रथमना ॥ जोग १५।उ० १० केवलज्ञान ने केवलदर्शन ए बे वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

३ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २ ए २ मां।जीवना नेद २ संज्ञीना ॥ गुण० ए ॥ जोग

ते इग्यारमा गुणठाणावाला अघोगाम विजयथि ५ अनुत्तर विमानसुधि फरसे ॥ बारमं

३ अकपायीमां जीवनो भेद ॥ १ । संज्ञीनो प्रजासो ॥ गुण० ४ उपरना ॥जोग ११ । ४ मनना ॥ ४ वचनना ॥ २ उदारिकना ।१ कार्मणनो । एवं ११। उपयोग ए । ५ ज्ञान ४ दर्शन । एवं ए॥लेशा ६। एहनो अल्पबहुत्व सर्वथि थोडा अकषायी १॥तेहथि मानकसायी अनंतगुणा २॥ तेहथि कोहकपायी विशेषाहिया ३ तेहथिमायाकपायी विशेषाहिया ४ ॥ तेहथि लोभकपायी विशेषाहिया ५ तेहथि सकपायी विशेषाहिया ६ इति सातमो द्वार ॥

१ सलेशीमा जीवना भेद १४ ॥ गुण० १३॥ जोग १५ । उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

४ कृष्ण १ निल २ कापुत ३ ए ३ लेशामां ॥ जीवना भेद १४ ॥ गुणठाणा ६ प्रथमना॥ जोग १५॥उपयोग १० बे केवलना वर्ज्या । लेशा पोतपोतानि ॥

५ तेजु०लेशामां जीवना भेद ३ संज्ञिनो अप्रजासो १ ॥ प्रजासो २ ॥ बादर एकेंद्रियनो अप्रजासो ३ ॥ गुण० ७ प्रथमना॥जोग १५ उपयोग १० ॥ लेशा १ तेजु ॥

६ पद्मलेशामां जीवना भेद २ संज्ञिना ॥ गुण० ७ प्रथमना ॥ जोग १५ उपयोग १० लेशा १ पद्म ॥

झाफेरी लांवि छे॥ते एकेकि दाढाउपरे॥सातसात अंतरद्वीपाछे॥ तेअंतरद्वीपा किहांछे॥ जग-
तिना कोटथकि ॥३००॥ जोजनलवणसमुद्रमां जाइये । तिवारे पहेलो अंतरद्वीपो आवे ॥ते॥
३००॥जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥४००॥ जोजन जाइये ॥ तिवारे विजो अंतर
द्वीपो आवे ते ॥ ४०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥ ५०० ॥ जोजन
जाइये तिवारे ॥ त्रिजो अंतरद्वीपो आवे ॥ ते ॥५००॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहां
थि छसें जोजन जाइये तिवारे ॥ चोथो अंतरद्वीपो आवे ते ॥६००॥ जोजननो लांबो ने पहो
लो छे ॥ तिहांथि ॥७००॥ जोजन जाइये तिवारे । पांचमो अंतरद्वीपो आवे ॥ ते ॥ ७०० ॥
जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥८००॥ जोजन जाइये तिवारे छठो अंतरद्वीपो
आवे ॥ ते ॥८००॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥९००॥ जोजन जाइये तिवारे
सातमो अंतरद्वीपो आवे ते ॥९००॥ जोजननो लांबो ने पोहोलो छे॥ एवं। सात चोकुं ॥२८॥
अंतरद्वीपा जाणवा ॥ एमज इरवतक्षेत्रनी मर्यादानो करणहार शिखरीनामे पर्वत छे ॥ ते चुल
हिमवंत सरिखो जाणवो ॥ तिहां पण ॥२८॥ अंतरद्वीपा छे ॥ अठाविश ३ ॥५६॥ अंतर द्वीपा

गूण० २ पहेलुं ने त्रिजुं॥ जोग १३ ॥ उप-
योग० ६ ॥ लेश्या० ६ ॥

१० विनंग अज्ञानीमां जीवना नेद २ संज्ञी
ना ॥ गूण० २ पहेलुं ने त्रिजुं ॥ जोग १३ ॥
उप० ६ ॥ लेशा० ६ ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥
सर्वथि थोमा मनपर्यवज्ञानी १ ॥ तेहथि
अवधिज्ञानी असंख्यात गूणा २ ॥तेहथि
मतिज्ञानी ने श्रुतज्ञानी माहोमांहि तुल्य
ने विशेषाहिया४॥तेहथि विनंग अज्ञानी
असंख्यात गूणा ५ । तेहथि केवलज्ञानी
अनंतगुणा ६॥ तेहथि ज्ञानी विशेषाहिया
७ ॥ तेहथि मति श्रुतअज्ञानी माहोमां-

हितुल्यने अनंतगूणा ए॥ तेहथि अज्ञानी
विशेषाहिया ॥ १० ॥इति १० मो द्वार ॥

१ चक्षुदर्शनीमां जीवना नेद ६॥ चउरिंद्रि
य १॥ असंज्ञि पंचेंद्रिय २॥ संज्ञी पंचेंद्रिय
३ ॥ ए ३ ना अप्रजाप्ताने प्रजाप्ता ॥ गुण०
१२ प्रथमना ॥ जोग १४ कार्मणनोवर्जिने ॥
उप० १० केवलना २ वर्ज्या ॥ लेशा ६ ॥

२ अचक्षुदर्शनीमां जीवना नेद १४ गूण०
१२ । जोग १५ उप० १० लेशा ६ ॥

३ अवधिदर्शनीमां जीवना नेद २ ॥गूण०
१२ । जोग १५ उप० १० लेशा ६ ॥

४ केवलदर्शनीमां जीवनो नेद॥१॥गूण० २

गुण० २ पहेलुं ने त्रिजुं॥ जोग १३ ॥ उप-
... ६ ॥ लेशा० ६ ॥

उप०ए । ३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेशा० १ ॥
७ संजतासंजतिमां जीवनो भेद १ संज्ञीनो
प्र०गुण०१पांचमुं॥जोग१२ आहारकना २
ने१ कार्मणनोवर्जिने॥ उपयोग ६ । ३ ज्ञा
नने । ३ दर्शन । लेशा ६ ॥
८ असंजतिमां जीवना भेद १४ । गुण० ४
प्रथमना ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जि
ने ॥ उप०ए । ३ ज्ञान ॥ ३ अज्ञान ॥ ३
दर्शन ॥ लेशा ६ ॥
ए नोसंजतिनोअसंजतिनोसंजतासंजतिमां
जीवनो भेद नथी ॥ गुण० नथी ॥ जोग
नथि॥ ने । उप० २ ॥ लेशा नथि॥ एह

हितुल्यने अनंतगुणा ए॥ तेहथि अज्ञानी
विशेषाहिया ॥ १० ॥इति १० मो द्वार ॥

नो अल्पबहुत्व ॥ सर्वेथि थोका सुक्ष्म
संपरायचारित्रिया १ ॥ तेहथि परिहार-
विशुद्धचारित्रिया संख्यात गुणा २॥ ते-
हथि यथाख्यातचारित्रिया संख्यातगुणा
३ ॥ तेहथि छेदोपस्थापनीयचारित्रिया
संख्यातगुणा ४॥ तेहथि सामायकचारि-
त्रिया संख्यातगुणा ५॥ तेहथि संजति
विशेषाहिया ६ ॥ तेहथि संजतासंजति
असंख्यातगुणा ७ ॥ तेहथि नोसंजति ॥
नोअसंजति नोसंजातासंजति ॥ अनंत
गुणा ८ ॥ तेहथि असंजति वनस्पति
भेळवतां अनंतगुणाए॥इति ११ मो द्वार

हितुव्यने अनंतगूणा ए॥ तेहथि अज्ञानी
विशेषाहिया ॥ १० ॥इति १० मो द्वार ॥

१ परीत संसारिमां जीवना नेद १४॥ गुण०
१४ ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६
२ अपरीत संसारीमां जीवना नेद १४ ॥
गुण० १ ॥ पहलुं । जोग १३ आहारकना
२ वर्जिने ॥ उप० ६ ॥ अज्ञान ३॥ दर्शन
३ ॥ लेशा ६ ॥
३ नोपरितनो अपरीतमां जीवना नेद न-
थी गुण० नथी॥ जोग नथि ॥ उप० २
केवलज्ञान केवलदर्शन ॥ लेशा नथि ॥
एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा परी-
त १ ॥ तेहथि नोपरीतनो अपरीत अ-
नंत गुणा २ ॥ तेहथि ॥ अपरीत अ-

गूण० २ पहेलुं ने त्रिजुं॥ जोग १३ ॥ उप-

णनो वर्जिने ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा ६ ॥
२ अनासकामां जीवना नेद १० ॥ ते १४
मांथि। वेइंद्रिय १ तेइंद्रिय २ चउरिंद्रिय
३ असंज्ञी पंचेंद्रिय ४ ए ४ वर्ज्या ॥
गुण० ५ ते पहिलुं १ बिजुं २ चोथुं ३
तेरमुं ४ चौदमुं ५ ॥ ए ५ ॥ जोग ५॥
२ उदारिकना २ वैक्रेयना । ने । १ ।
कार्मणनो ॥ उप० । ११ ते ॥ मनपर्यव-
ज्ञान नहि ॥ लेशा ६ ॥ एहनो अल्प-
वहुत्व ॥ सर्वथि थोमा नासका १ ॥
तेहथि अनासका अनंतगुणा २ ॥ इति
१५ मो द्वार ॥

४५ चउरिंद्रिय प्रजाप्ता संख्यातगुणा
४६ पंचेंद्रीय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४७ बेंद्रिय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४८ तेंद्रीय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४९ पंचेंद्रीय अप्रजाप्ता असंख्यातगुणा
५० चउरिंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया
५१ तेंइंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया
५२ बेंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया
५३ बादर प्रत्येक शरीरि वनस्पति प्रजाप्ता असंख्यातगुणा
५४ बादर निगोदीया प्रजाप्ता असं०
५५ बादर पृथ्वी काया प्रजाप्ता अ०
५६ बादर अपकाया प्रजाप्ता असं०
५७ बादर वाउकाया प्रजाप्ता असं०
५८ बादर तेउ काया अप्रजाप्ता अ०
५९ बादर प्रत्येक शरीरि वनस्पति० अप्रजाप्ता असंख्यातगुणा
६० बादर निगोदीया अप्रजाप्ता अ०
६१ बादर पृथ्वी अप्रजाप्ता असं०
६२ बादर अपकाया अप्रजाप्ता अ०
६३ बादर वाउकाया अप्रजाप्ता असं०
६४ सुक्ष्म तेउकाया अप्रजाप्ता असं०
६५ सुक्ष्म पृथ्वी अप्रजाप्ता विसे०
६६ सुक्ष्म अपकाया अप्रजाप्ता विसेषा०

दर्शन ॥ लेशा ६ ॥

४ उपशम सम्यक्त्वदृष्टिमा जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गुण० ८ चोथाथि ११ मां सुधि ॥ जोग १५ उपयोग ७ ॥ ४ ज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ लेशा ६ ॥

५ क्षयोपशम ने वेदकसम्यक्त्वदृष्टिमां जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गुण० क्षयोपशम सम्यक्त्वदृष्टिमां ४ थी नवमांसुधि॥अने वेदकमां ४ थी सातमांसुधि जोग१५ उप०७ लेशा ६

६ क्षायक सम्य०जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गुण०११॥चोथाथि ते१४ मां सुधि॥जोग१५ उपयोग ९ ॥३ अज्ञानवर्जिने॥लेशा ६ ॥

७ मिथ्यात्व दृष्टिमां जीवना भेद १४ गुण० १ प्रथम ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उपयोग ६ । ३ अज्ञान॥३दर्शन ॥ लेशा ६ ॥

८ समामिथ्यात्व दृष्टिमां ॥ जीवनो भेद १ संज्ञिनोप्रजाप्तो ॥ गुण० १ त्रिजुं ॥ जोग १०। ४मनना ॥ ४ वचनना १ उदारिकनो ॥ १ कार्मणनो । एवं १० ॥ उप० ६ लेशा६॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोकासास्वादान समकिति १ तेह थि उपसम समकिति संख्यातगुणा २॥ तेहथि मिश्रदृष्टी संख्यातगुणा ३ ॥ तेहथि क्षयोपशम समकितिअसंख्यातगुणा४॥तेहथिवेदकसम-

९१ तिर्यंच जीव विसेषाहीया	९५ छद्मस्त जीव विसेषाहीया
९२ मिथ्यादृष्टी जीव वीसेषाहीया	९६ सजोगी जीव विसेषाहीया
९३ अवरति जीव विसेषाहीया	९७ संसारीक जीव विसेषाहीया
९४ सकसाया जीव वीसेषाहीया	९८ सर्व्व जीव विसेषाहीया

॥ इतिश्री अठाणुं बोलनो अल्प बहुत्व संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री छ आराना बोल. ॥

दसकोडा कोडि सागरोपमना छआरा जाणवा । तेहमां पहेलो आरो ॥ ४ ॥ कोडाकोडि सागरोपमनो जाणवो । ए आरो सुसम सुसमनामा जाणवो । एकलुं सुखमां सुख जाणवुं ॥ ए आराने विषे ३ गाउनुं देहमान । अने ३ पल्योपमनुं आउखुं । उत्तरते आरे २ गाउनुं देहमान अने २ पल्योपमनुं आउखुं जाणवुं ॥ ए आरे वसे छपन पांसली । उतरते आरे एकसो अठात्रिस पांसली जाणवी ॥ ए आराने विषे ॥ १ ॥ वज्र ऋषभ-

गणाउं क॰ ॥ रत्नजमाव नाकने वायरेउमे एहवा वस्त्रना । क० १० । ए १० । प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछित सुख आपे । ए आराने विषे ठेक थाकता जुगलना आउखा आमा ६ मास रहे । तेवारे जुगल परजवनुं आउखुं बांधे । तेवारे जुगलीणी एक जोमलुं प्रसवे । ते ठोरुनी प्रतिपालना ४ए दिन करे । जुगलजुगलीणी ने क्षण मात्रनो विजोग न पमे । एकने ठींक ने एकने बगासुं आवे मरिने देवता थाय । एहना शरीरनो निहरण देवता करे । गति तो १ देवनी जाणवी ॥ ए आराने विषे जुगलीया ने वेर विरोध ईर्षा ऊेहेर नही॥इति पहेलो आरो संपूर्ण ॥ १ ॥ हवे पहेलो आरो उतरीने । बीजो आरो बेठो । तेवारे अनंता वर्ण गंध रस स्फर्सना पर्यव ॥ अनंता अनंता हीणा थया । ए आरो ३ त्रण कोमाकोम सागरोपमनो । सूसमनामे जाणवो । एकलुं सुख जाणवुं । ए आराने विषे २ बे गाउनुं देहमान अने २ पल्योपमनुं आउखुं । उत्तरते आरे ॥ १ एक गाउनुं देहमान ने एक पल्योपमनुं आउखुं । ए आराने विषे वज्ररूषन्न नाराच संघयण ॥ समचउरंस संठाण ॥ ए आरे ॥ १२७॥ एकसो अठावीस पांसली॥ उतरते आरे ६४ पासली जाणवि । ए आरे ठठ नक्ते आहारनी ईछा उपजे॥

आहारनी इछा उपजे ॥ तिवारे शरीर प्रमाणे आहार करे। धरतिनि सरसाइ गोल सरखि जाणवि ॥ उतरते आरे थोमेरी जाणवि ॥ ए आरे दस प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछीत सूख पहोंचाडे। छेक थाकतां जूगलना आउखा आमा छ मास रहे। तेवारे जूगल परभवनुं आउखुं बांधे। तेवारे जूगलिणी एक जोमलुं प्रसवे ॥ ते छोरुनी प्रतिपालणा ७ए दिन करे। जूगल जूगलिणीने क्षणमात्रनो विजोग न पमे। एकने छीक ने एकने बगासूं आवे तेवारे मरीने देवता थाय। एहना शरीरनो निहरण देवता करे। ए ३ आरा जूगलना जाणवा एकलो जूगल धर्म जाणवो। ए आराने विषे। जरा रोग कुरुप नहि प्रतिपूर्ण अंग उपांग विषय सुख भोगवे ते दान पुन्यना फल जाणवा ॥ ए आराने विषे छेक थाकता चोरासि लाख पूर्व त्रण वर्ष ने सामा आठ महीना बाकी रह्या। तेवारे सर्वार्थसिध महाविमान थकी तेत्रीस सागरोपमनुं आउखुं भोगवीने चविने। वनिता नगरी। नाभी कुलगर राजापिता। मरुदेवी मातानी कुंखे रुषभ देवस्वामी उपना। सवानव मासे जन्म्या ॥ प्रथम रुषभनुं स्वप्न देखि रुषभदेव नाम दिधुं। रूषभदेव स्वामीये जूगला धर्म निवारीने। असि मसि कसि

रा ॥

आरे सात हाथनुं देहमान ने सो वर्ष आउखुं ॥ ए आरान विषे ठ संघयण ने ६ संठाण जाणवा। ए आराने विषे ३२ बत्रिस उतरते आरे १६ सोल पांसली जाणवी। ए आराने विषे दिन दिन प्रते आहारनि इछा उपजे। तेवारे ३२ कवळनो आहार करे। धरतिने सरसाइ सारेरि ॥ उतरते आरे थोफेरी जाणवि। ए आरो ठेक थाकतां पंच्योतेर वर्ष ने साफा आठ महिना बाकी रह्या॥ तेवारे दशमा देवलोकथि वीस सागरोपमनुं आवखुं जोगविने चविने। माहणकुंरु गाम नगरने विषे। रुषभदत्त ब्राह्मणने घेर देवानंदाजीनी कुंखे। महाविरस्वामी उपना ॥ तिहां स्वामी साफीब्यासी रात रह्या। त्यासिमी राते शक्रेंद्रनो आसन चल्यो। तेवारे शक्रेंद्रे उपयोग मुकीने जोयुं प्रभुने नीछक कुले उपना दीठा अनंते काले अछेरु थयुं। तेवारे हरण गमेषी देवताने कह्युं। जे जाओ जइने महाविरस्वामिनो गर्भ साहरो। साहरीने क्षत्रीकुंरु गाम नगरने विषे। सिद्धार्थ राजाने घेर। त्रिसला देवी क्षत्रियाणीनी कुंखे मुको। अने त्रिसलादेवि राणीनी कुंखे। पुत्रिपणे गर्भ ठे ते देवानंदाजीनी कुंखे मुको ॥ तेवारे हरणगमेषी देवता तेहतप्रमाण करी। तेज वेलाए आव्यो। आविने जग-

प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधार्या । तेहज वेलाए जंबुस्वामिने केवलज्ञान उपनुं ॥ ते ॥ ४४ ॥ प्रवर्जा पालिने नीर्वाण पधार्या । महाविरस्वामि पछी । चर्तुमालिस वर्ष सूधि केवल प्रवर्जा पालिने नीर्वाण पधार्या । महाविरस्वामि पछी । चर्तु- चुमालिस वर्ष सूधि केवल प्रवर्जा पालिने नीर्वाण पधार्या ।

प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधार्या । तेहज वेलाए जंबुस्वामिने केवलज्ञान उपनुं ॥ ते ॥ ४४ ॥ चुमालिस वर्ष सूधि केवल प्रवर्जा पालिने नीर्वाण पधार्या । महाविरस्वामि पछी । चर्तु- क्षेत्रमां ॥ ६४ चोसठ वर्ष सुधि केवल ज्ञान रह्युं । चोथा आरानो जन्मेलो होय ते पांचमा आरामां मोक्ष जाय । पांचमा आरानो जन्मेलो पांचमा आरामां मोक्ष जाय नही । जंबुस्वामि मोक्ष पहोंता पछी ॥ १० ॥ दश बोल वीछेद गया ते । परम अवधि ज्ञान ॥ १ ॥ मनपर्यव ज्ञान ॥ २ ॥ केवलज्ञान ॥ ३ ॥ परिहारविसुध चारित्र ॥ ४ ॥ सुक्ष्म संपराय चारित्र ॥५॥ जथाख्यात चारित्र ॥६॥ पूलाक लब्धी ॥ ७ ॥ क्षायक समकीत ॥ ८ ॥ आहरक शरिर ॥९॥ जिनकल्पी साधु ॥ १० ॥ ए ॥ १० ॥ बोल इति चोथो आरो संपूर्ण ॥४॥ हवे चोथो आरो उतरीने पांचमो आरो बेठो । तेवारे अनंता वर्ण गंध रस फर्सना पर्यव हीणा थया । ए आरो दुसमनामा एकलुं दुख जाणवुं । ए आरो २१ हजार वर्षनो जाणवो । ए आराने विषे । ७ हाथनुं देह मान ने १ सो वर्ष झाझेरानुं आउखुं । उतरते आरे ॥ १ ॥ हाथनुं देहमान ने २० वर्षनुं आउखुं ॥ ए आराने विषे ॥ ६ ॥ संघयण ने । ६ संठाण जाणवा ।

॥ ४ ॥ अग्निकुमार ॥ ५ ॥
कुमार ॥१॥ नागकुमार ॥ २ ॥ सुवर्णकुमार ॥ ३ ॥ विज्जुकुमार ॥ ४ ॥ अग्निकुमार ॥ ५ ॥
द्वीपकुमार ॥ ६ ॥ उदधिकुमार ॥ ७ ॥ दिशाकुमार ॥ ८ ॥ पवनकुमार ॥ ए ॥ थणितकु-
मार ॥१०॥ हवे ॥१५॥ परमाधामिना नाम कहेछे ॥ अंब ॥ १ ॥ अंबरिस ॥२॥ शाम ॥३॥
सवल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असिपत्र ॥ ए ॥
धनुष्य ॥१०॥ कुंज ॥११॥ वालु ॥१२॥ वेतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥१५॥
सोल वाणव्यंतरना नाम पिशाच ॥१॥ भूत ॥ २ ॥ जक्ष ॥३॥ राक्षस ॥ ४ ॥ किन्नर ॥५॥
किंपुरिस ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपन्नी ॥ ए ॥ पाणपन्नी ॥ १० ॥ इसि-
वाइ ॥ ११ ॥ भूइवाइ ॥१२॥ कंदिय ॥ १३ ॥ महाकंदिय ॥ १४ ॥ कोहंक ॥ १५ ॥ पयंग-
देव ॥१६॥ दश जंत्रकाना नाम ॥ आणजंत्रका ॥१॥ पाणजंत्रका ॥ २ ॥ लयणजंत्रका ॥३॥
शयणजंत्रका ॥४॥ वस्त्रजंत्रका ॥ ५ ॥ पुष्पजंत्रका ॥ ६ ॥ फलजंत्रका ॥ ७ ॥ बीय जंत्रका
॥८॥ विज्जुजंत्रका ॥ए॥ अवियत जंत्रका ॥१०॥ दश ज्योतिषीना नाम ॥ चंद्रमा ॥ १ ॥
सूर्य ॥२॥ ग्रह ॥३॥ नक्षत्र ॥४॥ तारा ॥५॥ ए ॥५ ॥ चल ते अढि द्वीपमा छे। ने ॥ ५

विछेद जाशे ॥३॥ चोथे पोहरे बादर अग्नि विछेद जाशे ॥४॥ ए आरे बेसतां गति ॥५॥ जाणवी उतरतां ४ गति ते मोक्ष अटकी इति पांचमो आरो संपूर्ण ॥हवे पांचमो आरो उतरीने छठो आरो बेससे । तेवारे अनंता वर्ण गंध रस स्फर्सना पर्यव हीणा थसे । ए आरो २१ एकवीस हजार वर्षनो जाणवो । ए आरो दुसम दुसमनामा एकलुं दुःखमां दुःख जाणवुं । ए आरे ॥ १ एक हाथनुं देहमान ने २० वर्षनुं आउखुं । उतरते आरे मूंढा हाथनी काया ने १६ सोल वर्षनुं आउखुं जाणवुं । ए आराने विषे १ छेवटुं संघयण ने हुंड संठाण जाणवुं । उतरते आरे पण एमज जाणवुं । ए आराने विषे ॥ ८ आठ पांसली ॥ उतरते आरे ॥ ४ चार पांसली जाणवी ॥ ए आराने विषे । ६ वर्षनी स्त्री गर्भ धरशे । ते काला कुदर्शनी रोगी ने रिसाल नखने मोवाला घणा एहवा छोकरा घणा जणशे । ते कुतरीनी पेरे परीवार चेलो फेरवशे । ए आराने विषे गंगा सिंधु नदि रहेशे ॥ तेमां ७२ बील छे ॥ तेमां त्रण त्रण माल छे । तेमां मनुष्य त्रीयंच पंखी बीज मात्र रहेशे ॥ गंगा सिंधुनो साढीबासठ जोजननो पट छे ॥ तेमां रथना चिला प्रमाणे पहोलुं ने गाडानि धुरि त्रूरू एटलुं उंडुं पाणि रहेशे । तेहमां मछ कछ घणा थाशे । ते

प्रवर्ज्या लीधा पछि एक हजार वरसे । केवल ज्ञान उपनुं । साधु । साधवी । श्रावक । श्रावीकारूप । चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादशांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ त्रीजा आराना । त्रण वरसने साडाआठ महिना । ठेक थाकता बाकी रह्या ॥ तेवारे महा वद तेरसने दहाडे । दस हजार साधु संघाते अष्टापद पर्वत उपरे स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या॥१॥ पहेला श्री आदीनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि । पचास लाख कोडि सागरने आंतरे ॥ बीजा अजितनाथ तिर्थंकर थया । अयोध्या नगरीने विषे । जीत सत्रुराजा पिता ॥ विजयादेवी राणी माता ॥ हेमवर्णे ॥ गज कहेतां हस्तिनुं लंछन ॥ साडाचारसें. धनुषनुं देहमान ॥ बहोतेर लाख पूर्वनुं आउखुं ॥ तेमां अढार लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या । त्रेपन लाख पूर्वनुं राज पाल्युं । एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी बार वरसे केवल-ज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्षने विषे पहोंता ॥ २ ॥ हवे बीजा अजितनाथ तिर्थंकर मोक्ष पहोंता पछि ॥ त्रीस लाख कोडि सागरने आंतरे । त्रीजा संभव-

मोक्षने विषे पोहोंता ॥४॥ हवे चोथा अभीनंदन तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछि ॥ नव लाख कोडि सागरने आंतरे । पांचमा सुमत्तिनाथ तिर्थंकर थया कुसलपुरी नगरीने विषे । मेघरथ राजा पिता । सुमंगला देवी राणी माता । हेमवर्णे । क्रोंच पंखीनुं लंछन । त्रणसें धनुषनुं देहमान । चालीस लाख पूर्वनुं आयुष । तेमां दश लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या ॥ ओगणत्रीस लाख पूर्वनुं राज पाल्युं । एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि । वीस वर्षे केवल ज्ञान उपनुं । साधुसाधवी । श्रावक श्रावीकारूप ॥ चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादशांगी गणीनि पेटि आपिने एक हजार साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ५ ॥ पांचमा सुमतिनाथ तिर्थंकर निरवाण मोक्ष पोहोंता पछि । नेवुं हजार कोडि सागरने आंतरे । छठा पद्म प्रभ तिर्थंकर थया । कोसंबी नगरीने वीषे । धर राजा पिता ॥ सुसिमा देवी राणी माता । राते वर्णे । पद्म कमलनुं लंछन । अढीसो धनुषनुं देहमान । त्रीश लाख पूर्वनुं आयुष ॥ साडासात लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या । साडीएकविस लाख पूर्वनुं राज पाल्युं ॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछी । छठे महीने केवल ज्ञान उपनुं । साधु साधवी ।

पछि छठे महिने केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापी
ने। द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने। एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या
॥८॥ हवे आठमा श्री चंद्रप्रभ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि। नेवुं क्रोडि सागरने
आंतरे॥ नवमां श्री सुविधीनाथ तिर्थंकर थया। काकंदी नगरीनें विषे॥ सुग्रीव राजा
पिता। रामादेवि राणी माता। उज्वल वर्णं। मघर मछनुं लंछन॥ सो धनुष्यनुं देहमान॥ बे
लाख पूर्वनुं आउखुं तेमां अर्ध लाख पूर्व कुंवरपणें रह्या। अर्ध लाख पूर्वनुं राज पाल्युं॥
एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधा पछि। चार महीने केवल ज्ञान उपनुं॥ साधु
साधवी श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने॥ द्वादशांगी गणीनी। पेटी
आपीने एक हजार साधु संगाते। स्वामी निर्वाण मोक्षने विषे पधार्या॥ ९॥ हवे नवमा
सुविधीनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि॥ नव क्रोडिसागरने आंतरे॥ दशमा श्री
सितलनाथ तिर्थंकर थया। भद्दलपुर नगरीने विषे द्रढरथ राजा पिता। नंदा देवी राणी
माता॥ हेम वर्णं॥ श्रीवछ साथीयानुं लंछन॥ नेवुं धनुष्यनुं देहमान। एक लाख पूर्वनुं

न थाशे ॥ १९ ॥ विद्याधरनी विद्याना प्रभाव थोमा थाशे ॥ २० ॥ गो रस दुध दहिमां सरसाइ न थाशे ॥ १९ ॥ विद्याधरनी विद्याना प्रभाव थोमा थाशे ॥ २० ॥ गो रस दुध दहिमां सरसाइ

थोमी हरशे ॥ २१ ॥ बलद प्रमुखनां बल आउखा थोमां थाशे ॥ २२ ॥ साधु साध्विने मास कल्प तथा चोमासां कर्यां जेवां खेत्र थोमां थाशे ॥ २३ ॥ श्रावकनि ११ पमिमा ॥ साधुनी १२ पमिमा विछेद जाशे ॥ २४ ॥ गुरु शिष्यने भणावशे नहि ॥ २५ ॥ शिष्य अविनित कलहकारी थाशे ॥ २६ ॥ अधर्मकारि ऊगमाकारी कुमाणस घणा थाशे ॥ सुमाणस थोमा थाशे ॥ २७ ॥ आचार्य आप आपणा गछनी परंपरा सामाचारि जूदि जूदि प्रवर्तावसे । तथा मूढ मूर्ख जनने मोहने मिथ्यात्व पासमां पामशे ॥ उत् सूत्र भाखशे आप आपणी प्रसंसामां राचसे निंदक कुबुद्धि होशे ॥ २८ ॥ सरल भद्रिक न्याइ प्रमाणिक माणस थोमा थाशे ॥ २९ ॥ म्लेछनां राज घणा थाशे ॥ ३० ॥ हिंदु राजा अल्प रुधिया थोमा थाशे ॥ ३१ ॥ मोटा कुलना राजा थाशे ते निच काम करशे । अन्याय अधर्म कुविसनमां घणा राचसे ॥ ३२ ए ॥ ३२ ॥ लक्षण जाणवां । ए आराने विषे धातु सर्वे विछेद जाशे । लोढानी धातु रहेशे चामडानी मोहरों चालशे । जेने घेर सयाशेर कांसु रहेशे ते धनवंत कहेवाशे

पिता। जया देवी राणी माता। राते वर्णे। भैंसानुं लंछन। सितेर धनुष्यनुं। देहमान बोहोतेर
लाख वर्षनुं आयुष ॥ तेमां अढार लाख वरस कुंवरपणे रह्या। चोपन लाख वरसनी
प्रज्र्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछि एक मासे केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक श्रावी-
का रूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने। छसें साधु संघाते स्वा-
मी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १२ ॥ हवे बारमा वासुपुज्य तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि
त्रीस सागरने आंतरे ॥ तेरमा श्री वीमलनाथ तिर्थंकर थया। कंपीलपूर नगरने विषे ॥ कृ-
तवर्म राजा पिता ॥ सामा देवि राणी माता ॥ हेम वर्णे॥ वराह के० सुवरनुं लंछन॥ साठ धनुष्यनुं
देहमाना ॥ ६० लाख वर्षनु आउखुं पनर लाख वरस कुंवरपणें रह्या ॥ त्रीस लाख वरसनुं
राज्य पाल्युं ॥ १५ ॥ लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ बे महीने
केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप। चतुर्विध संघतिर्थ थापीने। द्वा-
दसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ ६०० साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पोहोंता ॥ १३ ॥
हवे तेरमां विमलनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी ए सागरने आंतरे ॥ चौदमां अनंत-

स्वामी नीर्वाण मोक्षने विषे पधार्या ॥ १५ ॥ हवे पन्नरमां धर्मनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछी ॥ त्रण सागर तेमां पोणा पल्यने उणे आंतरे ॥ सोलमा श्री शांतिनाथ तिर्थंकर थया ॥ हस्तीनापूर नगरने विषे ॥ विश्वसेन राजा पीता ॥अचिरा देवी राणी माता ॥ हेम वर्ण ॥ मृगनुं लंछन ॥ चालीस धनुष्यनुं देहमान । एक लाख वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां पा लाख वर्ष कुंवरपणे रह्या ॥ पा लाख वरसनुं राज पाळ्युं ॥ पा लाख वर्षनि चक्रवर्तीनि पदवी भोगवी ॥ पा लाख वरसनी प्रव्रज्यां पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी ॥ एक महीने केवल ज्ञान उपनुं । साधु साधवी श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ नवसें साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्षने विषे पधार्या ॥ १६ ॥ हवे सोलमां शांतिनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछी ॥ अर्द्ध पल्यने आंतरे ॥ सतरमां श्री कुंथुनाथ तिर्थंकर थया ॥ गजपुर नगरीने वीषे ॥ सुर राजा पीता ॥ सुरा देवी राणी माता ॥ हेम वर्ण ॥ छगल कहेता बोकडानुं लंछन ॥ पांत्रीस धनुषनुं देहमान ॥ पंचाणुं हजार वरसनुं आउखुं ॥ तेमां पोणी चोवीस हजार वरस कुंवरपणे रह्या ॥ पोणी चोवीस हजार वरसनुं राज

वरसने आंतरे ॥ १९ मां मल्लीनाथ तिर्थंकर थया ॥ मिथिला नगरीने विषे ॥ कुंभ राजा पिता ॥ प्रभावति राणी माता ॥ निल वर्णे ॥ कलसानुं लंछन ॥ पचविस धनुषनुं देहमान ॥ पंचावन हजार वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां सो वरस तो कुंवरी पणे रह्या ॥ बाकी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधापछि त्रीजे पोहोरे केवलज्ञान उपन्युं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारुप चतुर्विध संघतिर्थ स्थापिने द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ पांचसें साधु ॥ अने पांचसें साधवी संघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १९ ॥ हवे उगणीसमां मल्लिनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी ॥ ५४ चोपन लाख वरसने आंतरे ॥ २० मां मुनिसुव्रत तिर्थंकर थया ॥ राजग्रही नगरीने विषे ॥ सुमित्र राजा पीता ॥ पद्मावति राणी माता ॥ साम वर्णे ॥ काछवानुं लंछन ॥ विस धनुषनुं देहमान ॥ त्रीस हजार वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां साडासात हजार वरस कुंवर पणे रह्या ॥ पनर हजार वर्षनुं राज पाल्युं । साडासात हजार वर्षनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछी ॥ इग्यार महीने केवलज्ञान उपन्युं । साधु साधवी । श्रावक श्राविकारुप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधु संघाते ॥ स्वामी निर्वाण

वाउ ए च्यारनो ॥ जघन्य ने उत्कृष्टो अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ अने वनस्पतिनो

तरे ॥ २३ मा पार्श्वनाथ तिर्थंकर थया ॥ वणारसी नगरीने विषे ॥ अश्वसेन राजा पिता ॥ वामादेवी राणी माता ॥ निल वर्णे ॥ सर्पनुं लंछन ॥ नव हाथनुं देहमान ॥ सो वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां ३० वर्ष कुंवरपणे रह्या सिंतेर वर्षनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछि चोरासी दहाडे केवलज्ञान उपन्युं ॥ साधु० एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ २३ ॥ हवे त्रेवीसमां श्रीपार्श्वनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी ॥ अढिसें वर्षने आंतरे ॥ चोवीसमा श्रीमहावीर तिर्थंकर थया ॥ क्षत्रीकुंडग्राम नगरने विषे ॥ सिद्धार्थ राजा पिता ॥ त्रिसलादेवी राणी माता ॥ हेम वर्णे ॥ सिंहनुं लंछन ॥ सात हाथनुं देहमान ॥ बोहोतेर वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां ॥ ३० वर्ष कुंवरपणे रह्या ॥ ४२ बेतालिस वर्षनी प्रवर्जा पाली ॥ प्रवर्जा लिधा पछी ॥ साडाबार वर्ष ने पन्नर दहाडे केवलज्ञान उपन्युं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापिने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ कारतक वद अमावास्यानी रात्रे लोकिक पक्षे आसो वद अमावास्यानी रात्रे पावापुरी नगरीने विषे । चोथा आराना त्रण वर्ष ने साडाआठ महीना बाकी रह्या ॥ त्यारे

वाउ ए च्यारेनी ॥ जघन्य ने उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो नाग ॥ अने वनस्पतिनी

गुण ढांक्यो ठे ॥ २ ॥ वेदनीय कर्मे अनंत अव्याबाध आत्मिक सुख रोक्युं ठे ॥ ३ ॥ मोहनीय कर्मे क्षायक समकित गुण रोक्यो ठे ॥ ४ ॥ आयुष कर्मे अक्षय स्थिति गुण रोक्यो ठे ॥ ५ ॥ नाम कर्मे अमूर्ति गुण रोक्यो ठे ॥ ६ ॥ गात्र कर्मे अगुरु लघु गुण रोक्यो ठे ॥ ७ ॥ अंतराय कर्मे अनंत आत्मिकशक्ति गुण रोक्यो ठे ॥ ८ ॥ ज्ञानावरणीय कर्म ते ६ प्रकारे वांधे ॥ पहेले वोले नाणपम्णिणीयाए ते ज्ञानीना वांका बोले ॥ १ ॥ विजे वोले नाणनिन्हवणयाए ते ज्ञानिनो उपकार उलवे ॥ २ ॥ त्रिजे बोले नाणआसायणाए ते ज्ञानिनि आशातना करे ॥ ३ ॥ चोथे वोले नाणअंतराएण ते ज्ञाननि अंतराय पमावे ॥४॥ पांचमे वोले नाणपउसेणं ते ज्ञानि उपर द्वेष करे ॥ ५ ॥ ठठे बोले नाणाविसंवायणा जोगेणं ते ज्ञानि साथे खोटा ऊगमा विखवाद करे ॥ ६ ॥ ए ठ प्रकारे वांधे ते ॥ पांच तथा १० प्रकारे जोगवे ॥ ते पांच किया ते कहे ठे । मति ज्ञानावरणीय ॥ १ ॥ श्रुत ज्ञानावरणीय ॥ २ ॥ अवधि ज्ञाना वरणीय ॥ ३ ॥ मनपर्यव ज्ञानावरणीय ॥ ४ ॥ केवल ज्ञानावरणीय ॥५॥ ए ५ ज्ञान प्रगट थावा थे नहि ॥ तथा १० प्रकारे जोगवे ते कहे ठे ॥ सोया वरणे ॥१॥ सोय वि-

सुक्ष्म ॥१॥ प्रत्येक ॥ २ ॥ ने । साधारण ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ना । अप्रजाप्ता ने ॥ ३ ॥ ना । प्रजाप्ता ॥ ए ॥६॥ एवं ॥२२॥ एकेंद्रियना ॥ त्रण विकलेंद्रिय ॥ वे इंद्रिय ॥ १ ॥ ते इंद्रिय ॥२॥ चउरिंद्रिय ॥३॥ ए ॥३॥ ना अप्रजाप्ता ने ॥३॥ ना । प्रजाप्ता । ए ॥ ६ ॥ एवं ॥२७॥ जलचर ॥१॥ थलचर ॥ २ ॥ उरपर ॥ ३ ॥ नुजपर ॥ ४ ॥ खेचर ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ समु-र्छिम ने ॥५॥ गर्न्नज ॥ एवं ॥१०॥ ना । अप्रजाप्ता ने ॥ १० ॥ ना । प्रजाप्ता ॥ ए ॥ २० ॥ एवं ॥४७॥ नेद तिर्यंचना कह्या । हवे ॥१४॥ नेद नारकिना कहेछे ॥ सात नरकना नाम॥ घमा ॥१॥ वंशा ॥२॥ शिला ॥३॥ अंजणा ॥४॥ रिठा ॥५॥ मघा ॥६॥ माघवइ ॥७॥ हवे ए ॥ ७ ॥ ना गोत्र कहेछे रत्नप्रना ॥ १ ॥ शर्करप्रना ॥ २ ॥ वालुप्रना ॥ ३ ॥ पंकप्रना ॥ ४ ॥ धुमप्रना ॥ ५ ॥ तमप्रना ॥ ६ ॥ तमतमाप्रना ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ ना अप्रजाप्ता ।

॥७॥ ना प्रजाप्ता । एवं ॥१४॥ नेद नारकिना कह्या ॥ एवं । सर्व मिलीने ॥५६३॥ नेद **जाणवा** ॥ इति जीवतत्त्व समाप्तं ॥१॥ हवे अजीवतत्त्वना ॥ १४ ॥ नेद कहेछे ॥

स्कंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अधर्मास्तिकायनो ॥ स्कंध ॥४॥

घात करे देश वृतीनी ॥८॥ पचखाणावरणीय क्रोध ते वेलुनि लिटि समान॥१॥ पचखाणावरणीय मान ते लाकडाना स्तंभ समान ॥२॥ पचखाणावरणीय माया ते गोमुत्रिका समान ॥ ३ ॥ पचखाणा वरणीय लोभ ते गाडाना खंजन समान ॥४॥ ए चारे गति करे मनुष्यनि ॥ स्थिति करे च्यार मासनि । घात करे सर्व वृतीनि ॥१२॥ संज्वलनो क्रोध ते पाणिनि लिटि समान ॥१॥ संज्वलनो मानते नेत्रना स्तंभ समान ॥२॥ संज्वलनी माया ते वांसनि छोइ समान ॥३॥ संज्वलनो लोभ ते । पतंग तथा हलिद्रना रंग समान ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ गति करे देवतानि । स्थिति करे पनर दिननि । घात करे केवल ज्ञाननि ॥१६॥ ए १६ कषाय । हवे ॥ ए नो कषाय कहेछे । हास्य ॥ १७ ॥ रति ॥ १८ ॥ अरति ॥ १९ ॥ भय ॥ २० ॥ शोग ॥ २१ ॥ दुगंछा ॥ २२ ॥ स्त्री वेद ॥ २३ ॥ पुरुष वेद ॥ २४ ॥ नपुंसक वेद ॥ २५ ॥ ए चारित्र मोहनीयनी २५ प्रकृति ॥ हवे दंसण मोहनीयनि ॥ ३ प्रकृति कहे छे । समकित मोहनीय १ ॥ मिथ्यात्व मोहनीय २॥ समामिथ्यात्व मोहनीय ३ ॥ ए ३ दर्शन मोहनीयनि । एवं सर्व मलि ॥ २८ प्रकृति । हवे एहनि स्थिति जघ० अंतर्मुहुर्त्तनी । उत्० ॥ ७० कोडाकोडि सागरोपमनी । अबाधा काल

ते ॥ १४ प्रकारे जोगवे। इठा सद्दा १ इठा रुवा २ इठा गंधा ३ इठा रसा ४ इठा फासा ॥५॥ इठा गइ ॥ ६ ॥ इठा ठीइ ॥७॥ इठा लावणे ॥८॥ इठा जसोकित्ती ॥९॥ इठा उठाण कम्मबलवीरियपुरिसाकारपरक्कमे ॥१०॥ इठ सरया ॥११॥ कंत सरया ॥ १२ ॥ पियसरया ॥ १३॥ मणुणा सरया ॥१४॥ ए ॥ १४ प्रकारे जोगवे ॥ अशुन्न नाम कर्म ॥ ४ प्रकारे बांधे॥ कायअणुजुयाए ॥१॥ जासाणुजुयाए ॥ २ ॥ जावाणुजुयाए ॥३ ॥ विसंवायणा जोगेणं ॥ ४ ॥ ते ॥ १४ प्रकार जोगवे । अणिठा सद्दा ॥ १ ॥ अणिठा रुवा ॥ २ ॥ अणिठा गंधा ॥ ३ ॥ अणिठा रसा ॥ ४ ॥ अणिठा फासा ॥ ५ ॥ अणिठा गइ ॥ ६ ॥ अणिठा ठिइ ॥ ७ ॥ अणिठे लावणे ॥ ८ ॥ अणिठा जसोकित्ति ॥९॥ अणिठा उठाण कम्मबलवीरिय पुरिसाकारपरक्कमे ॥१०॥ हिण सरया ॥११॥ दिण सरया ॥१२॥ अणिठ सरया ॥१३॥ अकंत सरया ॥ १४॥ए॥ १४ प्रकारे जोगवे ॥ हवे नाम कर्मनि ॥९३ प्रकृति कहे छे ॥ नरक गति ॥ १ ॥ तिर्यंच गति ॥२॥ मनुष्य गति ॥३॥ देव गति ॥४॥ एकेंड्रिय जाति ॥५॥ बेइंड्रिय जाति ॥६॥ तेइंड्रिय जाति ॥७॥ चउरिंड्रिय जाति ॥८॥ पंचेंड्रिय जाति ॥९॥ उदारिक सरिर ॥१०॥

स्पर्स ॥५८॥ लुखो स्पर्स ॥ ५९ ॥ नरकानुं पूर्वी ॥ ६० ॥ तिर्यंचानुं पूर्वी ॥ ६१ ॥ मनुष्यानुं पूर्वी ॥६२॥ देवतानुं पूर्वी ॥६३॥ शुभ विहाय गति ॥६४॥ अशुभ विहाय गति ॥६५॥ ए ॥ ६५ पिंम प्रकृति थइ । पराघात नाम ॥६६॥ उस्वास नाम ॥६७॥ अगुरु लघु नाम ॥६८॥ आताप नाम ॥६९॥ उद्योत नाम ॥७०॥ उपघात नाम ॥७१॥ तिर्थंकर नाम ॥७२॥ निर्माण नाम ॥७३॥ त्रश नाम ॥७४॥ वादर नाम ॥७५॥ प्रत्येक नाम ॥७६॥ पर्याप्त नाम ॥ ७७ ॥ स्थिर नाम ॥७८॥ शुभ नाम ॥७९॥ सौभाग्य नाम ॥८०॥ सुस्वर नाम ॥८१॥ आदेय नाम ॥८२॥ जशो कीर्ति नाम ॥८३॥ स्थावर नाम ॥८४॥ सुक्ष्म नाम ॥ ८५ ॥ साधारण नाम ॥ ८६ ॥ अप्रजाप्त नाम ॥८७॥ अस्थिर नाम ॥८८ ॥ अशुभ नाम ॥ ८९ ॥ दौर्भाग्य नाम ॥ ९० ॥ दुःस्वर नाम ॥९१॥ अनादेय नाम ॥९२॥ अजशो कीर्ति नाम ॥९३॥ ए ॥ ९३ प्रकृति थइ ॥ तेहमां ॥ १० बंधन नि अधिक भेलवतां ॥ १०३ प्रकृति पण ग्रंथवाळा कहे छे अथवा नाम कर्म नि ॥ ४२ पण खरि । गति ॥ १ ॥ जाति ॥ २ ॥ शरीर ॥ ३ ॥ अंगोपांग ॥४॥ बंधन ॥ ५ ॥ संघातन ॥ ६ ॥ वर्ण ॥ ७ ॥ गंध ॥ ८ ॥ रस ॥ ९ ॥ स्पर्स ॥ १० ॥ संघयण ॥ ११ ॥ संठा-

इस्सारय मयणं ॥८॥ ए ८ मद करवे करि निच गोत्र बांधे । ते ॥ ८ प्रकारे जोगवे ॥ जाइ विहिणया ॥ १ ॥ कुलविहिणया ॥ २ ॥ वलविहिणया ॥ ३ ॥ रुपविहिणया ॥४॥ तपविहिणया ॥५॥ सूयविहिणया ॥ ६ ॥ लाजविहिणया ॥ ७ ॥ इस्सरिय विहिणया ॥ ए ॥ ८ ॥ गोत्र कर्मनि स्थिति । जघ० ॥ ८ मुहुर्त्तनि ॥ उत्० । विश कोमाकोमि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल करे तो बे हजार वर्षनो ॥ ७ ॥ हवे ८ मुं । अंतराय कर्म । पांच प्रकारे बांधे ॥ दानांतराय ॥ १ ॥ लाजांतराय ॥ २ ॥ जोगांतराय ॥ ३ ॥ उवजोगांतराय ॥ ४ ॥ वीर्यांतराय ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ अंतराय पामवे करि अंतराय कर्म बांधे । ते पांच प्रकारे जोगवे ॥ दानांतराय ॥ १ ॥ लाजांतराय ॥ २ ॥ जोगांतराय ॥ ३ ॥ उवजोगांतराय ॥ ४ ॥ वीर्यांतराय ॥ ५ ॥ ए ५ ॥ पामे नहिं । ए अंतराय कर्मनि स्थिति ॥ जघन्य । अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० । त्रिश कोमाकोमि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल करे तो ॥ ३ हजार वर्षनो ॥८॥ बांध्यानि ॥ ८५ प्रकृति ॥ ज्ञानावरणीयनि ॥ ६ ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ६ ॥ वेदनीयनि ॥ ४२ ॥ मोहनीयनि ॥ ६ ॥ आयुपनि ॥ १६ ॥ नामनि ॥ ८ ॥ गोत्रनि ॥ १६ ॥ अंतरायनि ॥ ५ ॥ एवं

तेहमां सातावेदनीय दश प्रकारे बांधे ते कहे छे ॥ पाणाणु कंपयाए ॥ १ ॥ त्रुयाणु कंपयाए ॥२॥ जीवाणु कंपयाए ॥ ३ ॥ सत्ताणु कंपयाए ॥ ४ ॥ बहुणं पाणाणं त्रुयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुख-णयाए ॥ ५ ॥ असोयणयाए ॥६॥ अजुरणयाए ॥७॥ अतिप्पणयाए ॥८॥ अपिटणयाए ॥९॥ अपरियावणयाए ॥ १० ॥ ए १० ॥ प्रकारे बांधे ते ८ प्रकारे जोगवे । मणुणा सद्दा ॥१॥ मणुणा रुवा ॥२॥ मणुणा गंधा ॥३॥ मणुणा रसा ॥ ४ ॥ मणुणा फासा ॥५॥ मणसुहया ॥६॥ वयसुहया ॥७॥ कायसुहया ॥८॥ ए ८ प्रकारे जोगवे । हवे एहनी स्थिति । जघ० ॥ २ समयनि उत्० ॥ १५ कोमाकोम सागरोपमनि । अबाधा काल करे तो । जघ० अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० दोढ हजार वरसनी स्थिति । हवे असाता वेदनीय ॥ १२ प्रकारे बांधे ते कहे छे । परदुखणयाए ॥ १ ॥ परसोयणयाए ॥ २ ॥ परजुरणयाए ॥ ३ ॥ परतिप्पणयाए ॥ ४ ॥ परपिटणयाए ॥ ५ ॥ पर परियावणयाए ॥ ६ ॥ बहुणं पाणाणं त्रुयाणं जीवाणं सत्ताणं दुखणयाए ॥ ७ ॥ सोयणयाए ॥ ८ ॥ जुरणयाए ॥ ९ ॥ तिप्पणयाए ॥ १० ॥ पिटणयाए ॥ ११ ॥ परियावणयाए ॥ ए ॥ १२ प्रकारे बांधे ते ॥ ८ प्रकारे जोगवे । अमणुणा सद्दा ॥ १ ॥ अमणुणा रुवा ॥ २ ॥ अमणुणा

॥ अथ श्री धर्म ध्यान ॥

उववाई सूत्रपाठ—सेकिंतं ॥ धम्मेझाणे २ ॥ चउविहेचउपडयारेपन्नते ॥ तंजहा ॥ आणाविजए ॥१॥ अवायविजए ॥२॥ विवागविजए ॥३॥ संठाणविजए ॥४॥ धम्मस्सणंझाणस्स चत्तारिल-क्खणा पन्नत्ता ॥ तंजहा ॥ आणारुइ ॥१॥ निसग्गरुइ ॥२॥ सूतरुइ ॥३॥ उवएसरुइ ॥४॥ धम्म-स्सणंझाणस्स ॥ चत्तारि आलंबणापन्नता ॥ तंजहा ॥ वायणा ॥१॥ पुछणा ॥२॥ परियट्टणा ॥ ॥३॥ धम्म कहा ॥४॥ धम्मस्सणंझाणस्स ॥ चत्तारिअणुप्पेहा पन्नता ॥ तंजहा ॥ एगत्ताणुप्पेहा ॥ १ ॥ अणिच्चाणुप्पेहा ॥ २ ॥ असरणाणुप्पेहा ॥ ३ ॥ संसाराणुप्पेहा ॥ ४ ॥ ए सूत्र पाठ कह्यो ॥ हवे सूत्रनो अर्थ कहे छे ॥ धर्म ध्याननां चार भेद ॥ ते मांहि पहेला भेदनो अर्थ कहे छे ॥ आणा विजाए कहेता वीतरागनी आज्ञानो विचार चींतववो ॥ ते । वीतरागनी आज्ञा जे समकित सहित बार व्रत ॥ श्रावकनी इग्यार पडिमा ॥ पंच महाव्रत । भीखुनीबार पडिमा शुभ ध्यान ॥ शुभ योग ॥ ज्ञान दर्शण चारित्र तप ॥ छकायनी रक्षा ॥ ए ॥ वीतरागनी आज्ञा

॥ अथ श्री धर्म ध्यान ॥

उववाईसूत्रपाठ–सेकिंतं ॥ धम्मेझाणे २ ॥ चउविहेचउपमयारेपन्नते ॥ तंजहा ॥ आणाविज्ञए ॥१॥ अवायविजए ॥२॥ विवागविजए ॥३॥ संठाणविजए ॥४॥ धम्मस्सणंझाणस्स चत्तारिलक्खणा पन्नत्ता ॥ तंजहा ॥ आणारुइ ॥१॥ निसग्गरुइ ॥२॥ सूतरुइ ॥३॥ उवएसरुइ ॥४॥ धम्मस्सणंझाणस्स ॥ चत्तारि आलंबणापन्नता ॥ तंजहा ॥ वायणा ॥१॥ पुछणा ॥२॥ परियट्टणा ॥ ॥३॥ धम्म कहा ॥४॥ धम्मस्सणंझाणस्स ॥ चत्तारिअणुप्पेहा पन्नता ॥ तंजहा ॥ एगत्ताणुप्पेहा ॥ १ ॥ अणिच्चाणुप्पेहा ॥ २ ॥ असरणाणुप्पेहा ॥ ३ ॥ संसाराणुप्पेहा ॥ ४ ॥ ए सूत्र पाठ कह्यो ॥ हवे सूत्रनो अर्थ कहे छे ॥ धर्म ध्याननां चार भेद ॥ ते मांहि पहेला भेदनो अर्थ कहे छे ॥ आणा विज्ञए कहेता वीतरागनी आज्ञानो विचार चींतववो ॥ ते । वीतरागनी आज्ञा जे समकित सहित बार व्रत ॥ श्रावकनी इग्यार पडिमा ॥ पंच महाव्रत । भीखुनीबार पडिमा शुभ ध्यान ॥ शुद्ध योग ॥ ज्ञान दर्सण चारित्र तप ॥ छकायनी रक्षा ॥ ए ॥ वीतरागनी आज्ञा

चिंतवीए॥ तेनुं ए स्वरुप ॥ ए लोक सुपइठकने आकार छे॥ जीव अजीवे संपूर्ण जर्यो छे ॥ असंख्यात जोजननी कोमाकोमि प्रमाणे त्रीछो लोक छे॥ तिहां असंख्याता द्वीप समुद्र छे ॥ तथा असंख्याता वाणव्यंतरना नगर छे ॥ तथा असंख्याता ज्योतिषीना विमान छे॥ तथा असंख्याती ज्योतिषीनी राजधानी छे। तीहां अढी द्वीप मांहि तिर्थंकर जघन्य २०॥ उत्कृष्टा एकसो सितेर होय ॥ तथा केवळी जघन्य बे कोमि ॥ उत्कृष्टा नव कोमि तथा साधु जघन्य वे हजार कोमि ॥ उत्कृष्टा नव हजार कोमि ॥ तेहने वंदामि ॥ नमंसामि ॥ सक्कारेमि ॥ समाणेमि ॥ कल्लाणं ॥ मंगलं ॥ देवयं ॥ चेइयं ॥ पजुवासामि ॥ तथा त्रिछा लोकमांहि ॥ असंख्याता श्रावक श्राविका छे ॥ तेहना गुणग्राम करिये ॥ ते त्रिछा लोक थकी असंख्यात गुणो अधिको उर्द्ध लोक छे ॥ तिहां बार देव लोक ॥ नव ग्रैवेयक पांच अनुत्तर विमान सर्व थइने ॥ चोरासी लाख सत्ताणु हजार त्रेवीस विमान छे ॥ तथा ते उपर सिद्ध सिला छे ॥ तिहां सिद्ध जगवंत विराजे छे ॥ तेहने वंदामि ॥ जाव पजुवासामि ॥ ते उर्द्ध लोकथी कांइक विशेषे अधिक अधो लोक छे ॥ तिहां चोरासी लाख नरकावासा छे ॥ सात कोमि व्होंतेर लाख जवन-

सूत्र ॥ तथा उववाइ प्रमुख उत्कालिक सूत्र सांभलवा तथा भणवानी रुचि उपजे ॥ तेहने सूत्र रुचि कहिए ॥ ए धर्म ध्याननुं त्रिजुं लक्षण कह्युं ॥ ३ ॥ हवे धर्म ध्याननुं चोथुं लक्षण कहे छे उवएसरुइ ॥ उवएसरुई कहेतां अज्ञाने करी उपार्ज्यां कर्म ॥ ते ज्ञाने करी खपावीए ॥ ज्ञाने करी नवा कर्म न बांधीए । मिथ्याते करी उपार्ज्यां कर्म ते समकिते करी खपावीए ॥ समकिते करी नवा कर्म न बांधीए ॥१॥ अव्रते करी उपार्ज्यां कर्म ते व्रते करी खपावीए ॥ व्रते करी नवा कर्म न बांधीए ॥२॥ प्रमादे करी उपार्ज्यां कर्म ते अप्रमादे करी खपावीए ॥ अप्रमादे करी नवा कर्म न बांधीए ॥४॥ कषाये करी उपार्ज्यां कर्म ते कषायने अणकरवे करीने खपावीए । कषायने अणकरवे करीने नवा कर्म न बांधीए ॥५॥ असुभ योगे करी उपार्ज्यां कर्म ते सुभ योगे करी खपावीए ॥ शुभ योगे करी नवा कर्म न बांधीए ॥६॥ पांच इंद्रीयना स्वादरुप आश्रवे करी उपार्ज्यां कर्म ते तपरूप संवरे करी खपावीए ॥ तपरुप संवरे करी नवा कर्म न बांधीए ॥ माटे अज्ञानादिक आश्रव मार्ग छांडीने ज्ञानादिक संवर मार्ग आदरवो ॥ एहवो तीर्थंकरनो उपदेश सांभलवानी रुचि उपजे ॥ तेहने उपदेश रुचि कहीए ॥ तथा उगाढ रुचि पण कहीए ॥ ए धर्म ध्याननुं चोथुं लक्षण

तेहवा लहीने ग्रहीने विशेषे निश्चय करीने शंका कंखा वितिगिछा रहित पणे पोतानी निर्ज-
राने अर्थे परना उपगारने अर्थे सना मध्ये ते नाव तेहवा परुपीए तेहने धर्मकथा कहीए ॥
एहवी धर्मकथा कहेता थकां अने सांजलीने सरदहता थकां॥ते वंने वीतरागनी आज्ञाना आरा-
धक होय ॥ ते धर्मकथा संवररूपीउ वृक्ष सेवीए ॥ जेम मनवंछित सुखपामीए॥ ते संवररूपीउ
वृक्ष वखाणीए छइए ॥ ते संवररूपीउ वृक्ष केहवो छे ॥ विशुद्ध समकितरुप मूल छे जेहनुं ॥१॥
धीर्यरूप कंद छे जेहनो ॥२॥ विनयरुप वेदिका छे जेहनी ॥३॥ तीर्थंकर तथा चार तीर्थना गुण
कीर्तन रुप खंध छे जेहनो ॥४॥ पांच महाव्रतरुप मोटी शाखा छे जेहनी ॥५॥ पचीस नावनारुप
त्वचा छे जेहनी ॥६॥ शुन ध्यानने शुन योगरूप प्रधान पल्लव पत्र छे जेहनां ॥ ७ ॥ गुणरुप
फूल छे जेहनां ॥ ८ ॥ सीयलरुप सुगंध वासना छे जेहनी ॥ ए ॥ आश्रवरहीत फल छे जेहनां
॥१०॥ मोक्षरूप प्रधान बीज छे जेहनुं ॥११॥ मेरु गिरिना शिखर उपरे जेम चूलिका बिराजेछे
तेम समकितीना हृदयमां संवररुपिउ वृक्ष वीराजे छे ॥ १२ ॥ एहवा संवररुप वृक्षनी शीतल
छांया जेहनें परिणमे तेहना नवोनवना पाप टले ॥ ने ते परम अतुल सुख पामे इत्यादिक ॥४॥

कालथकि अनादिअनंत ॥१८॥ भावथकि । अवर्णे । अगंधे । अरसे । अफासे । अमूर्त्ति॥१९॥
गुणथकि वर्त्तनालक्षण ॥ २० ॥ एवं ॥ २० ॥ ने ॥ १० ॥ पूर्वे कह्या ते ॥ एवं ॥ ३० ॥ भेद
अरूपि अजीवना जाणवा ॥ हवे ॥५३०॥ भेदरूपि अजीवना कहेछे तेहमां । वर्ण ॥ ५ ॥
कालो ॥ १ ॥ निलो ॥ २ ॥ रातो ॥ ३ ॥ पिलो ॥ ४ ॥ धोलो ॥ ५ ॥ एकेका वर्णमाहि वीश
वीश भेद लाभे ॥ ते ॥२॥ गंध ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श ॥ एवं । विश पंचा
सो ॥ हवे ॥२॥ गंध ते । सुरभिगंध ॥ १ ॥ दुरभिगंध ॥ २ ॥ एकेका गंधमांहि त्रेविश त्रे-
विश भेद लाभे ॥५॥ वर्ण ॥५॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श । एवं ॥ २३ दुछेतालिश
भेद जाणवा ॥ हवे ॥५॥ रस ते ॥ तिखो ॥ १ ॥ कडुवो ॥ २ ॥ कसायलो ॥ ३ ॥ खाटो
॥ ४ ॥ मिठो ॥ ५ ॥ एकेका रसमां वीश वीश भेद लाभे ॥ ५॥ वर्ण ॥ २ ॥ गंध ॥ ५ ॥
संठाण ॥८॥ स्पर्श । एवं । वीश पंचा सो ॥ हवे ॥५॥ संठाण ॥ परिमंडल संठाण ॥ १ ॥
वटसंठाण ॥ २ ॥ त्रंश संठाण ॥३॥ चउरस संठाण ॥ ४ ॥ आयतसंठाण ॥ ५ ॥ एकेका
संठाणमां वीश वीश भेद लाभे ॥५॥ वर्ण ॥२॥ गंध ॥५॥ रस ॥८॥ स्पर्श । एवं । वीश पंचा

पणे स्त्री पुरुषनो अवतार पूरो न थयो ॥ वली तीर्यंच जीय जलचरादि ५ मध्ये स्त्री वेदे पुरुष वेदे प्रवर्त्यों ॥ वली ते जीव सात नरक ॥ पांच एकेंद्रीय ॥ त्रण विकलेंद्रीय तथा असंज्ञी तिर्यंच मनुष्य मध्ये नियमा नपुंसक वेद होय अने संज्ञी तिर्यंच मनुष्य मध्ये पण नपुंसक होय ते सर्वे नपुंसक वेदे जीव प्रवर्त्यों ॥ परमार्थे लागठ स्त्री वेदे प्रवर्त्यों ते उत्कृष्टा एकसो दस पल्य अने पृथक पूर्व कोड सुधी स्त्री वेदे खेल्यो ॥ जघन्य आउखा जोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त ॥ पुरुष वेदे उत्कृष्टो पृथक् सो सागर झाझेरा सुधी पुरुष वेद मध्ये खेल्यो ॥ जघन्य आउखा जोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त ॥ नपुंसक वेदे उत्कृष्टो अनंता कालचक्र ॥ असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन सुधी नपुंसक वेदे खेल्यो ॥ जघन्य आउखा जोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त ॥ जिहां गयो तिहां एकलो पुद्गलने संयोगे अनेक रुप परावर्त्तन कीधां ए सर्व व्यवहार नय जीवने विषे जाणवो ॥ एवा प्रवर्त्तननो मिटावणहार ते श्री जैन धर्मने विषे सुद्ध सद्दहणा सहित सुद्ध उद्यम पराक्रमनुं फोरववुं ॥ एहवा शुद्ध जैनमते करी आत्मानुं साधन थाय ॥ ते वारे सिद्धपणुं पामे ॥ तत्र एकलोज निश्चय

जेम परम सुख उपजे ॥ ए धर्मध्याननी त्रीजी अणुप्पेहा कही ॥ ३ ॥ हवे धर्म ध्याननी चोथी अणुप्पेहा कहे छे ॥ संसाराणुप्पेहा ते केहने कहिये ॥ स्वार्थरुप संसार समुद्र मांहे ॥ जन्म जरा मरण संयोग वियोग सारीरी मानसी दुख कषाय मिथ्यात्व तृष्णारूप घणा जल कल्लोलादिकनी लहेरे करी ॥ च्यार गति चोवीस दंडकने विषे परिभ्रमण करतां जगत जीवने श्री जैन धर्मरुप द्वीपानो आधार छे ॥ तथा संजमरुप नावा तिहां सुद्ध समकितरुप निर्जामक नावानो खेडणहार छे ॥ एहवी नावाये करी जीव सिद्धिरुप महा नगरने विषे पहोंचे ॥ तिहां अनंत अतुल विमल सिद्धना सुख जीव पामे ॥ ए धर्म ध्याननी चोथी अणुप्पेहा कही ॥ ४ ॥ एहवा धर्म ध्यानना गुण जाणिने सदा धर्म ध्यान ध्याइये जेम परम सुख पामीये ॥ इति धर्मध्यान संपूर्ण ॥

अथ श्री पांच बोल.

पहेलो नारकिनो द्वार ॥ १ ॥ बिजो भवनपतिनो द्वार ॥ २ ॥ त्रिजो वाणव्यंतरनो

ननुं जाडपणे छे ॥ वळ्या कोयला शरिखा छे । तेमांहि ८० हजार जोजननो आउ वल छे ॥ अने ॥ ८४ हजार जोजननो पंक बल छे एम त्रणे कांड थइने ॥ एक लाख ने एंशी हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड जाणवो ॥ २ ॥ त्रिजे अर्थ कहे छे ॥ रत्न प्रभा ते रत्ननो पिंड ने रत्ननि पिठिका । ते रत्न केहवा छे । श्याम वर्णा बल्या कोयला सरिखां छे ॥ १ ॥ शर्कर प्रभा ते कांकरानो पिंड ने कांकरानि पिठिका ते कांकरा केहवा छे । लुखा निरस गोखरुना कांटा सरिखो स्परस छे ॥ २ ॥ वालु प्रभा ते वेलुनो पिंड ने वेलुनि पिठिका ते वेलु केहवि छे । उन्हि धगधगति । अग्निनि परे जाज्वल्यमान छे ॥३॥ पंक प्रभा ते कादवनो पिंड ने कादवनि पिठिका ते कादव केहवो छे । लोहिमय परुमय ने वज्रमय कांटा छे ॥ ४ ॥ धूम प्रभा ते धुमाडानो पिंड ने धूमाडानि पिठिका ॥ ते धूमाडो केहवो छे तिखो तमतमो ने दरदरो छे ॥५॥ तम प्रभा ते अंधकारनो पिंड ने अंधकारनी पिठिका ॥६॥ तमतमा प्रभा ते विशेषे अंधकारनो पिंड ने अंधकारनी पिठिका ॥७॥३॥ चोथो पिंडने पांचमो पोलार ए बे द्वार भेळा कहे छे । पहेली नरके । एक लाख ने एंशी हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड छे । तेहमांथि । एक हजार जोजन उंचुं मुकिये ॥

जननि पोलार छे ॥ तेहमांहि ॥ ५ पाथमा ने ॥ ३ लाख नरकावासा छे ॥ ५ ॥ छठी नरके एक लाख ने ॥ १६ हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड छे ॥ तेहमांथि । एक हजार जोजन उंचुं मुकिये ॥ एक हजार जोजन निचुं मुकिये वचे ॥ १ लाख ने ॥ १४ हजार जोजननि पोलार छे ॥ तेहमांहि ॥ ३ पाथमा ने १ लाखमां ॥ ५ उणां ॥ नरकावासा छे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ १ लाख ने ॥ ८ हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड छे ॥ तेहमांथि । साडाबावन हजार जोजन उंचुं मुकिये ॥ साडाबावन हजार जोजन निचुं मुकिये ॥ वचे ३ हजार जोजननो जाडो एक पाथडो छे तेहमांहि ॥ ५ नरकावासा छे ॥ ७ ॥ ५ ॥ हवे अलोक कहे छे ॥ पहेली नरकथि ॥ १२ जोजन जइये तिवारे त्रिहां अलोक आवे ॥१॥ बिजी नरकथि ॥ १२ जोजन ने ॥ २ त्रिया भागे त्रिहां अलोक आवे ॥ २ ॥ त्रिजी नरकथि ॥ १३ जोजन ने ॥ १ त्रिया भागे त्रिहां अलोक आवे ॥ ३ ॥ चोथि नरकथि ॥ १४ जोजन त्रिहां अलोक आवे ॥ ४ ॥ पांचमि थी ॥ १४ जोजन ने २ त्रियाभागे त्रिहां अलोक आवे ॥ ५ ॥ छठीथि ॥ १५ जोजन ने १ त्रिया भागे त्रिहां अलोक आवे ॥६॥ सातमी नरके ॥ १६ जोजने त्रिहां अलोक आवे ॥७॥६॥ सातमे

तेहवा लहीने ग्रहीने विशेषे निश्चय करीने शंका कंखा वितिगिछा रहित पणे पोतानी निर्जराने अर्थे परना उपगारने अर्थे सत्ता मध्ये ते ज्ञाव तेहवा परुपीए तेहने धर्मकथा कहीए ॥ एहवी धर्मकथा कहेता थकां अने सांज्ञलीने सरदहता थकां॥ते बंने वीतरागनी आज्ञाना आराधक होय ॥ ते धर्मकथा संवररूपीउं वृक्ष सेवीए ॥ जेम मनवंछित सुखपामीए॥ ते संवररुपीउं वृक्ष वखाणीए छइए ॥ ते संवररूपीउं वृक्ष केहवो छे ॥ विशुद्ध समकितरुप मूल छे जेहनुं ॥१॥ धीर्यरूप कंद छे जेहनो ॥२॥ विनयरुप वेदिका छे जेहनी ॥३॥ तीर्थंकर तथा चार तीर्थना गुण कीर्तन रुप खंध छे जेहनो ॥४॥ पांच महाव्रतरुप मोटी शाखा छे जेहनी ॥५॥ पचीस ज्ञावनारुप त्वचा छे जेहनी ॥६॥ शुज्ञ ध्यानने शुज्ञ योगरूप प्रधान पल्लव पत्र छे जेहनां ॥ ७ ॥ गुणरुप फूल छे जेहनां ॥ ८ ॥ सीयलरुप सुगंध वासना छे जेहनी ॥ ए ॥ आश्रवरहीत फल छे जेहनां ॥१०॥ मोक्षरूप प्रधान बीज छे जेहनुं ॥११॥ मेरु गिरिना शिखर उपरे जेम चूलिका बिराजेछे तेम समकितीना हृदयमां संवररुपिउं वृक्ष बीराजे छे ॥ १२ ॥ एहवा संवररुप वृक्षनी शीतल छांया जेहनें परिणमे तेहना ज्ञवोज्ञवना पाप टळे ॥ ने ते परम अतुल सुख पामे इत्यादिक ॥४॥

नरके सवा पांच जोजननो घनवाय छे ॥ ४ ॥ पांचमी नरके साढा पांच जोजननो घनवाय छे ॥ ५ ॥ छठी नरके पोणा छ जोजननो घनवाय छे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ६ जोजननो घनवाय छे ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो तनुवाय छे छेहडे जाता दोढ जोजननो रह्यो ॥ पहेली नरके दोढ जोजननो तनुवाय ॥ १ ॥ बिजी नरके दोढ जोजन ने १ बारियो भाग ॥२॥ त्रिजी नरके दोढ जोजन ने २ बारिया भाग ॥३॥ चोथी नरके दोढ जोजन ने ३ बारिया भाग ॥ ४ ॥ पांचमी नरके दोढ जोजन ने ४ बारिया भाग ॥५॥ छठी नरके दोढ जोजन ने ५ बारिया भाग ॥ ६ ॥ सातमी नरने २ जोजननो तनुवाय छे ॥७॥ तेहने आधारे ७ नरक रहि छे॥७॥ आठमे आंतरा कहे छे॥ पहेली नरके ॥ १३ पाथडा नें ॥ १२ आंतरा छे ॥ एकेका पाथडाने ॥ ११५८३ ॥ इग्यार हजार पांचसें त्यासी जोजन ने ॥ १ त्रिया भागनुं आंतरुं ॥ १ ॥ बिजी नरके ॥ ११ पाथडा ने ॥ १० आंतरा । एकेका पाथडाने ९७०० सताणुंसें जोजननुं आंतरुं ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ९ पाथडा ने ॥ ८ ॥ आंतरा । एकेका पाथडाने ॥ १२३७५ ॥ बार हजार त्रणसें पंचोतेर जोजननुं आंतरुं ॥ ३ ॥ चोथी नरके ॥ ७ पाथडा ने ६ आंतरा छे । एकेका पाथडा ने ॥

हजार बसें त्राणुं पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे । अने ७०७ सातसें सात पंक्तिबंध नर-
कावासा छे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ १० लाख ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ॥ २९९७३५ ॥ बे लाख
नवाणु हजार सातसें पांत्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ॥ २६५ बसें पांसठ पंक्ति-
बंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मलिने ॥ ३ लाख ॥५॥ छठि नरके ॥ ९९९३२ नवाणुं हजार
नवसें बत्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ६३ पंक्ति बंध नरकावासा छे ॥ सर्व मली
९९९९५ ॥६॥ सातमी नरके ॥ ५ पंक्ति बंध छे ॥ साते नरकना ८३९०३४७ ॥ त्यासी लाख नेवुं
हजार त्रणसें सुडतालीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने साते नरकना ९६५३ ॥ नव हजार
छसें त्रेपन पंक्ति बंध नरकावासा छे ॥ सर्व मळी ८४ लाख नरकावासा जाणवा ॥ ९ ॥
दशमे अंधकार कहे छे ॥ नरकनो अंधकार ॥ १ ॥ अशुभ पुद्गलनो अंधकार ॥ २ ॥ १० ॥
इग्यारमे नारकिने उपजवाना स्थानक कहे छे ॥ कुंभिने आकारे ॥ १ ॥ घडाने आकारे ॥
२ ॥ पेटिने आकारे ॥ ३ ॥ कुंडाने आकारे ॥ एवं नाना विध विषम स्थानके उपजे ॥ ११ ॥
बारमे क्षेत्र वेदना कहे छे ॥ क्षुधा ॥ १ ॥ तृषा ॥ २ ॥ शित ॥ ३ ॥ उष्ण ॥ ४ ॥ दाह

त्रिजीना जघ० अढि गाउ । उत्० त्रण गाउ देखे ॥३॥ चोथिना । जघ० । बे गाउ । उत्० अढि गाउ देखे ॥४॥ पांचमीना जघ० दोढ गाउ। उत्० ॥ २ गाउ देखे ॥५॥ छठिना जघ०१ गाउ। उत्० दोढ गाउ देखे ॥६॥ सातमीना जघ० । अर्द्ध गाउ ॥ उत्० ॥ १ गाउ देखे ॥७॥ ॥१५॥ सोलमे संघयण कहे छे ॥ पहेली बिजी नरके छ संघयणनो धणि जाय ॥ त्रिजी नरके छेवट्ठु वर्जिने पांच संघयणनो धणि जाय ॥ चोथिये किलकु ॥ १ ने छेवट्ठु ॥२॥ ए ॥ २ वर्जिने ॥ ४ संघयणनो धणि जाय ॥ पांचमी नरके ॥ ३ संघयणनो धणि जाय ते किलकु ॥ १ ॥ छेवट्ठु ॥ २ ॥ अर्द्ध नाराच ए ३ वर्जिने ॥ छठी नरके । वज्र ऋषभ नाराच संघयण ॥१॥ ने ऋषभ नाराच संघयण ॥ २ ॥ ए ॥ २ नो धणि जाय। सातमीये ॥ १ वज्र ऋषभ नाराच संघयणनो धणि जाय ॥१६॥ सत्तरमे कोण जीव केइ नरके उपजे ते कहे छे ॥ असंज्ञी तिर्यंच पहेली नरक सुधि उपजे ॥१॥ भुजपर बीजी सुधि उपजे ॥२॥ खेचर तिर्यंच त्रिजी नरक सुधि उपजे ॥३॥ थलचर तिर्यंच चोथि नरक सुधि उपजे ॥४॥ उरपर तिर्यंच पांचमी नरक सुधि उपजे ॥ ५ ॥ स्त्री छठी नरक सुधि उपजे ॥ ६ ॥ सातमी नरके जलचर मछ ने संज्ञि मनुष्य

चिन्ह ॥ए॥ थणित कुमारने संपुष्टनुं चिन्ह ॥ १० ॥ २ ॥ हवे त्रिजे वर्ण कहे छे ॥ असुर कुमारनो श्याम वर्ण ॥ नाग कुमार ने उदधि कुमारनो धोलो वर्ण ॥ विज्जु कुमार अग्नि कुमार ने द्वीप कुमारनो रातोवर्ण ॥ सुवर्ण कुमार दिशा कुमार ने थणित कुमारनो पीलो वर्ण ॥ पवन कुमारनो निलोत्पल कमल सरिखो निलो वर्ण ॥३॥ हवे चोथे वस्त्र कहे छे ॥ राता निला पिला धोळा विविध प्रकारना ते पण संध्याना रंग सरिखा जाणवा ॥४॥ हवे पांचमे सामानिक कहे छे ॥ दक्षिण दिशना चमरेंद्रने चोसठ हजार सामानिक छे ॥ उत्तर दिशाना बलेंद्रने ॥ ६०००० साठ हजार सामानिक छे॥ धरणेंद्रादिक ॥ १७ ॥ इंद्रने छ हजार सामानिक छे ॥ ५ ॥ छ आत्मरक्षक ते सामानिक थि चोगुणा जाणवा ॥६॥ सातमे देवांगना कहे छे ॥ चमरेंद्र तथा बलेंद्रने पांच पांच देवीओ जाणवी ॥ एकेकि देवी आठ आठ हजार रुप वैक्रेय करे धणि जोगववाने अर्थे धणि पण एटला रूप वैक्रेय करे॥ धरणेंद्रादिक १७ इंद्रने छ छ देविओ जाणवि ॥ एकेकी देवी छ छ हजार रुप वैक्रेय करे धणि जोगववाने अर्थे धणि पण एटला रुप वैक्रेय करे ॥ ७ ॥ हवे आठमे अणिका ॥ ७ कहे छे॥ गंधर्व ॥ १॥ नट ॥२॥ हय ॥ ३ ॥

॥ २५० ॥ देवीउं ॥ ३ ॥ हवे एहना न ॥ देवता वीउंनि ॥ ३ परिषद तेमांहि
अभ्यंतरनि ॥ १७५ देवीउं ॥ १ ॥ मझमनि ० देवीउं ॥२॥ वाहिरलीनि ॥ १२५ देवीउं
॥ ३ ॥ ए सर्व परिवार दक्षिण दिशना चमरेंद्रनो जाणवो ॥ एमज उत्तर दिशना बलेंद्रनि ३
परिषद जाणवी पण एटलो फेर ॥ पहेलीना ॥ २० हजार देवता ॥ १ ॥ बिजीना ॥ २४
हजार देवता ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ २७ हजार देवता ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि
॥ ३ परिषद ते पहेलीना ॥ ५० हजार ॥ १ ॥ बिजीना ॥ ६० हजार ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ ७०
हजार ॥ ३ ॥ बलेंद्रनि देवीउंनी ॥ ३ परिषद ॥ पहिलीनि ॥ ४५० देवीउं ॥ १ ॥ बिजीनि
४०० देवीउं ॥२॥ त्रिजीनि ॥ ३५० देवीउं ॥३॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि देवीउंनि
॥ ३ परिषद ॥ पहेलीनि ॥ २२५ देवीउं ॥ १ ॥ बिजीनि ॥ २०० देवीउं ॥ २ ॥ त्रिजीनि
॥ १७५ देवीउं ॥ ३ ॥ ११ ॥ बारमे लोक पाल कहे छे । सोम ॥१॥ जम ॥ २॥ वरुण ॥३॥
वेसमण ॥४॥ सोमनो वारो पूर्व दिशे ॥१॥ जमनो वारो दक्षिण दिशे ॥ २॥ वरुणनो वारो
पश्चिम दिशे ॥ ३ ॥ वेसमणनो वारो उत्तर दिशे ॥४॥ सोमने वारे सुख शाता होय ॥ १ ॥

नाराचसंघयण ॥ १६ ॥ समचउरंशसंठाण ॥ १७ ॥ शुभवर्ण ॥ १८ ॥ शुभगंध ॥ १९ ॥ शुभरस ॥ २० ॥ शुभस्पर्श ॥ २१ ॥ अगुरु लघुनाम ॥ २२ ॥ पराघातनाम ॥ २३ ॥ उस्वास नाम ॥ २४ ॥ आतापनाम ॥ २५ ॥ उद्योतनाम ॥ २६ ॥ शुभचालवानि गति ॥ २७ ॥ निर्माणनाम ॥२८॥ त्रसनाम ॥२९॥ बादरनाम ॥३०॥ प्रजाप्तनाम ॥३१॥ प्रत्येकनाम ॥३२॥ स्थिरनाम ॥ ३३ ॥ शुभनाम ॥ ३४ ॥ सौभाग्यनाम ॥ ३५ ॥ सुस्वरनाम ॥ ३६ ॥ आदेय नाम ॥ ३७ ॥ जशोकीर्तिनाम ॥ ३८ ॥ देवतानुं आउष्य ॥३९॥ मनुष्यनुं आउष्य ॥४०॥ तिर्यंचनुं आउष्य जुगलवत् ॥ ४१ ॥ तिर्थंकरनामकर्म ॥ ४२ ॥ एवं ॥ ४२ ॥ भेद पुण्यना जाणवा इति पुण्यतत्त्वं समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे ॥ १८ ॥ प्रकारे पाप उपराजे ते कहेछे ॥ प्राणातिपात ॥१॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥४॥ परिग्रह ॥५॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥९॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥१३॥ पैशून्य ॥१४॥ परपरिवाद ॥ १५ ॥ रतिअरति ॥ १६ ॥ मायामोसो ॥ १७ ॥ मिछादंसणसल्ल ॥ एवं ॥१८॥ हवे तेहना अशुभ फल ॥ ८२ ॥ प्रकारे भोगवे ते कहेछे ॥

परिषद् ॥ ३ ॥ समीयाना ॥ ८ हजार देवता ॥ १ ॥ चंमाना ॥ १० हजार देवता ॥ २ ॥ जायाना ॥ १२ हजार देवता ॥ ३ ॥ आववुं जावुं प्रथमनि रिते जाणवुं ॥ ३ परिषदनुं ॥ ११ ॥ वारमे शुन्न वर्ण ॥ गंध ॥ रस ॥ स्पर्श ॥ जोगवता थका वाणव्यंतर विचरे ठे ॥ १२ ॥ इति वाणव्यंतरनो द्वार समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे चोथो ज्योतिषीनो द्वार कहे ठे। पहेले नाम ॥१॥ विजे वाहक ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चोथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥ ५ ॥ ठठे आत्म रक्षक ॥ ६ ॥ सातमे लांवपणुं ने पहोलपणुं ॥ ७ ॥ आठमे उंचपणुं ने जाकपणुं ॥ ८ ॥ नवमे पंक्ति ॥ ९ ॥ दशमे परिषद् ॥ १० ॥ इग्यारमे उद्योत ॥ ११ ॥ वारमे देवीउ ॥ १२ ॥ तेरमे नित्य राहु ने पर्व राहु ॥ १३ ॥ चौदमे परिवार ॥ १४ ॥ पनरमे अणिकाना अधिपति ॥ १६ ॥ सतरमे संघयण ॥ १७ ॥ अढारमे गणिसमे निर्व्याघात ॥ १९ ॥ विशमे देखवुं ॥ २० ॥ एकविशमे चालवुं ॥ २२ ॥ त्रेविशमे उंचपणुं ॥ २३ ॥ चोविशमे आंतरुं ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ पहेले नाम ते चंद्र ॥ १ ॥ सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥ ३ ॥ नक्षत्र

॥ ४८ ॥ मान ॥ ४९ ॥ माया ॥ ५० ॥ लोभ ॥५१॥ हास्य ॥५२ ॥ रति ॥ ५३ ॥ अरति ॥ ५४ ॥ भय ॥ ५५ ॥ शोक ॥ ५६ ॥ दुगंछा ॥ ५७ ॥ स्त्रीवेद ॥ ५८ ॥ पुरुषवेद ॥ ५९॥ नपुंसकवेद ॥ ६० ॥ तिर्यंचनी गति ॥६१॥ तिर्यंचनी अनुपूर्वी ॥ ६२ ॥ एकेंद्रियपणुं ॥६३॥ बेइंद्रियपणुं ॥ ६४ ॥ तेइंद्रियपणुं ॥ ६५ ॥ चउरिंद्रियपणुं ॥६६॥ अशुभ चालवानि गति ॥६७॥ उपघातनामकर्म ॥६८॥ अशुभवर्ण ॥ ६९ ॥ अशुभगंध ॥ ७० ॥ अशुभरस ॥ ७१ ॥ अशुभस्पर्श ॥ ७२ ॥ रुषभनाराच-संघयण ॥ ७३ ॥ नाराचसंघयण ॥ ७४ ॥ अर्द्धनाराचसंघयण ॥ ७५ ॥ किलकुसंघयण ॥ ७६ ॥ छेवट्ठसंघयण ॥ ७७ ॥ निगोहपरिमंडलसंठाण ॥ ७८ ॥ सादिसंठाण ॥ ७९ ॥ वामनसंठाण ॥ ८० ॥ कुब्जसंठाण ॥ ८१ ॥ हुंडसंठाण ॥ ८२ ॥ एवं ॥८२॥ भेद पापतत्वना जाणवा ॥ इति पापतत्वं समाप्तं ॥ ४ ॥ हवेआश्रवना सामान्य प्रकारे ॥२०॥ भेद कहेछे ॥ मिथ्यात्व ते आश्रव ॥ १ ॥ अव्रत ते आश्रव ॥ २ ॥ प्रमाद ते आश्रव ॥३॥ कषाय ते आश्रव ॥४॥ अशुभजोग ते आश्रव ॥ ५ ॥ प्राणातिपात ते आश्रव ॥ ६ ॥ मृषावाद ते आ० ॥७॥ अदत्तादान ते आ० ॥८॥ मैथुन ते आ० ॥ ९ ॥

जाणवा ॥ इति आश्रवतत्वं समाप्तं ॥५॥ हवेसंवरना सामान्य प्रकारे ॥२०॥ नेद कहेछे ॥
समकित ते संवर ॥१॥ व्रतपच्चखाण ते सं० ॥२॥ अप्रमाद ते सं० ॥३॥ अकषाय ते सं०
॥४॥ शुनजोग ते सं० ॥५॥ जीवदया पालवी ते सं० ॥६॥ सत्यवचन बोलवुं ते सं० ॥७॥
दत्तव्रत ग्रहण ते सं० ॥८॥ शियल पालवुं ते सं० ॥९॥ अपरिग्रह ते सं० ॥१०॥ इंद्रिय
॥५॥ जोग ॥३॥ ए ॥८॥ नुं संवरवुं ते सं० । एवं ॥१८॥ नंडउपगरणउपधि जतनाये
लिये मुके ते सं० ॥१९॥ शुचिकुसग्ग न करे ते सं० ॥२०॥ हवे विशेषे ॥५७॥ नेद कहेछे॥
इर्यासुमति ॥१॥ नाषासुमति ॥२॥ एषणासुमति ॥३॥ आयाणनंडमत्तनिखेवणासुमति
॥४॥ उच्चारपासवणखेलजलसिंघाणपारिठावणीया सुमति ॥५॥ ए ॥५॥ सुमति ने ॥३॥
गुप्ति ते ॥ मनगुप्ति ॥१॥ वचनगुप्ति ॥२॥ कायगुप्ति ॥३॥ ए ८ प्रवचनमाता आदरवा ने
॥ २२ परिसह सहेवा ॥ ते कहेछे ॥ क्षुधानो परिसह ॥१॥ तृषानो० ॥२॥ टाढनो० ॥३॥
तापनो० ॥४॥ दंशमंशनो० ॥५॥ अचेलनो० ॥६॥ अरतिनो० ॥७॥ स्त्रीनो० ॥८॥
चरियानो० ॥९॥ बेसवानो० ॥१०॥ सेजानो० ॥११॥ आक्रोश वचननो० ॥१२॥ वधनो०

ज्यना कह्या ॥ हवे ७ नेद अन्यंतरना कहेछे ॥ प्रायछित॥७॥विनय ॥८॥ वेयावच्च ॥९॥ संझाय ॥१०॥ ध्यान ॥११॥ काउसग्ग ॥१२॥ एवं ॥१२॥ नेद निर्जरातत्वना कह्या ॥इति निर्जरातत्व समाप्तं ॥७॥ हवे बंधतत्वना ॥४॥ नेद कहेछे ॥ प्रकृतिबंध ॥१॥ स्थितिबंध॥२॥अनुनागबंध॥३॥ प्रदेशबंध ॥४॥ प्रकृतिबंध ते कर्मनो स्वनाव तथा परिणाम ॥१॥ स्थितिबंध ते जे कर्मनि जेटलि स्थिति छे तेटलि ॥२॥ अनुनागबंध ते रस तिव्र मंद रसादि कर्मनो ॥३॥ प्रदेशबंध ते कर्म पुजलना दल ॥ ४ ॥ ए ॥४॥ बंधनुं स्वरूप मोदकने दृष्टांते करी बतावेछे ॥ जिम कोइ मोदक घणा प्रकारना द्रव्यने संजोगे निपनो ॥ वायुने तथा पीतने तथा श्लेष्मने जेणे स्वरूपे करि हणे तेने स्वनाव कहिये ॥ १ ॥ तथा तेज मोदक । पक्ष । मास । बेमास त्रणमास चारमाससुधि ते रूपे करि रहे तेने स्थिति कहिये ॥ २ ॥ जिम वलि तेज मोदक कोइ अल्प कोइ कडुयो होय कोई तीखो होय तेने रस कहिये ॥३॥ जीम वलि तेज मोदक कोइ अल्प दलने परिमाणे निपनो । कोइ वलि बहु दलने परिमाणे निपनो ॥ एमज मोदकने विषे दलनुं परिमाण तेहने प्रदेशबंध कहिये ॥४॥ एणीपरे कर्मनो बंध ॥ ४ ॥ प्रकारे जाणवो ॥ इती

छे ॥३॥ स्पर्शना द्वार ते सिद्धक्षेत्रथि कांइक अधिकी सिद्धनिस्पर्शना छे ॥४॥ कालद्वार ते ॥ एक सिद्ध आश्रि सादिअनंत सर्व सिद्ध आश्रि अनादिअनंत ॥५॥ अंतरद्वार ते फरि सिद्धने संसारमां अवतरवुं नथि ॥ अने एक सिद्ध तिहां अनंता सिद्ध छे अने अनंता सिद्ध तिहां एक सिद्ध छे ॥ एटले सिद्ध सिद्धमां अंतर नथि ॥६॥ भागद्वार ते सघला जीवने सिद्धना जीव अनंतमे भागे छे । लोकने असंख्यातमे भागे छे ॥७॥ भावद्वार ते सिद्धमां क्षायकभाव ॥ केवलज्ञान । केवलदर्शन । क्षायकसमकित छे । अने परिणामिकभाव ते सिद्धपणो जाणवो ॥ ८ ॥ अल्प बहुत्व द्वार ते ॥ सर्वथि थोडा नपुंसक सिद्ध ॥ तेथि स्त्री संख्यातगुणि सिद्ध॥ तेथि पुरुष संख्यातगुणा सिद्ध ॥ एक समये नपुंसक ॥ १० ॥ सिद्ध थाय ॥ स्त्री ॥ २० ॥ सिद्ध थाय ॥ पुरुष ॥ १०८ ॥ सिद्ध थाय ॥ ए ॥ त्रसपणे ॥ १ ॥ बादरपणे ॥ २ ॥ संज्ञिपणे ॥३ ॥ वज्रऋषभनाराचसंघयणपणे ॥ ४ ॥ शुकलध्यानपणे ॥ ५ ॥ मनुष्यगति ॥ ६ ॥ क्षायकसमकित ॥७॥ जथाख्यातचारित्र ॥८॥ पंडितवीर्य ॥ ए ॥ केवलज्ञान ॥ १० ॥ केवल-दर्शन ॥११॥ भव्य सिद्धिक ॥१२॥ परमशुकललेशी ॥१३॥ चरमशरीरि ॥१४॥ ए ॥१४॥ बोलनो

गलो ने हरतालनी जात ॥५॥ गेरु ने गोपीचंदननी जात ॥६॥ रत्न पर वालानी जात ॥७॥ सोल जातिना रत्न आदि लेइने तेंतालीस जातनी पृथ्वीकायछे ॥ तेना एक ककरामां ॥ असंख्याता जीव । श्रीभगवंते कह्याछे ॥ ते जुवार ॥ तथा पीलु ॥ जेटली पृथ्वीकाय लइये ॥ तेमांथी ॥ एकेको जीव निकलीने । पारेवा जेवडी काया करे तो ॥ एक लाख जोजननो जंबुद्वीप छे॥ तेमां समाय नही ॥ तेना कुलबारलाख क्रोडछे ॥ तेनुं आउखुं ॥ जघन्य ॥ अंतर्मुहुर्त्तनुं ॥ उत्कृष्टुं २२ हजार वर्षनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षनां सुख पामीये ॥१॥ हवे अप्काय ते पाणी ॥ तेना बे भेद ॥ सुक्ष्म ॥ अने बादर ॥ सुक्ष्मते ॥ आखा लोकमां भर्यांछे ते आपणी नजरे न आवे ॥ बादर पाणीना नाम कहे छे ॥ पहेले बोले ॥ वरसादने कराना पाणी ॥ २ ॥ झाकल ने धुमरना पाणी ॥ ३ ॥ कुवा नदी तलावना पाणी ॥ ४ ॥ दरिया ने झरणना पाणी ॥ ५ ॥ खारां । खाटां । पाणी ॥ ६ ॥ मीठां मोलां पाणी ॥ ७ ॥ ए आदिलेइने घणी जातिनां पाणी छे ॥ तेना एक बिंदुमां असंख्याता जीव श्रीभगवंते कह्याछे ॥ तेमांथी एकेको जीव नीकलीने ॥ सरसवना दाणा जेवडी ॥ काया करे तो एक

3

उतर ने दक्षीणनो वा ॥३॥ उंचो निचो ने त्रिछो वा ॥४॥ वंतोलियो ने मंकलीयो वा॥५॥ गुंजवा ने सुधवा ॥६॥ एआदिलेइने घणी जातिनो वायरो छे ॥ ते सुं करवे करी हणायछे॥ उघाके मोढे वोल्ये ॥ कापट नांखवे ॥ सुपक सोक फाटकवे ॥ कांतवे । विंफवे ॥ तालोटा वगाकवे ॥ विंफणे विंफवे ॥ हींचोले हींचकवे ॥ आदिलेइने घणी जातिना शस्त्रेकरी हणाय छे ॥ एकवार उघाके मोढे वोल्ये ॥ असंख्याता जीव हणाय छे ॥ तेमाथी एकेको जीव निकलीने ॥ वकना वीज जेवकी काया करेतो ॥ जंबुद्विपमां समाय नहि ॥ तेना कुल सात लाख कोक छे ॥ तेनुं आउखुं । जघन्य । अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टुं ॥ त्रणहजार वर्षनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षनां सुख पामीये ॥४॥ पांचमे बोले वनस्पतिकाय तेना वे भेद सुक्ष्म ॥ अने ॥ वादर ॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमां भरयांछे ॥ तेआपणी नजरे न आवे । वादरवनस्पतिकायना वे भेद ॥ प्रत्येक अने साधारण प्रत्येक कोने कहीये । सरीरे सरीरे एकेको जीव होय ॥ तेने प्रत्येक कहीये ॥ अने एक सरीरे अनंता जीव होय । तेने साधारण कहीये ॥ हवे प्रत्येकनां नाम कहेछे ॥ पहेले बोले वृक्ष ने वेलानी जात॥१॥ रिंगणी तलसी ने

तेइंद्रीय चौरिंद्रीय पंचेंद्रीय हवे बे इंद्रीयना बे भेद। अप्रजाप्ताने प्रजाप्ता ॥बेइंद्रीय तेकोने कहीये जेनेकाया जीभ्या बेइंद्रीय होय तेने बेइंद्रीय कहीये तेनांनाम॥जलो॥किडा पोरा।करमीया सरमिया मामणमुंडा। अलसीया।लट।लाल। संख।छीप।कोडा॥आदि लेइने घणी जातिना बेइंद्रीय जीव छे॥ तेनांकुलसातलाखक्रोडछे॥ तेनुं आउखुं जघन्य॥अंतर्मुहुर्तनुं उत्कृष्टुं।बार वर्षनुं॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये॥ तेइंद्रीयना बे भेद। अप्रजाप्ता॥ ने प्रजाप्ता ॥तेइंद्रीय ते कोने कहीये ॥ काया भूख ने नासिका होय तेने। तेइंद्रीय कहिये तेनां नाम ॥ जु। लीख। चांचड। मांकड। कीडी। कंथुवा। माटला। धनेडा। जूवा। ईतडी। गींगोडा॥ घीमेल। गधैया। कानखजुरा॥ मंकोडा॥ एआदि लेइने घणी जातिना॥ तेइंद्रीय जीव छे॥ तेना कुल॥ आठलाख क्रोड छे॥ तेनुं आउखुं॥ जघन्य। अंतर्मुहुर्तनुं॥ उत्कृष्टुं। उगणपंचास दिवसनुं॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये॥ हवे चौरिंद्रीयना बे भेद। ते अप्रजाप्ता। ने प्रजाप्ता॥ चौइंद्रीय ते कोने कहीये॥ जेहने काया। मुख। नासिका अने आंख। होय तेने चौइंद्रीय जीव कहीये। तेना नाम माखी मसला॥ डांस। मछर।

॥ अथ श्री लघु दंडक. ॥

॥ ॐनमः सिद्धं ॥ अथश्री २४ दंडकना बोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ सरीरोगाहण संघयण ॥ संठाणकसाय तहहुंतिसन्नाउ ॥ लेसिंदियसमुघाए । सन्निवेदेयपज्जती ॥ १ ॥ दिठिदंसणनाण अनाणे ॥ जोगुवउगेतहाकिमाहारे ॥ उववायठिइसमुहाए । चवणगइरागइचेव ॥२॥ ए बे गाथा सूत्रपाठे कही ॥ हवे अर्थ कहेछे ॥ सरीर कहेता सरीर पांच॥ उदारीक सरीर ॥१॥ वैक्रेय सरीर ॥२॥ आहारक सरीर ॥३॥ तेजस सरीर ॥४॥ कार्मण सरीर ॥ ५ ॥ १ ॥ उगाहण कहेता । अवघेणा ॥ उदारिक सरीरनी अवघेणा जघन्य अंगुलना असंख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी एक हजार जोजन नी झाझेरी ॥ कमलनाभोभानेन्याये ॥ वैक्रेय सरीरनिभवधारणि अवघेणा । जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी पांचसे धनुषनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय सरीरनी अवघेणा ॥ जघन्य अंगुलनो संख्यातमो भाग॥ उत्कृष्टीलाख जोजननि झाझेरी ॥ आहारक सरीरनी अवघेणा जघन्य । मुंढा हाथनी ॥ उत्कृष्टी एक

॥ अथ श्री लघु दंडक. ॥

॥ ॐनमः सिद्धं ॥ अथश्री २४ दंडकना बोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ सरीरोगाहण संघयण ॥ संठाणकसाय तहहुंतिसन्नाउ ॥ लेसिंदियसमुघाए । सन्निवेदेयपज्जती ॥ १ ॥ दिठिदंसणनाण अनाणे ॥ जोगुवउगेतहाकिमाहारे ॥ उववायठिइसमुहाए । चवणगइरागइच्चेव ॥२॥ ए बे गाथा सूत्रपाठे कही ॥ हवे अर्थ कहेछे ॥ सरीर कहेता सरीर पांच॥ उदारीक सरीर ॥१॥ वैक्रेय सरीर ॥२॥ आहारक सरीर ॥३॥ तैजस सरीर ॥४॥ कार्मण सरीर ॥५॥ १ ॥ उगाहण कहेता । अवघेणा ॥ उदारिक सरीरनी अवघेणा जघन्य अंगुलना असंख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी एक हजार जोजन नी झाझेरी ॥ कमलनाभोभानेन्याये ॥ वैक्रेय सरीरनिभवधारणि अवघेणा । जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी पांचसे धनुषनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय सरीरनी अवघेणा ॥ जघन्य अंगुलनो संख्यातमो भाग॥ उत्कृष्टीलाख जोजननि झाझेरी ॥ आहारक सरीरनी अवघेणा जघन्य । मुंढा हाथनी ॥ उत्कृष्टी एक

कहेता ॥ समुद्घात सात । वेदनी ॥ १ ॥ कषाय ॥२॥ मारणांतिक ॥ ३ ॥ वैक्रेय ॥ ४ ॥ तेजस ॥ ५ ॥ आहारक ॥६॥ केवल ॥ ७॥९ ॥ सन्नी कहेता संज्ञी असंज्ञी। मन होय ते संज्ञी । मन न होय ते असंज्ञी ॥१०॥ वेदेय कहेता वेद त्रण ॥ स्त्रीवेद ॥१॥ पुरुषवेद॥२॥ नपुंसकवेद ॥ ३॥११ ॥ पज्जति कहेतां पर्याप्ति ठ आहारपर्याप्ति ॥ १ ॥ सरीरपर्याप्ति ॥ २॥ इंद्रीयपर्याप्ति ॥ ३ ॥ स्वासोस्वासपर्याप्ति ॥ ४ ॥ भाषापर्याप्ति ॥५॥ मनपर्याप्ति ॥ ६ ॥१२॥ दिठि कहेता दृष्टि ॥३॥ समकितदृष्टि ॥१॥ मिथ्यातद्रष्टी ॥२॥ समामिथ्यातदृष्टी ॥ ३॥१३॥ दंसण कहेता दर्शनच्यार । चक्षुदर्शन ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शन ॥२॥ अवधिदर्शन ॥३॥ केवल दर्शन ॥ ४॥१४ ॥ नाण कहेता ज्ञान ॥५॥ मतिज्ञान ॥१॥ श्रुतज्ञान ॥२॥ अवधिज्ञान॥३॥ मनपर्यवज्ञान ॥४॥ केवलज्ञान ॥५॥१५॥ अनाणे कहेता ॥ अज्ञान त्रण । मतिअज्ञान ॥१॥ श्रुतअज्ञान ॥ २ ॥ विभंगज्ञान ॥ ३॥१६ ॥ जोग कहेता जोगपनर । च्यार मनना । च्यार वचनना । सात कायाना ॥ हवे च्यार मनना कहेछे। सत्य मनजोग ॥ १ ॥ असत्यमन जोग ॥ २ ॥ मिश्रमनजोग ॥ ३ ॥ व्यवहारमनजोग ॥४॥ हवे च्यार वचनना कहे छे ॥

कीडीनीलाश्नीपरे जीवना परदेसबुटाबुटा नीकले ॥ तेहने समोहिया मरण कहियें ॥ १॥
असमोहियामरण ते केहने कहिये बंदुकना भडाकानीपरे जीवना प्रदेश सामटा नीकले ॥
तेहने असमोहियामरण कहिय ॥ २॥२२॥ चवण कहेता चविने जाय जेटला दंडकमां ते
आगल केहेवासे ॥२३॥ गइ कहेता गति पांच ॥ नरकनी गति तिर्यंचनी गति ॥ मनुष्यनी
गति । देवतानी गति । सिधनी गति । एहमां जे जावुं ते गति ॥ अने आगइ कहेता जेमांथी।
आववुं ते आगति च्यार ॥ नरकनी । तिर्यंचनी ॥ मनुष्यनी ॥ देवतानी ॥ २४ ॥ चेव कहेता
निश्चे ए वे गाथानो । अर्थ कह्यो ॥ हवे प्राणदश ।पांच इंद्रीयना पांच प्राण ॥ श्रोतेंद्रीय॥१॥
चक्षु इंद्रीय ॥२॥ घ्राणेंद्रीय ॥३॥ रसइंद्रीय ॥४॥ फरसइंद्रीय ॥ ५॥ मनबल ॥६॥ वचन-
बल ॥ ७ ॥ कायबल ॥८॥ स्वासोस्वास ॥९॥ आउखुं ए ॥ १० ॥ ए पचीस डुवार कह्या
।२५॥ हवे चोविस दंडकना नाम कहेछे ॥ पेहेलो नारकीनो दंडक ॥ ते सात नरकना नाम
कहेछे ॥ पहेली घमां ॥१॥ बीजी वंसा ॥ २ ॥ त्रीजि सीला ॥ ३ ॥ चोथी अंजणा ॥ ४ ॥
पांचमी रिठा ॥५॥ छठी मघा ॥६॥ सातमी माघवइ ॥७॥ ए सात नरकना नाम कह्या ॥

कह गाहा । मगर सुसुमार प्रमुख ॥१॥ हवे थलचर ते केहने कहिए ॥ जे थल पृथ्वी ए चाले ॥ तेहने थलचर कहिये ॥ तेहना च्यार ञेद ॥ एकखुरा ङुखुरा । गंकीपया ॥सणपया ॥ एकखुरा ते घोका खर प्रमुख ॥ ङुखुरा ते गाय ञेंस प्रमुख ॥ गंकीपया ते सुंहाला पग ॥ सोनीनी अहिरण ने घाटे पग होय ते हाथी गेंका प्रमुख ॥ सणपंया ते नोहोराला जीव ॥ ते सिंह वाघ चित्रा कुतरा विलाका प्रमुख ॥ २ ॥ ञरपर ते केहने कहिये । हङ्याञर चाले ते सर्पनी जात ॥ तेहना वे ञेद ॥ एक फेण मांके ने ॥ एक फेण न मांके ॥ ३ ॥ ञुजपर ते केहने कहिये । ञुजाए तथा हङ्याञर चाले ते ञुजर्पर ॥ तेहना अनेक ञेद । नोल कोल कार्कीका । गोह । ञंदर ॥ खीसकोली प्रमुख ॥ ४ ॥ खेंचर ते केहने कहीये ॥ जे आकासे चाले ते पंखीनी जाति ॥ ते पंखीना च्यार ञेद । चरमपंखी १ । रोमपंखी २ । विततपंखी ३ । समुगपंखी ४ ॥ चरमपंखी ते चामकानी पांख ॥ ते ठापा ॥ वागुल प्रमुख ॥ १ ॥ रोमपंखी ते रोमरायनी पांख ॥ ते सुका चरकला पारेवा प्रमुख ॥२॥ ए वे पंखी अढी द्वीप मांहे अने बाहिर ठे ॥ वितत पंखी ते जेहनी पांख पोहोली रहे ते वितत पंखी कहिए ॥ ३ ॥ समुग

सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥३॥ नक्षत्र ॥ ४ ॥ तारा ॥ ५ ॥ ए पांच चल ते अढिद्वीप मध्ये छे ॥ अने पांच स्थिर ते अढिद्वीप वाहीर छे ॥ एवं दस जात ॥ बे चंद्रमाने बे सूर्य जंबूद्वीप मध्ये छे॥ च्यार चंद्रमा च्यार सूर्य लवण समुद्र मध्ये छे ॥ बार चंद्रमा बार सूर्य धातकीषंड मध्ये छे ॥ बेतालिस चंद्रमा । बेतालिस सूर्य कालोदधि समुद्र मध्ये छे ॥ बहुत्तेर चंद्रमा ॥ बहुत्तेर सूर्य पुष्करार्द्ध द्वीप मध्ये छे ॥ एवं सर्व मलीने मनुष्य क्षेत्रमां । एकसो बत्रीस चंद्रमा ॥ एकसो बत्रीस सूर्य ॥ परिवार सहित चल छे ॥ परिवार ते जिहां एक चंद्रमा एक सूर्य तिहां अठासी ग्रह ॥ अठाविस नक्षत्र ॥ छासठहजार नवसें पंच्योतेर कोडा कोडी तारा छे ॥ एवं सर्व चंद्रमा सूर्यनो परिवार गणवो॥असंख्याता चंद्रमा असंख्याता सूर्य परिवार सहित मनुष्यक्षेत्र बाहेर असंख्याता द्वीपसमुद्र मांहि स्थिर छे ॥ एवं दस जातनो त्रेविसमो ज्योतिषी नो दंडक थयो ॥ २३ ॥ हवे चोविसमो वैमानिक नो दंडक कहेछे ॥ तेहना छविस भेद छे ॥ बार देवलोक ॥ नव ग्रीवेयक ॥ पांच अनुत्तर विमान । एवं छविस । हवे तेहना नाम कहेछे ॥ सुधर्म ॥१॥ इसान ॥२॥ सनंतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥ लंतक ॥ ६ ॥

॥ ८ ॥ विजुजंभका ॥ ए ॥ अवीयतजंभका ॥ १० ॥ ए दस जातिना जंभका ते वाण व्यंतरमा जव्या ॥ ३ किल्विषीना नाम ॥ त्रण पलिया ॥ १ ॥ त्रण सागरिया ॥ २ ॥ तेर सागरिया ॥ ३ ॥ ए त्रणकिलविषी देवलोक अंतरनिवासी माटे विमानीक मां जव्या । नव लोकांतिकना नाम कहेछे ॥ सारस्वत ॥ १ ॥ आदित्य ॥ २ ॥ विन्ही ॥ ३ ॥ वरुण ॥ ४ ॥ गर्दतोया ॥ ५ ॥ तोसीया ॥ ६ ॥ अवाबाहा ॥ ७ ॥ अगीचा ॥ ८ ॥ रिठा ॥ ए ॥ ए नव लोकांतिक वंभलोकवासी माटे उत्तम वैमानिकमां जव्या ॥ इति चोविस दंडकना नाम कह्या ॥२४॥ हवे सात कोडी बोहोत्तेर लाख जवनपतिना जवन छे । चोरासी लाख नरकावासा छे । असंख्याता वाणव्यंतरना नगर छे॥ असंख्याता जोतिषीना विमान छे॥ असंख्याती राज्यधानी द्वीपा जोतिषीना छे। चोरासी लाख सताणु हजार त्रेवीस विमान वेमानिकना छे ॥ संख्याता वास मनुष्यना छे। सेष दंडक नवना असंख्याता असंख्याता वास छे ॥ ते सर्व वर्णव अन्य सिद्धांतादिकथि जाणवो ॥ २४ ॥ हवे सिद्धसिलाना बार नाम कहेछे ॥ इसितिवा ॥ १ ॥ इसिपप्भारातिवा ॥ २ ॥ तणुतिवा ॥ ३ ॥ तणुतणुतिवा ॥ ४ ॥

उत्तरवैक्रेय करे तो। ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० सवासो धनुषनी ॥ पांचमी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० सवासो धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० अढीसे धनुषनी ॥ छठि नरकेज० अंगु० असं० उ० अढिसे धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० उ० पांचसें धनुषनी ॥ सातमी नरके ज० अंगु० असं ॥ उ० पांचसें धनुषनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या ॥ उ० हजार धनुषेनी। संघयण क०॥ नारकीअसंघेणी ॥ संठाण एक हुंडसंठाण ॥ कषाय च्यार । क्रोध मान माया ने लोभ ॥ पण नारकीने क्रोध घणो ॥ संज्ञा च्यार आहारसंज्ञा । भयसंज्ञा। मैथुनसंज्ञा । परिग्रहसंज्ञा। पण नारकीने भय घणो। लेस्या नारकीने त्रण समुचे ॥ पेहेली ने बीजी नरके एक कापुत लेसा॥ त्रीजी नरके बे लेस्या ॥ कापुत घणी अने नील थोरी ॥ चोथी नरके एक नील लेस्या ॥ पांचमी नरके बे लेस्या नील घणी अने कृष्ण थोरी ॥ छठी नरके एकली कृष्ण लेस्या ॥ सातमी नरके महाकृष्ण लेस्या ॥ इंद्रीय पांच। श्रोतेंद्रिय ॥१॥ चक्षुइंद्रीय ॥२॥ घाणइंद्रीय ॥३॥ रसइंद्रीय ॥४॥ फरसइंद्रीय ॥ ५ ॥ समुद्घात च्यार ॥ वेदनी कषाय मारणांतिक वैक्रेय॥

उ० सात सागरनी ॥ चोथी नरके ज० सात सागरनी उ० दस सागरनी ॥ पांचमी नरके ज० दस सागरनी ॥ उ० सतर सागरनी ॥ छठी नरके ज० सतर सागरनी । उ० बावीस सागरनी ॥ सातमी नरके ज० बावीस सागरनी ॥ उ० तेत्रीस सागरनी ॥ समोहिया मरण ने असमोहिया मरण । बे मरण छे । चवण ते नारकी चविने पेहेलीथी छठी सुधिना बे दंडकमां जाय मनुष्यने तिर्यंचमां ॥ अने सातमी नरकनो एक दंडकमां ते तिर्यंचमां जाय ॥ गइ कहेतां । पेहेलीथी मांडी छठी सुधिना नारकी मरीने बेगतीमां जाय ते ॥ मनुष्यने तिर्यंचमां जाय ॥ आवे पण बेगतिनो [॥ मनुष्य ने तिर्यंचनो सातमी नरकना नारकी बे गतिमांथी आवे मनुष्य ने तिर्यंचना ने जाय एक तिर्यंचनिगतिमां ॥ प्राणदस लाभे॥जोग त्रण मन वचन ने कायाना । ए त्रण ॥ ए प्रथम दंडक नारकीनो संपूर्ण ॥ १ ॥ हवे दस भवनपतिना दस दंडक कहे छे ॥ तेहमां सरीर त्रण ॥ वैक्रेय ॥ तेजस ॥ कार्मण ॥ अवघेणा भवनपतिनी ॥ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी सात हाथनी । अने उत्तर वैक्रेय करे तो जघन्य अंगुलनो संख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टीलाख जोजननी । संघेण नथी ।

तेहना नवनी कायना देवतानी । ज० दस हजारवरसनी । उ० दोढ पल्योपमनी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० पोणा पल्यनी ॥ उत्तर दिसना असुरकुमारनी स्थिति ॥ ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक सागर झाझेरानी ॥ तेहनी देवीनी ज० दश हजार वर्षनी । उ० साझा च्यार पल्योपमनी ॥ तेहना नवनिकायना देवतानी ज० दसहजार वरसनी । उ० बे पल्योपम देसे उंणी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी । उ० एक पल्योपम देसे उंणीनी ॥ समोहिया मरण अने असमोहिया मरण ॥ ए बे मरण लाभे । चवण ते चविने पांच दंडकमां जाय ॥ प्रथ्वी ॥ पाणी ॥ वनस्पति ॥ मनुष्य ने तिर्यंच ए पाचमां जाय ॥ गइकहे० । मरिने बे गतिमां जाय मनुष्यने तिर्यंचमां ॥ आगइ ते आवे पण बेगतिनो ॥ मनुष्यने तिर्यंचनो ॥ प्राण दस लाभे । जोग त्रण ॥ इति दस भवनपतिना दस दंडक संपूर्ण ॥ ११ ॥ हवे पांचस्थावरना पांचदंडक कहेछे पृथवी ॥ १ ॥ पाणी ॥२॥ तेउ ॥३॥ वनस्पति ॥४॥ ए च्यार ने सरीर त्रण ॥ उदारिक ॥ तेजस ने कार्मण ॥ अने वायराने सरीर च्यार । उदारिक । वैक्रय । तेजस ने कार्मण ॥ अवघेणा प्रथ्वी पाणि तेउ

कार्मण कायजोग ॥३॥ अने वायराने पांच ते ॥ वैक्रेय ॥ वैक्रेयनो मिश्र ॥ ए बे वध्या । उपयोग त्रण ॥ बे अज्ञान ॥ एक अचक्षु दर्शन ॥ एवं त्रण । तहा तिमज आहार ले ज० त्रण दिसनो उ० ठ दिसनो ॥ ते वलि बे प्रकारनो. उज १ ने रोम २ ॥ कवलवर्जिने ॥ तथा ३ प्रकारनो ते सचेत ॥ अचेतने मिश्र ॥ उववाय ते आवीने उपजे । पृथ्वी पाणीने वनस्पतिमां ॥ त्रेविस दंडकना एक नारकी वरजीने ॥ अने तेउ वाउमां दस दंडकना आवीने उपजे ॥ पांच स्थावर ॥ त्रण विगलेंद्री ॥ मनुष्यने तिर्यंच ॥ एवं दसना ॥ स्थिति पृथ्वीनी ज० अंतर्मुहुर्त्तनी । उ० बाविस हजार वरसनी ॥ १ ॥ पाणीनी ज० अंतर्मुहुर्त्तनी । उ० सात हजार वरसनी ॥ २ ॥ तेउनी ज० अंतर्मुहुर्त्तनी उ० त्रण अहोरात्रीनी ॥ ३ ॥ वायरानी । ज० अंतर्मुहुर्त्तनी ॥ उ० त्रण हजार वरसनी ॥४॥ वनस्पतिनी ज० । अंतर्मुहुर्त्तनी ॥ उ० दस हजार वर्षनी ॥५॥ समोहियामरण अने असमोहियामरण । ए बे मरण ठे ॥ चवण ते चविने ॥ पृथ्वी पाणी ने वनस्पति ॥ दस दंडकमां जाय ॥ पांच स्थावर त्रण विगलेंद्रि ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमां जाय । अने तेउ वाउ नव दंडकमां जाय ॥ पांच स्थावर त्रण विगलेंद्रीने तिर्यंच ए

पर्या पांच मन नही ॥ द्रष्टी बे ॥ समकित द्रष्टीने मिथ्यातद्रष्टी ॥ दर्शन बेइंद्री तेइंद्रीने एक अचक्षुदर्शन ॥ चउरिंद्रीने बे दर्शन ॥ चक्षुदर्शन ने । अचक्षुदर्शन ॥ ज्ञान । बे मतिज्ञान ने । श्रुतज्ञान ॥ अज्ञान बे मतिअज्ञान । श्रुतअज्ञान ॥ जोग च्यार ऊदारिक ॥१॥ ऊदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥ कार्मणकाय जोग ॥ ३ ॥ व्यवहार वचन ॥ ४ ॥ ऊपयोग बेइंद्री तेइंद्रीने पांच ॥ बे ज्ञान बे अज्ञान । एक अचक्षुदर्शन ए पांच ॥ चउरिंद्रीने ऊपयोग छ ॥ बे ज्ञान ॥ बे अज्ञान । बे दर्शन ए छ । तहां कहेता तिमज आहार ले ॥ जघन्य अने उत्कृष्टो छदिसनो ॥ तथा त्रण प्रकारनो आहार ले । उज ॥१॥ रोम ॥२॥ ने कवल ॥३॥ ऊववाय ते आवीने ऊपजे दस दंडकना । पांच स्थावर त्रण विगलेंद्री मनुष्यने तिर्यंच ॥ ए दस ॥ स्थिति बेरिंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी ऊत्कृष्टी बार वरसनी ॥ तेइंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी । उत्कृष्टी उगण पचास दिवसनी । चउरिंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहुर्त्तनी ॥ उत्कृष्टी छ महिनानी ॥ समोहिया मरण । अने असमोहिया मरण बे छे ॥ चवण ते चविने जाय दस दंडकमां ॥ पांच स्थावर त्रण विगलेंद्री ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमां जाय । गइ ते मरीने बेगतिमां जाय ॥

जोजननी ॥ संघेण समुर्छिमने एक छेवटु ॥ गर्भजने छ संघेण । संठाणसमुर्छिमने । एक हुंड । गर्भजने छ संठाण ॥ कषाय च्यारे पण त्रिजंचने माया घणी ॥ संज्ञा च्यारे पण त्रिजंचने आहार संज्ञा घणी ॥ लेस्या समुर्छिमने त्रण पेहेली । गर्भज ने छ लेस्या ॥ इंद्री पांचे छे ॥ समुदघात समुर्छिमने त्रण ॥ वेदनी कषाय ने मारणांतिक अने गर्भज ने समुदघात पांच वेदनी कषाय मारणांतिक वैक्रेय ने तेजस ॥ समुर्छिम असंज्ञी ॥ गर्भजसंज्ञी ॥ समुर्छिममां वेद एक नपुंसक ॥ गर्भजने त्रण वेद ॥ पर्यासमुर्छिमने पांच मन नही ॥ अने गर्भजने पर्या छ ॥ द्रष्टी समुर्छिमने बे ॥ समकितने मिथ्यात ॥ गर्भजने त्रण द्रष्टी ॥ दर्शन समुर्छिमने बे चक्षूदर्शनने । अचक्षूदर्शन ॥ गर्भजने त्रण दर्शन ॥ ज्ञानसमुर्छिमने बे मतिज्ञान॥श्रुतज्ञान । गर्भजने त्रण ज्ञान॥अज्ञानसमुर्छिमने बे । मति अज्ञान ने श्रुतअज्ञान॥ गर्भजने त्रण अज्ञान ॥ जोग समुर्छिमने च्यार ॥ उदारिकना बे ॥ कार्मण ३ । व्यवहार वचन ४ ॥ गर्भजने तेर जोग आहारकना बे नही ॥ उपयोगसमुर्छिमने छ । बे ज्ञान बे अज्ञान बे दर्शन॥ गर्भजने नव उपयोग ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन । तिमज ॥ आहार ले ॥ जघन्य

जाय । आगइ ते आवे समुर्छिममां बे गतिनो । मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ अने गर्भजमां च्यारे गतिनो आवे ॥ प्राण समुर्छिमने नव । मन नही । अने गर्भजने प्राण दशे लाभे ॥ जोग समुर्छिमने बे ॥ कायजोग ने वचनजोग ॥ अने गर्भजने त्रण जोग ॥ मन वचन ने काय-जोग ॥ इति विसमो तिर्यंचपंचेंद्रीनो दंडक संपूर्ण ॥२०॥ हवे एकविसमो मनुष्यनो दंडक कहेछे ॥ तेमां समुर्छिम मनुष्यमां शरीर त्रण । उदारिक तेजस ने कार्मण । जुगलीयामां सरीर त्रण तेहीज ॥ कर्मभुमि मनुष्यमां सरीर पांच लाभे ॥ अवघेणा समुर्छिमनि जघन्य न उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ अने गर्भज मनुष्यनी भरत ईरवतमां आरानी परे जाणवी ॥ पेहेले आरे बेसता त्रण गाउनी ॥ उतरता बे गाउनी ॥ बीजे आरे बेसता बे गाउनी ॥ उतरता एक गाउनी ॥ त्रीजे आरे बेसता एक गाउनी ॥ उतरतां पांचसें धनुषनी । चोथे आरे बेसता पांचसें धनुषनी ॥ उतरतां सात हाथनी ॥ पांचमे आरे बेसतां सात हाथनी ॥ उतरतां एक हाथनी ॥ छठे आरे बेसतां एक हाथनी ॥ उतरतां मुंढा हाथनी ॥ पछे चढतां अवलासवली जाणवी ॥ ५ महाविदेहमां पांचसें । धनुषनी ॥ उत्तर

च्यार ॥ जाषाने मन नही॥ गर्न्नजने ७ पर्या ॥ दृष्टी समुर्छिमने एक मिथ्यात ॥ दस अकर्मजुमीमां बे दृष्टी ॥ समकित ने मिथ्यात ॥ वीस अकर्मजुमीने उपन्न अंतरधीपामां ॥ एक मिथ्यात दृष्टी ॥ कर्मजुमिना मनुष्यमां त्रणे दृष्टी ॥ दर्शन समुर्छिम अने जूगलीयाने ॥ बे । चक्षुदर्शन ने अचक्षुदर्शन । गर्न्नजने दर्शन च्यारे लाजे । दसअकर्मजुमीमां ज्ञान बे ॥ अने वीसअकर्म जूमी ने उपन्न अंतर दूीपा ने समुर्छिमसां नथी ॥ गर्न्नजने ज्ञान पांच । अज्ञान समुर्छिमने बे मति अज्ञानने श्रुतअज्ञान । गर्न्नजने त्रण । जोग समुर्छिमने त्रण । उदारिकना बे ने १ कार्मणकायजोग ए त्रण ॥ जूगलीयाने जोग ॥ ११ ते मनना ॥ ४ ॥ वचनना ॥ ४ ॥ उदारिकना ॥ २ ॥ कार्मण ॥ १ ॥ एवं जोग ॥ ११ ॥ गर्न्नजने पनर जोग ॥ दश अकर्मजूमी ते पांच देवकुरु पांच उत्तरकुरु ए दशमां ॥ उपयोग ६ ॥ ते बे ज्ञान ॥ २ ॥ अज्ञान ॥ २ ॥ दर्शन ए ॥ ६ ॥ अने वीस अकर्मजूमी ॥ ५६ ॥ अंतरदूीपामां ने समुर्छिमने च्यार ॥ बे अज्ञान बे दर्शन । गर्न्नजने बार उपयोग ॥ तिमज आहार ले तो । जघन्यने उत्कृष्टो ७ दिसनो ॥ तथा त्रण प्रकारे आहार

ते चवीने समुर्छिम दस दंडकमां जाय ॥ पांच स्थावर ने त्रण विगलेंद्री । मनुष्य ने तिर्यंच ॥ एवं दस ॥ जुगलीया एक देवगतिमां जाय॥ गर्भज चोविसे दंडकमां जाय ॥ गइ ते मरीने समुर्छिम बे गतिमां मनुष्य ने तिर्यंचमां जाय ॥ गर्भज मनुष्य पांच गतिमां जाय ॥ आगइ ते समुर्छिमने जुगलीयामां आवे तो बे गतिनो । मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ गर्भजमां च्यार गतिनो आवे ॥ प्राण समुर्छिमने आठ भाषा ने मन नही ॥ गर्भजने दस प्राण ॥ जोगसमुर्छिमने एक कायानो ॥ गर्भजने त्रण जोग ॥ इति एकविसमो मनुष्यनो दंडक संपूर्ण ॥२१॥

हवे बाविसमो वाणव्यंतरनो दंडक ॥ तेमां सरीर त्रण ॥ वैक्रेय ॥ तेजस ने कार्मण ॥ अवघेणा ज० अंगु० असं० उ० सात हाथनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० । उ० लाख जोजननी ॥ संघयण नथी । संठाण एक समचउरंस ॥ कषाय च्यारे पण देवताने लोभ घणो । संज्ञा च्यारे पण देवताने ॥ परिग्रह संज्ञा घणी ॥ लेस्या च्यार पेहेली । इंद्री पांचे । समुद्घात पांच । आहारकने केवल नही ॥ संज्ञी असंज्ञी बे ॥ वेद बे ॥ स्त्रीने पुरुष ॥ पर्या ५ भाषा मन भेलाबांधे । दृष्टी त्रण ॥ दर्शन त्रण । ज्ञान त्रण । अज्ञान त्रण॥

समचउरंस । कषाय च्यारे ॥ संज्ञा च्यारे लेस्या एक तेजु । इंद्री पांचे ॥ समुद्घात पांच आहारकने केवल नही । संज्ञी छे ॥ वेद बे । पर्या ५ भाषा मन भेला बांधे ॥ दृष्टी त्रण ॥ दर्शण त्रण । ज्ञान त्रण ॥ अज्ञान त्रण ॥ जोग अगीयार । च्यार मनना च्यार वचनना त्रण कायाना ते वैक्रेय । वैक्रेयनो मिश्र ने कार्मण कायजोग ॥ एवं अगीयार ॥ उपयोग नव । त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान । त्रण दर्शन ॥ एवं नव ॥ तिमज आहार ले तो जघन्य ने उत्कृष्टो छदिसनो ॥ तथा बे प्रकारे ॥ उज ने रोम ते पण सुत्र ने अचेत आहार ॥ उववाय ते आविने उपजे ॥ बे दंडकना ॥ मनुष्य ने तिर्यंचना । स्थिति चंद्रमाना देवतानी ज० पा पल्यनी । उ० एक पल ने लाख वरसनी ॥ तेहनी देवीनी ज० पा पल्यनी ॥ उ० अरध पल्य ने पचास हजार वरसनी ॥ सूर्यना देवतानी ज० पा पल्यनी ॥ उ० एक पल्य ने हजार वरसनी ॥ तेहनी देवीनी ज० पा पल्यनी ॥ उ० अरध पल्य ने पांचसे वरसनी ॥ ग्रहनादेवतानी ज० पा पल्यनी ॥ उ० एक पल्यनी ॥ तेहनी देवीनी ज० पा पल्यनी उ० अरध पल्यनी ॥ नक्षत्रना देवतानी । ज० पा पल्यनी ॥ उ० अरध पल्यनी ॥ तेहनी देवीनी ॥

परिग्रहसंज्ञा घणी । लेस्या पेहेले बीजे देवलोके एक तेजु लेस्या । त्रीजे चोथे पांचमे एक पद्म लेस्या । छठाथी मांडी नव ग्रैवेयकमां ॥ एक सुकल लेस्या । अने पांच अनुत्तर विमानमां १ परमसुकल लेस्या ॥ इंद्री पांचे ॥ समुद्घात बार देवलोकमां पांच ॥ आहारक ने केवल नही ॥ नव ग्रैवेयक ने पांच अनुत्तर विमानमां त्रण ॥ वेदनी कषाय ने मारणांतिक ॥ संज्ञी एकला छे ॥ वेद पेहेले बीजे देवलोके बे स्त्रीवेद । पुरुष वेद ॥ त्रीजाथी ते सर्वार्थसीद्ध लगे एक पुरुष वेद ॥ पर्या ५ भाषा मन भेला बांधे ॥ दृष्टी बार देवलोकमां त्रण दृष्टी ॥ नव ग्रैवेयकमां बे दृष्टी समकित ने मिथ्यात ॥ पांच अनुत्तर विमानमां एक दृष्टी समकित ॥ बार देवलोक ने नव ग्रैवेयकमां त्रण ज्ञान त्रण अज्ञान त्रण दर्शन ॥ पांच अनुत्तर विमानमां अज्ञान नथी । जोग अगीयार च्यार मनना च्यार वचनना त्रण कायाना ते वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ने कार्मण कायजोग ॥ एवं अगीयार ॥ उपयोग बार देवलोक ने नव ग्रैवेयकमां नव ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन एवं नव ॥ पांच अनुत्तर विमानमां छ उपयोग ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण दर्शन ए छ ॥ तिमज आहार ले तो जघन्य ने ॥ उत्कृष्टो

सा० ॥ दसमे देवलोके जि० उगणीस सा० । उ० वीस सा० ॥ अग्यारमे देवलोके ज० वीस सा० ॥ उ० एकविस सा० ॥ बारमे देवलोके ज० एकविस सा० । उ० बाविस सा० ॥ प्रथम ग्रैवेयके ज० बाविस सा० । उ० त्रेविस सा० ॥ बीजी ग्रैवेयके ज० त्रेविस सा० उ० चोविस सा० । त्रीजी ग्रैवेयके ज० चोविस सा० ॥ उ० पचीस सा० चोथी ग्रैवेयके ज० पचीस सा० । उ० छविस सा० । पांचमी ग्रैवेयके ज० छविस सा० । उ० सत्याविस सा० ॥ छठि ग्रैवेयके ज० सताविस सा० उ० अठाविस सा० ॥ सातमी ग्रैवेयके ज० अठाविस सा० । उ० उगणत्रिस सा० ॥ आठमी ग्रैवेयके ज० उगणत्रिस सा० । उ० त्रिस सा० । नवमी ग्रैवेयके ज० त्रीस सा० नी । उ० एकत्रिस सा० । च्यार अनुत्तरविमानमां ज० एकत्रीस सा० । उ० तेत्रिस सा० ॥ सर्वार्थसिद्धमां ज० ने उ० तेत्रीस सा० । समोहिया ने असमोहिया ए बे मरण लाभे । चवण ते चविने पेहेला बीजा देवलोकना देवता पांच दंडकमां जाय । पृथ्वी पाणी वनस्पति मनुष्य ने तिर्यंच ए पांच ॥ त्रीजाथी ते आठमा देवलोकना देवता बे दंडकमां जाय मनुष्य ने त्रिजंचमां ॥ नवमेथी मांडीने सर्वार्थसीद्धलगेना देवता ।

ते आवीने उपजे । एक दंडक ते मनुष्यनो । सिद्धनी स्थितिनो छेडो नथी ॥ सिद्धने मरण नथी ॥ सिद्धने चववूं नथी ॥ गइ ते मरीने सिद्धने कोइ गतिमां जावुं नथी । आगइ ते सिद्धमां एक मनुष्यनो आवे ॥ सिद्धने प्राण नथी । पण नाव प्राण बे छे केवल ज्ञान ने केवल दर्शन। सिद्धने जोग नथी ॥ इति सिद्धनो द्वार इतिश्री लघुदंडकना बोल संपूर्ण.

॥ अथ श्री गतागतना बोल. ॥

पहेलीनर्के आगत ॥ २५ भेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मभूमी ॥ ५ संज्ञीतिर्यंच ने ॥ ॥ ५ ॥ असंज्ञीतिर्यंच ॥ ए ॥ २५ ॥ ना प्रजाप्तानि ॥ गत ॥ ४० भेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मभूमी ने ॥ ५ ॥ संज्ञीतिर्यंच । ए ॥ २० ॥ ना अप्रजाप्ता । ने प्रजाप्तानि ॥ १ ॥ बिजी नर्के आगत ॥ २० भेदनि ते ॥ ५ ॥ असंज्ञीतिर्यंचना प्रजाप्ता वर्ज्या । गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत् ॥ २ ॥ त्रिजीनर्के आगत ॥ १९ ॥ भेदनि ते । पूर्वे ॥ २० ॥ कह्या तेहमांथि ॥ १ भूजपर वर्ज्या । गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत् ॥ ३ ॥ चोथी नर्के आगत १८ भेदनि । ते ।

४० ज्ञेदनि ॥ ते पूर्वे ५० ज्ञेद कह्या तेहमांथि ॥ ५ हेमवय ने ॥ ५ एरणवय । ए १० ना प्र-
जाता वर्ज्या । गत ॥ ४६ ॥ नि पूर्ववत् ॥ १० ॥ पहिला किल्विषीमां आगत ॥ ३० ज्ञेदनि
ते । पूर्वे ४० कह्या ॥ तेहमांथि ॥ ५ हरिवास ॥ ५ रमक वास । ए १० प्रजाता वर्ज्या । गत
४६ नि पूर्ववत् ॥ ११ ॥ त्रिजा देवलोकथि आठमा देवलोकसुधि ॥ ६ देवलोक ॥ ए लोकांतिक
॥ २ किल्विषी । ए १७ जातिना देवतामां आगत ॥ २० ज्ञेदनि ते ॥ १५ कर्मज्नूमी ॥ ५
संज्ञीतिर्यंच । ए २० ना प्रजाप्तानि ॥ गत ४० नि ते पनर कर्मज्नूमी पांच संज्ञीतिर्यंच
ए वीशना अप्र० प्रजा० एवं ४० ॥ १२ ॥ नवमा देवलोकथि ते सर्वार्थसिद्धलगे ४ देवलोक
॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तर विमान ॥ ए १८ मां आगत ॥ १५ कर्मज्नूमीना प्रजाप्तानि ।
गत ३० नि ते पनर कर्मज्नूमीना अप्र० प्रजा० एवं ३० ॥ १३ ॥ पृथ्वि ॥१॥ पाणि ॥ २ ॥
वनस्पति ॥३॥ ए ३ मां आगत ॥ २४३ ज्ञेदनि ते ॥ १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता
॥१५॥ कर्मज्नूमीना अप्र० ने प्रजाप्ता । एवं ॥ १३१ ने ॥ ४८ ज्ञेदतिर्यंचना । एवं १७ए नी
लट ने ॥ ६४ ज्ञेद देवताना ते ॥ १० ज्नवनपति ॥ १५ परमाधामी ॥ १६ वाणव्यंतर ॥ १०

रह्या ॥ थलचरनी गत ॥ ५२१ नी ते ५२७ मांहिथी ॥ पांचमी १ छठी २ सातमी ३ ॥ ए त्रण नर्कना अप्र० प्रजा० ए छ वर्ज्या ॥ शेष ५२१ रह्या ॥ उरपरनी गत ५२३ नी ते ॥ ५२७ मांहिथि छठी १ सातमी २ ए बे नर्कना अप्र० प्रजा० ए च्यार वर्ज्या शेष ५२३ रह्या ॥ भुजपरनी गत ५१७ नी ते त्रीजी १ चोथी २ पांचमी ३ छठी ४ सातमी ५ ए पांचना अप्र० प्रजा० ए दस वर्ज्या शेष ५१७ रह्या ॥ खेचरनी गत ५१९ नी ते ५२७ मांहिथि चोथी १ पांचमी २ छठी ३ सातमी ४ ए च्यारना अप्र० प्रजा० ए आठ वर्ज्या शेष ५१९ रह्या ॥ ॥ १८ ॥ समुर्छिम मनुष्यमां आगत १७१ भेदनि ते ॥ १७९ लटमांथि ॥ ८ तेउ वाउना वर्ज्या । शेष १७१ नि । गत ॥ १७९ लटनि ॥ १९ ॥ संज्ञीमनुष्यनि आगत २७६ भेदनि ॥ ते १७९ लटमांहिथि तेउ वाउना ८ वर्ज्या । शेष १७१ रह्या अने ॥ ९९ जातिना देवताना प्रजाप्ता एवं ॥ २७० ॥ ने ६ नर्कना प्रजाप्ता ॥ सर्व मिली २७६ नि । गत । ५६३ भेदनि ॥ २० ॥ ३० अकर्मभूमीमां आगत २० भेदनि ते ॥ १५ कर्मभूमी ॥ ५ संज्ञीतिर्यंच । ए ॥ २० ना प्रजाप्तानि ॥ गत जुदी जुदी कहेछे ॥ ५ देवकुरु ॥ ५ उत्तरकुरुनि गत ॥ १२८ ॥

नि ॥३१॥ स्त्रीवेद ॥ १ ॥ पुरुषवेद ॥ २ ॥ ए ॥ बेमां आगत ३७१ नेदनि ते मिथ्यातिनी परे । गतपुरुषनि ५६३ नि । स्त्रीवेदनि ॥ ५६१ नि ते सातमी नरकना २ नेद वर्ज्या ॥ ३२ ॥ नपुंसकवेदमां आगत ॥ २७५ नेदनि ते ॥ एए जाति देवताना प्रजासा ॥ १७ए नि लट ॥७॥ नारकी । ए ॥ २७५ ॥ नि ॥ गत ॥ ५६३ ॥ नेदनि ॥ ३३ ॥ नारकी देवता अपर्यासा मरे नहि माटे अपर्यासा मरती वखते गणवा नहि ॥ इति गतागतना बोल संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री गुणस्थानद्वार. ॥

गाथा ॥ नाम१ लखगुण२ ठिइ३॥ किरिया४ सत्ता५ बंध६ वेदेय७ उदय८ उदिरणाएच्चेव ॥ निज्जरा १० नाव ११ कारणा १२ ॥१॥ परिसह १३ मग्ग १४ आयाय १५ ॥ जीवाय नेदे १६ जोग १७ उविउंग १८॥ लेस्सा १एचरण २० सम्मत्तं २१॥ अप्पाबहुच्च २२ गुणठाणेहिं॥२॥ ए द्वार २२ नी गाथा २ कहि । हवे पहेलो नामद्वार कहे ठे ॥ पहेलुं मिथ्यात्व गुणठाणुं ॥ १ ॥ बिजुं सास्वादान गु० ॥ २ ॥ त्रिजुं समामिथ्यात्व गु० ॥ ३ ॥ चोथुं अविरति सम्यक्त्वदृष्टि गु० ॥ ४ ॥

तेहने मीथ्यात्व कहिये॥ अने जैनमार्गे आत्मा अकृतिम अखंड अविनाशी नित्य छे । शरिर मात्र व्यापक छे ॥ तिवारे गौतम स्वामि । हाथ जोडि मान मोडी वंदणा नमस्कार करीने श्रीभगवंतने पूछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो ॥ तिवारे श्रीभगवंते कह्युं जे । जीवरूप दडि ने । कर्मरुप ॥ गेडिये करि ॥ ४ गति ॥ २४ दंडक ८४ लाख जीवाजोनि मांहि वारंवार परिभ्रमण करे पण संसारनो पार पामे नहि ॥ १ ॥ हवे बिजा गुणठाणाना लक्षण कहे छे ॥ जिम कोइ पुरुष खिरखांडनुं भोजन जम्यो तिवारपछि वमन कर्युं ॥ तिवारे कोइक पुरुषे पुछयुं भाइ कांइ स्वाद रह्यो । तिवारे कहे जे थोडो स्वाद रह्यो । ते समान समकित अने वम्यो ते समान मिथ्यात्व ॥ १ ॥ बिजो दृष्टांत कहेछे । जेहवो घंटानो नाद पहेलो गहेर गंभीर । पछि रणको रहि गयो ॥ गहेर गंभीर समान समकित ने रणको रहि गयो ते समान मिथ्यात्व ॥ २ ॥ हवे त्रिजो दृष्टांत आंबानो । जीवरूप आंबो ने प्रणामरूप डाल । समकितरूप फल । ते मोहरूप वायरे करि ॥ प्रणामरूप डालथि । समकितरूप फल त्रुटयुं । मिथ्यात्वरूप धरतीये आवि पड्युं नथि

श्रावक कहे जे महालाभ थाय ॥ तिवारे कहे जे हुं पण वांदवा आवुं । इम कहिने मिश्रगुणठाणावाले ॥ वांदवाने पग उपाड्यो ॥ तेहवामां विजो महामिथ्यात्वी मित्र मिल्यो ॥ तेणे पुछ्युं के स्याभणि जावछो । तिवारे मिश्रगुणठाणावालो कहे जे । साधु महापुरुषने वांदवा जइये छै ॥ तिवारे महामिथ्याति कहे जे । एहने वांदे सुं थाय । ए तो मेला घेला छे ॥ इम कहिने भोलवि नांख्यो पाछो बेठो ॥ तिवारे साधुज्ञानिने श्रावके वांदिने पुछ्युं जे स्वामि वांदवा पग उपाड्यो तेहने सुं गुण निपनो । तिवारे ज्ञानिगुरु कहेछे । जे काला अड्द सरिखो हतो ते ॥ छडिदाल सरिखो थयो । कृष्णपक्षी टलिने शुक्लपक्षी थयो ॥ अनादि कालनो उलटो हतो ते सुलटो थयो । समकित सन्मुख थयो पण पग भरवा समरथ नहि ॥ तिवारे गौतम स्वामि हाथ जोडी मान मोडि वंदणा नमस्कार करिने श्रीभगवंतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे श्रीभगवंत कहेछे ते ॥ भीव ४ गती ॥ २४ ॥ दंडकमां भमिने पण देशे उणो अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनमां उत्कृष्टो संसारनो पार पामसे ॥ ३ ॥ चोथुं अविरतिसम्यक्त्व दृष्टिगुणठाणुं तेहना सुं लक्षण ॥ ७ प्रकृति ने

लमां बंध पाम्हे नहि ॥ नरकनुं आयुष ॥ १ ॥ जवनपतिनुं आयुष ॥ २ ॥ तिर्यंचनुं आयुष ॥ ३ ॥ वाणव्यंतरनुं आयुष ॥ ४ ॥ ज्योतिषीनुं आयुष ॥ ५ ॥ स्त्रीवेद ॥ ६ ॥ नपुंसकवेद ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ बोलमां आयुषनो बंध पाम्हे नहि ॥ ते जीव ॥ ७ ॥ आचार समकितना आराधि । चतुर्विधसंघनि वाछलका परमहर्ष जक्तिजर थको जघन्य पहेले देवलोके उपजे ॥ उत्० । बारमे देवलोके जपजे । पन्नवणानि शाखे ॥ पूर्वे कर्मने उदये करिने व्रत पच्चखाण करि न शके । पण अनेक वरसनि श्रमणोपाशकनि प्रव्रज्यानो पालक कहिये ॥ दशाश्रुतस्कंधे श्रावक कह्याछे ते माटे ॥ दर्शन श्रावकने अविरय समदृष्टी कहिये ॥ ४ ॥ पांचमुं देशविरतिगुणठाणुं तेहना सुं लक्षण । इग्यार प्रकृतिने क्षयोपशमावे । ते ॥ ७ पूर्वे कहि ते । अने अप्रत्याख्यानी क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥२॥ माया ॥ ३ ॥ लोज ॥ ४ ॥ एवं ॥ ११ प्रकृतिने क्षय करे तो क्षायकसमकित कहिये ॥ अने ११ प्रकृ० ढांके उपशमावे तो उपशम समकित कहिये । अने ११ प्रकृतिने कांइक ढांके कांइक क्षय करे तेहने क्षयोपशम समकित कहिये ॥ पांचमे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि जावथि नो-

क्षयकरे तो क्षायिकसमकित कहिये। अने १५ प्रकृतिने ढांके तो उपशमसमकित कहिये॥ अने कांइ ढांके ने कांइ क्षय करे तो क्षयोपशमसमकित कहिये ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवंतने पुछता हवा। ते जीवने सुं गुण निपनो । तवारे श्रीभगवंते कह्युं जे। ते जीव द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि जीवादिक नव पदार्थने तथा नोकारसीआदि छमासि तप जाणे सरदहे परूपे फरसे ॥ साधुपणुं एक भवमां नवसेंवार आवे। ते जीव जघन्य त्रिजे भवे मोक्ष जाय॥ उत्० १५ भवे मोक्ष जाय ॥ आराधीक जीव। जघ० पहिले देवलोके उपजे। उत्०। अनुत्तर विमाने उपजे॥१७ भेदे संजम निर्मल पाले॥ १२ भेदे तपस्या करे पण जोग चपल। कषाय चपल ॥ वचन चपल दृष्टि चपलताना अंशछे। तेणे करिने यद्यपि उतम अप्रमादिथका रहेछे। तोपण प्रमाद रहेछे माटे प्रमादपणे करि ॥ तथा कृष्णादिक लेशा॥अशुभ जोग॥कोइक काले प्रणति प्रणमेछे माटे ॥ कषाय प्रकृष्टमत्त थइ जायछे तेहने प्रमत्त संजति-गुणठाणुं कहिये ॥ ६ ॥ सातमुं अप्रमत्त संजतिगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण । पांच प्रमाद छांडे तिवारे सातमे गुणठाणे आवे। ते ॥ ५ प्रमादना नाम ॥ मद विसय कसाया । निद्रा विगहा

आदि दृढ छमासी तप जाणे। सरदहे परुपे फरसे। ते जीव । जघन्य। तेज भवे मोक्ष जाय ॥ उत्० । त्रिजे भवे मोक्ष जाय। इहांथि श्रेणि ॥२ करे। उपशमश्रेणि॥१॥ ने क्षपक श्रेणि ॥२॥ उपशम श्रेणिवालो जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने उपशमावतो इग्यारमा गुणठाणा सुधिजाय॥पडिवाइ पण थाय । हायमान परिणामपण परिणमे ॥ अने क्षपकश्रेणिवालो जीव ते । मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने खपावतो शुरू मुलमांथि निर्जरा करतो। नवमे दशमे गुणठाणे थइने वारमे गुणठाणे जाय। अपडिवाइज होय। वर्द्धमान परिणाम परिणमे।हवे नियट्टिबादरनो अर्थ ते निवर्त्योछे वादर कषायथि। वादर संपराय क्रियाथि श्रेणि करवे। अभ्यंतर परिणामे । अध्यवसाय स्थिरथते वादर चपलताथि निवृर्त्योछे । माटे नियट्टिबादरगुणठाणुं कहिये । तथा बिजुं नाम । अपूर्व करणगुणठाणुं पण कहिये ॥ सामाटे जे ॥ कोइ काले जीवे पुर्वे श्रेणि करि नहति । अने ए गुणठाणे पहिलुंज करण ते ॥ पंडितवीर्यनुं आवरण क्षयकरणरुप करणपरिणामधारा वर्द्धनरुप श्रेणि करे॥ तेहने अपूर्वकरण गुणठाणुं कहिये॥८॥ हवे नवमुं अनियट्टिबादरगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ एकविश प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ॥१७

८

नाथ । ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारं भगवंते कह्युं । ते जीव ॥ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदी देईने छमासी तप निरभिलाष निर्वंछक निर्वेदकतापणे निराशी अव्यामोह अविभ्रमपणे जाणे सरदहे परुपे फरसे ते जीव । जघन्य० तेज भवे मोक्ष जाय । उत्० । त्रीजे भवे मोक्ष जाय ॥ सूक्ष्म थोडिक लगारेक पातलीसी संपराय-क्रिया रहि छे तेहने सुक्ष्मसंपराय गुणठाणुं कहिये ॥ १० ॥ इग्यारमुं उपशांतमोहगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ २७ प्रकृति ने उपशमावे ते २७ प्रकृति पूर्वे कहि ते । अने संजलनो लोभ ॥ १ ॥ एवं ॥ २८ ॥ मोहनीय कर्मनि प्रकृतिने उपशमावे सर्वथा ढांके । भस्म भारि प्रछन्न अग्निवत् । तिवारं गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवंतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे श्रीभगवंते कह्युं । ते जीव जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि नोकारसी आदि देइने छमासी तप वीतराग भावे जथाख्यात चारित्रपणे ॥ जाणे सरदहे परूपे फरसे । एहवामां जो काल करे तो । अनुत्तर वीमानमां जाय पछि मनुष्य थइ मोक्ष जाय । अने जो सूक्ष्म लोभनो उदय थाय तो कषाय अग्नि प्रकटे

नाथ । ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे भगवंते कह्युं । ते जीव ॥ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदी देईने छमासी तप निरभिलाष निर्वछक निर्वेदकतापणे निराशी अव्यामोह अविभ्रमपणे जाणे सरदहे परुपे फरसे ते जीव। जघन्य० तेज भवे मोक्ष जाय। उत्० । त्रीजे भवे मोक्ष जाय ॥ सूक्ष्म थोडिक लगारेक पातलीसी संपराय-क्रिया रहि छे तेहने सुक्ष्मसंपराय गुणठाणुं कहिये ॥ १० ॥ इग्यारमुं उपशांतमोहगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ २८ प्रकृति ने उपशमावे ते २७ प्रकृति पूर्वे कहि ते । अने संजलनो लोभ ॥ १ ॥ एवं ॥ २८ ॥ मोहनीय कर्मनि प्रकृतिने उपशमावे सर्वथा ढांके । भस्म भारि प्रछन्न अग्निवत् । तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवंतने पुछता हवा। स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे श्रीभगवंते कह्युं । ते जीव जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि नोकारसी आदि देइने छमासी तप वीतराग भावे जथाख्यात चारित्रपणे ॥ जाणे सरदहे परुपे फरसे । एहवामां जो काल करे तो । अनुत्तर वीमानमां जाय पछि मनुष्य थइ मोक्ष जाय । अने जो सूक्ष्म लोभनो उदय थाय तो कषाय अग्नि प्रकटे

क्षायकसमकित ॥६॥ पंडितवीर्य ॥७॥ शुकलध्यान ॥ ८ ॥ केवलज्ञान ॥ ९ ॥ केवलदर्शन ॥ १० ॥ ए ॥ १० ॥ बोलसहित ॥ जघन्य । अंतर्मुहुर्त्त । उत्० । देशेउणी पुर्वक्रोडिसुधि ॥ विचरे घणा जीवने तारि प्रतिबोधि निहाल करिने ॥ बिजा त्रिजा शुकलध्यानना पायाने ध्याइने चउदमे जाय ॥ सजोगी ते शुभ मन वचन कायाना जोगसहित छे वाहाज्य चलोप करण छे । गमनागमनादिक चेष्टा शुभ सहित छे । केवलज्ञान केवलदर्शन । उपयोग सम-यांतर । अविछिन्नपणे शुरू प्रणमे माटे सजोगि केवलिगुणठाणुं कहिये ॥१३॥ हवे चउदमुं अजोगी केवली गुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण । शुक्लध्याननो चोथो पायो समुछिन्नक्रिय अनंतर अप्रतिपाती । अनिवृत्तिध्याता मनजोग रुंधि वचनजोग रुंधि कायजोग रुंधि आन प्राणनिरोध करि रूपातीत परमशुकलध्यान ध्याता ॥ ७ ॥ बोलसहित विचरे । तरमे ॥१८॥ बोल कह्या तेहमांथि । सजोगी ॥ १ ॥ सलेशी ॥ २ ॥ शुकल लेशी ॥ ३ ॥ ए त्रण वर्जीने शेष ॥ ७ ॥ बोलसहित सकल गिरीनो राजा मेरुतेहनि परे । अडोल । अचल । स्थिर अवस्थाने पामे शैलेशी पणे रहि पंचलघु अक्षर उच्चार प्रमाण काल रहि ॥ शेष वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥

सादियासपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि पण छे ने अंत पण छे ते पडिवाइ समद्रष्टीना मिथ्यात्वआश्रि ॥ तेहनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्त ॥ उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणी पछि अवश्य समकित पामिने मोक्ष जाय ॥ ३ ॥ १ ॥ बिजा गुणठाणानि स्थिति । जघ० ॥ १ ॥ समय । उत्० ॥ ६ आवलिकाने ७ समयनि ॥ २ ॥ त्रिजा गुणठाणानि स्थिति । ज० । उ० अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ ३ ॥ चोथागुणठाणानि स्थिति ज० ।अंतर्मुहूर्त्त । उ० ॥ ६६ सागरोपम जाझेरानि ते २२ सागरोपमनि स्थितिये ३ वार बारमे देवलोके उपजे । त्रण पूर्वक्रोडि अधिक मनुष्यना नव आश्रि जाणवि ॥ तथा बेवार अनुत्तर विमानमां ३३ सागरोपमनि स्थितिये उपजे ॥ ३३ छ ०सठ सागरोपम ने पूर्वक्रोडि ३ अधिक मनुष्यना नव आश्रि जाणवि ॥ ४ ॥ पांचमा छठा तेरमा गुणठाणानि स्थिति ज० अंत० उ० देशेउणि ते साडाआठ वर्षे उणि पूर्वक्रोडनि ॥ सातमांथि ते इग्यारमा गु० सुधि ज० ॥ १ समय० ॥ उ० अंत० । बारमां गु० । स्थिति ज० । उ० । अंत० ॥ चउदमा गुणठाणानि स्थिति पांच ह्रस्व अक्षर अ[१] । इ[२] । उ[३] । ऋ[४] । लृ[५] । बोलवा प्रमाणे जाणवि । इति त्रिजो स्थितिद्वार समाप्तं ॥ ३ ॥

वमे गु० ॥ ७ ॥ कर्म वांधे आयुष वर्जिने ॥ दशमे गुण० ॥ ६ कर्म वांधे । आयुष ॥ १ ॥
ने मोहनीय । ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे गुण० ॥ १ सातावेदनीय वांधे ॥
चउदमे गुण० । अवंध० ॥ इति ६ ठो ॥ बंधद्वार समाप्तं ॥ ६ ॥ हवे॥७ मो वेद द्वारने ॥८
मो उदयद्वार नेला कहेछे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते दशमा गुणठाणासुधि ॥ ८ कर्म वेदे
ने ॥ ८ नो उदय इग्यारमे बारमे ॥ ७ कर्म वेदे ने ॥ ७ नो उदय मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे
चउदमे ॥ ४ ॥ कर्म वेदे ने ॥ ४ नो उदय ॥ वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥
गोत्र ॥ ४ ॥ इति ॥ ७ मो वेदने ८ मो उदयद्वार समाप्तं ॥ ७ ॥ ८ ॥ हवे नवमो उदीरणाद्वार
कहेछे । पहिला गुणठाणाथि मांडिने ॥ ७ मा गुणठाणासुधि ॥ ८ कर्मनि उदीरणा । तथा
नी करेतो आयुष वर्जिने ॥ आठमे नवमे गुणठाणे ॥ ७ कर्मनि उदीरणा ते आयुष वर्जिने ।
तथा ६ नि करे तो । आयुष ॥१॥ मोहनीय ॥२॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने । दशमे ॥ ६ नि उदी-
रणा करे ॥ आयुष ॥१॥ मोहनीय ॥२॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने । अने ५ नि करे तो । आयुष
॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ वेदनीय ॥ ३ ॥ ए ३ वर्जिने॥इग्यारमे बारमे गु० ५ नि उदीरणा॥

वारमा सुधि क्षपकश्रेणि वालाने ॥ ४ नाव उदय ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २॥ क्षायक ॥ ३ ॥ परिणामिक ॥४॥ तेरमे चउदमे गु० ॥ ३ नाव । उदय ॥ १ ॥ क्षायक ॥ २ ॥ परिणामिक ॥ ३ ॥ सिद्धमां ॥ २ नाव । क्षायक ॥ १ ॥ परिणामिक ॥ २ ॥ इति ११ मो नावद्वार समाप्तं ॥ हवे ॥ १२ मो कारणद्वार कहे छे ॥ कारण ॥ ५ कर्मबंधना ॥ मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ प्रमाद ॥ ३ ॥ कषाय ॥ ४ ॥ जोग ॥ ५ ॥ पहिले । त्रिजे गु० ॥ ५ कारण लाने ॥ बीजे चोथे ॥ ४ कारण लाने ॥ मिथ्यात्व वर्जिने । पांचमे छठे गुण० ॥ ३ कारण लाने ॥ मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ ए ॥ २ वर्जिने ॥ सातमेथि ते दशमा गुणठाणासुधि ॥ २ कारण लाने ॥ कषाय ॥ १ ॥ जोग ॥ २ ॥ ए ॥ २ लाने ॥ इग्यारमे वारमे तेरमे १ कारण लाने ते ॥ जोग १ ॥ चउदमे कोइ कारण नथि । इति १२ मो कारणद्वार समाप्तं ॥१२॥ हवे १३ मो परिसहद्वार कहेछे ॥ पहिलाथि ते चोथा गुणठाणा सुधि यद्यपि परिसह २२ लाने पण दुःखरूप छे । निर्जरारूप प्रणमे नहि ॥ पांचमाथि ते ए मा गुणठाणासुधि २२ परिसह लाने ॥ एक समये २० वेदे । टाढनो तिहां तापनो

कहेठे ॥ पहेले गुणठाणे मार्गणा ॥ ४ ॥ त्रीजे चोथे पांचमे सातमे जाय ॥ बिजे गुण० मार्गणा ॥ १ ॥ पडे तो पहेले आवे पण चडवुं नथि ॥ त्रिजे मार्गणा ॥ ४ ॥ पडे तो पहेले आवे । अने चडे तो चोथे पांचमे अने सातमे जाय ॥ चोथे मार्गणा ॥ ५ पडे तो पहेले बिजे त्रिजे आवे । अने चडे तो पांचमे सातमे जाय ॥ पांचमे मार्गणा ॥ ५ पडे तो पहेले बिजे त्रिजे चोथे आवे । अने चडे तो सातमे जाय ॥ छठे मार्गणा ॥ ६ पडे तो पहेले बिजे त्रिजे चोथे पांचमे आवे । अने चडे तो सातमे जाय ॥ सातमे मार्गणा ॥ ३ पडेतो छठे चोथे आवे । अने चडे तो ८ मे जाय ॥ आठमे मार्गणा ॥ ३ पडे तो सातमे चोथे आवे । चडे तो नवमे जाय ॥ नवमे मार्गणा ॥ ३ पडे तो आठमे चोथे आवे ॥ अने चडे तो दशमे जाय ॥ दशमे मार्गणा ॥ ४ पडे तो नवमे चोथे आवे । चडे तो इग्यारमे बारमे जाय ॥ इग्यारमे मार्गणा ॥ २ काल करे तो अनुत्तर विमाने जाय ॥ पडे तो दशमाथी पहेलासुधि आवे । चडवुं नथि ॥ बारमे मार्गणा ॥ १ तेरमे जाय ॥ पडवुं नथि तेरमे मार्गणा १ ॥ चौदमे जाय । पडवुं नथि । चउदमे मार्गणा एके नथि मोक्ष जाय । इति

एवं ॥ ३३ ॥ हवे अजीव उदयनिष्पन्नना ३० बोल पामे ॥ ५ ॥ वर्ण ॥ २॥ गंध ॥५॥ रस ॥८॥ स्पर्श ॥ ५ ॥ शरीर ॥ ५॥ शरीरना व्यापार । एवं ॥ ३०॥ एवं उन्नय मलिने ॥ ३३ ॥ ने ॥ ३० ॥ त्रेशठ नेद उन्नयन्नावना कह्या ॥ १ ॥ हवे उपशमन्नावे ॥ ११ बोल छे । च्यार कषायनो उपशम ॥ ४ ॥ रागनो उपशम ॥ ५ ॥ द्वेषनो उपशम ॥ ६ ॥ दर्शनमोहनीयनो उपशम ॥ ७ ॥ चारित्रमोहनियनो उपशम ॥ ८ ॥ एवं ॥ ८ मोहनियनि प्रकृति ॥ अने उवसमिया दंशणलद्धि ते समकित ॥ए॥ उवसमियाचरित्तलद्धि ॥१०॥ उवसमियाअकषायछउमह्वीतरागलद्धि ॥ ११ ॥ एवं ॥ ११ ॥ हवे क्षायक न्नावे ३७ बोल छे ॥ ५ ज्ञानावरणिय ॥ ए दर्शनावरणिय ॥ २ ॥ वेदनीयनि ॥ १ ॥ रागनि ॥ १ ॥ द्वेषनि ॥ ४ कषायनि ॥ १ दर्शनमोहनीयनि ॥ १ चारित्रमोहनीयनि ॥ ४ आयुषनि ॥२ नामनि २॥ गोत्रनि ५ अंतरायनि । एवं ३७ ॥ प्रकृतिने क्षय करे तेहने क्षायकन्नाव कहिये ।ते ए बोल पामे ॥ क्षायकसमकित ॥ १ ॥ क्षायकजथाख्यातचारित्र ॥ २ ॥ केवलज्ञान ॥ ३ ॥ केवलदर्शन ॥ ४ ॥ अने क्षायकदानादिलब्धि ५ ॥ एवं ए बोल ॥ ३ ॥ हवे क्षयोपशमन्नावे ॥ ३० बोल ते ॥ ४ ज्ञान

मिथ्यात्व । एवं ५७ हेतु ॥ पहेले गुणठाणे ॥ ५५ हेतु ते आहारकना २ वार्जिने ॥ १ ॥ बिजे गु० ५० हेतु ते ५५ मांथि ५ मिथ्यात्व टल्या ॥२॥ त्रिजे गु० ४३ हेतु ते ५७ मांथि अनंतानुबंधि ४ ॥ उदारिकनो मिश्र १ वैक्रेयनो मिश्र २ ॥ आहारकना २ मिथ्यात्व ५ एवं १४ वर्ज्या ॥ शेष ४३ ॥ ३ ॥ चोथे गु० ४६ हेतु ते पूर्वे कह्या ४३ ते अने उदारिकनो मिश्र १॥ वैक्रेयनो मिश्र २ ॥ कार्मण कायजोग ३ ॥ ए ३ वध्या ॥ सर्व मलिने ४६ ॥ ४ ॥ पांचमे गुणठाणे ४० हेतु ते पूर्वे ४६ कह्या तेहमांथि अप्रत्याख्यानीनि चोकडि ४ ॥ त्रशकायनोअव्रत १ ॥ कार्मणकायजोग १ ॥ एवं ६ घटया ॥ शेष ४० हेतु ॥ ५ ॥ छठे गुण० २७ हेतु पूर्वे ४० कह्या तेहमांथि प्रत्याख्यानावरणियनि चोकडि ४ ॥ पांच स्थावरनो अव्रत ५॥ इंद्रिय ५ नो अव्रत ॥ ५ ॥ ने एक मननो अव्रत ॥ १ ॥ एवं १५ वर्ज्या ॥ शेष २५ रह्या ने ॥ आहारकना २ ॥ वध्या । एवं सर्व मलि २७ हेतु ॥६॥ सातमे गुण० २४ हेतु ते पूर्वे २७ कह्या तेहमांथि ॥ उदारिकमिश्र १ ॥ वैक्रेयमिश्र २ ॥ आहारकमिश्र । ए ३ वर्ज्या । शेष २४ हेतु ॥७॥ आठमे गुण० २२ हेतु ते पूर्वे २४ कह्या तेहमांथि । वैक्रेयनो १ ॥ आहारकनो २ ॥ ए २ वर्ज्या । शेष

सागर जाजेरानुं अथवा १३२ सागर जाजेरानुं ते ६७ सागर चौथे गुण० रहे ॥ अंत०त्रीजे गु० रहि पाछो चौथे गुण० ६६ सागर रहि मिथ्यात्वे आवे ॥बीजाथि मांमिने इग्यारमा गुणठाणासुधि ज० अंत०अथवा पल्यनो असंख्यातमो जाग ते एटला काल विना उपसम श्रेणीकरिने पमे नहीं उत्० अर्द्धपुजल देशे उणुं। बारमे तेरमे ने चौदमे गुण० आंतरुं नथि। ए एक जीवआश्रि इति ४ अंतरद्वार समाप्तं ॥४॥ हवे ५मो ध्यानद्वार कहेछे पहेले बिजे त्रिजे गुण० २ ध्यान पहेला॥चोथे पांचमे गुण० ३ ध्यान पहेला॥ छठे गुण० २ ध्यान आर्त्त १ ने धर्म ध्यान ॥२॥ सातमे गुण० १ धर्मध्यान०। आठमेथि मांमिने चौदमा गुण० १ शुकलध्यान। इति ५ मो ध्यानद्वार समाप्तं ॥ ५ ॥ हवे छठो फरसनाद्वार कहेछे। पहेलुं गुणठाणुं १४ राजलोक स्पर्शे ॥ बिजुं गुण० हेठुं पंमगवनथि ते ६ ठि नरक लगे फरसे तथा उंचुं अधोगाम विजयथि ते ए ग्रैवेयकसुधि फरसे ॥२॥ त्रिजुं गुण० लोकनो असंख्यातमो जाग फरसे॥३॥ चोथुं गुण० अधोगाम विजयथि १२मा देवलोकसुधि फरसे अथवा पंमगवनथि छठी नरक सुधी फरसे ॥४॥ पांचमुं गुण० पण इमज अधोगाम विजयथि १२ मा देवलोक सुधि फरसे ॥ ५ ॥ छठाथि

॥ अथ श्री महोटो बासठियो. ॥

गाथा ॥ जीव १ गइ २ इंदिय ३ काए ४ ॥ जोग ५ वेय ६ कसाय ७ लेस्सा ८ सम्मत्तं ए माण १० दंसण ११ संजय १२ उवउंग १३ आहारे १४ ॥१॥ जासग १५ परित्त १६ पज्जत्त १७ सुहूम १८ सन्नि १ए जवि २० चरिमेय २१॥जीवेयखेत्ते बंधे । पुग्गलए महादंरुएचेव ॥ २ ॥ उपली २ गाथानो अर्थ विस्तारी कहे छे ॥

१ समुच्चय जीवमां जीवना जेद १४ ॥ गुणठाणा ॥१४॥ जोग ॥१५॥ उपयोग ॥१२॥ लेशा ॥६॥ इति प्रथम द्वार ॥ १ नरक गतिमां जीवना जेद ३ । संज्ञीनो अप्र० १ ने प्रजातो ॥ २ । असंज्ञी पहेली नरकनो अप्र० ।३॥ गुण० ४ प्रथम । जोग । ११ । ते ४ मनना ४ वचनना १ वैक्रेय । वैक्रेयनो मिश्र ।१। कार्मणकायजोग । एवं ११ । उपयोग॥ए॥ ३ ज्ञान ।३। अज्ञान ३ दर्शन लेशा ३ प्रथमनी

२ तिर्यंचनि गतिमां जीवना जेद १४॥ गुण० ५ ॥ प्रथमना ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ए ॥३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन ॥ लेशा ६ ॥

णी १ ॥ तेहथि मनुष्य समुर्छिम भेळवता
असंख्यातगुणा२॥तेहथीनारकिअसंख्या-
तगुणा ३॥तेहथि तिर्यंचणी असंख्यातगु-
णि ४ ॥ तेहथि देवता असंख्यातगुणा५॥
तेहथिदेवीसंख्यातगुणि ६॥तेहथि सिद्ध-
भगवंत अनंतगुणा ७ । तेहथि तिर्यंच
वनस्पति भेलवतां अनंतगुणा ८ ॥ इति
बिजो द्वार ॥

९ सइंदियामांजीवनाभेद १४ ॥ गुण० १२
प्रथमना ॥ जोग १५ उपयोग १०॥ केवल-
ज्ञान१केवलदर्शन२ ए २ वर्जीने॥ लेशा ६॥
एकेंद्रियमां जीवना भेद ४॥ सूक्ष्म एकें-
द्रियनो अप्रजासो १ ने प्रजासो २॥ बादर-
एकेंद्रियनो अप्रजासो ३ ने प्रजासो ४ ॥
गुण० १ प्रथमनुं ॥ जोग ५ उदारिक १
उदारिकनो मिश्र २ वैक्रेय३वैक्रेयनो मिश्र
४ कार्मणकायजोग ५ ॥ उपयोग ३ ॥ बे
अज्ञान ने ॥ १ अचक्षु दर्शन॥ लेशा ४॥

५ बेइंद्रिय १ तेइंद्रिय २ चउरिंद्रिय ए ३ मां
॥जीवना भेद २ पोतपोतानो अप्रजासो१
ने प्रजासो २ ॥ गुण० २ पहेला । जोग४॥
२ उदारिकना ॥१ कार्मणनो ॥ ने ॥ १ व्य-
वहार वचननो । एवं ४॥ उपयोग बेइंद्रिय
तेइंद्रियमां ५ । २ ज्ञान ॥ २ अज्ञान ॥ ने ॥

५ पृथ्वीकाय १ अपकाय २ वनस्पतिकाय ३ ॥ ए ३ मां जीवना भेद ४। गुण० १ । जोग ३ ॥ उप० ३ । लेशा ४ ॥

६ तेउकाय १ वाउकाय २ ॥ ए २ मां जीवना भेद ४ ॥ गुण० १ ॥ जोग तेउमां ३ ने ॥ वाउमां ५ ते २ वैक्रेयना वध्या ॥ उप० ३ ॥ लेशा ३ ॥

७ त्रशकायमां जीवना भेद १० ते ४ एकेंद्रियना वर्ज्या ॥ गुण० १४ ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा ६ ॥

८ अकायामां जीवना भेद नथि गुण० नथि । जोग नथि उप० २ लेशा नथि ए-हनो अल्प बहुत्व । सर्वथी थोमा त्रसकाया १ । तेहथि तेउकाया असंख्यातगुणा २। तेहथि पृथ्वीकाया विशेषाहिया ३ ॥ तेहथि अपकाया विशेषाहिया ४ ॥ तेहथि वाउकाया विशेषाहिया ५ ॥ तेहथि अकाया अनंतगुणा ६ ॥ तेहथि वनस्पतिकाया अनंतगुणा ७ ॥ तेहथि सकायाविशेषाहिया ८ ॥ इति चौथो द्वार ॥

१ सजोगीमां जीवना भेद १४ गुण० १३ उपव्या बे नही ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

पुरुषवेदमां १५ ॥ अने स्त्रीवेदमां १३ ते आहारकना बे वर्जिने ॥ उप० १०॥लेशा ६

४ नपुंसकवेदमां जीवना नेद १४ । गुण० ए ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० केवलज्ञान १ केवलदर्शनवर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

५ अवेदीमां जीवनो नेद१ संज्ञीनो प्रजासो॥ गुण० ६ नवमाथि ते १४ मां सुधि॥ जोग ११ । ४ मनना ४ वचनना ने २ उदारिकना ॥ १ कार्मणनो एवं ॥११॥ उपयोग ए। ३ अज्ञान वर्जिने॥लेशा १ शुकल ॥ एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोमा पूरुषवेदी ॥१॥ तेहथि स्त्रीवेदी संख्यातगुणी २ ॥ तेहथि अवेदी अनंतगुणा३॥तेहथि नपुंसकवेदी अनंतगुणा ४ ॥ तेहथि सवेदी विशेषाहिया ५ ॥ इति छठो द्वार ॥

१ सकषायीमां जीवना नेद १४ ॥ गुण० १० प्रथमना ॥जोग १५॥ उपयोग १०॥ केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

४ क्रोध १ मान २ माया ३ ए ३ मां जीवनानेद १४ ॥ गुण ए ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० ॥ लेशा ६ ॥

५ लोनकषायीमां जीवना नेद १४ ॥ गुणठाणा १० पहेला ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० ॥ लेशा ६ ॥

७ शुकललेशीमां जीवना नेद २ ॥ संज्ञिना गुण० १३ प्रथमना । जोग १५ ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा १ शुकल ॥

ए अलेशीमां जीवनो नेद १ संज्ञिनो प्रजासो ॥ गुण० १ चौदमुं ॥ जोग नथि ॥ उपयोग २ ॥ केवल ज्ञान १ ने केवलदर्शन २ ॥ लेशा नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा शुकल लेशी १ ॥ तेहथि पद्मलेशी संख्यातगूणा २ ॥ तेहथि तेजुलेशीसंख्यातगुणा ३ ॥ तेहथि अलेशी अनंत गुणा ४ ॥ तेहथि कापुतलेशी अनंतगुणा ५ ॥ तेहथि निललेशी वीशेषाहिया ६ ॥ तेहथि कृष्णलेशी विशेषाहिया ७ ॥ तेहथि सलेशी विशेषाहिया ८ ॥ इति ८ मो द्वार ॥

१ समुच्चय सम्यक्त्वदृष्टिमां जीवना नेद ६ ॥ बेइंद्रिय १ ॥ तेइंद्रिय २ ॥ चउरिंद्रिय ३ ॥ असंज्ञीपंचेंद्रिय ४ ॥ ए ४ ना अप्रजास्ता ॥ अने संज्ञीपंचेंद्रियनो अप्रजासो ॥ नेप्रजासो एवं ६ ॥ गुण० १२ पहेलुं त्रिजुं वरजीने ॥ जोग १५ ॥ उपयोग ए ॥ ३ अज्ञान वार्जिने ॥ लेशा ६ ॥

२ सास्वादान सम्यक्त्वदृष्टिमां जीवना नेद ६ ॥ गुण० बिजुं ॥ जोग ॥ १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उपयोग ६ ॥ ३ ज्ञान ॥ ३

किति संख्यातगूणा५॥तेह थि क्षायकसम-
किति अनंतगूणा ६॥ तेह थि समुचयसम-
किति विशेषाहिया ७ तेह थि मिथ्यात्व-
दृष्टि अनंतगूणा इति ए मो द्वार ॥

१ समुचयज्ञानिमां जीवना नेद ६॥ बेइंड्रिय
१। ते इंड्रिय २। चउरिंड्रिय ३। असंज्ञीपं-
चेंड्रिय ४।ए४ना अप्रजाप्ता ॥ ने प्रजाप्ता ॥
एवं ६॥गुण०१२ पहेलुं त्रिजुं वर्जिने ॥जोग
१५॥उपयोग ए॥५ ज्ञानने ४दर्शन॥लेशा ६

३ मतिज्ञानी १ श्रुतज्ञानीमां २ जीवना नेद
६ ॥ गुण० १० पहेलुं त्रिजुं तेरमुं चौदमुं
वर्जिने ॥ जोग १५॥ उप० ७॥लेशा ६ ॥

४ अवधिज्ञानीमां॥जीवना नेद २।संज्ञीना॥
गुण१०॥ जोग १५॥उपयोग० ७ लेशा० ६ ॥

५ मनपर्यवज्ञानीमां जीवनो नेद १ संज्ञीनो
प्रजाप्तो ॥ गुण०७। बठा थि बारमांसुधि ॥
जोग१४ कार्मणनो वर्जिने॥उप० ७॥ लेशा६

६ केवलज्ञानीमां जीवनो नेद १ संज्ञिनो
प्रजाप्तो ॥ गुण० २ तेरमुं ने १४ मुं ॥ जोग
७ ॥ उपयोग २ ॥ लेशा १ परम शुकल ॥

७ अज्ञानीमां जीवना नेद १४। गुण २ पहेलुं
ने त्रिजुं ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने॥
उप० ६। ३ अज्ञान ३ दर्शन ॥ लेशा ६ ॥

ए मतिश्रुत अज्ञानीमां जीवना नेद १४ ॥

गहनो अल्पबहुत ॥सर्वथि थोमा अवधि दर्शनी १ ॥ तेहथि चक्षुदर्शनी असंख्यातगूणा २ ॥ तेहथि केवलदर्शनी अनंतगूणा ३॥ तेहथि अचक्षुदर्शनी अनंतगूणा ४ ॥ इति ११ मो द्वार ॥

१ संजतिमां जीवनो भेद१संज्ञीनो प्रजासो॥ गूण०एठगाथि ते १४मा सुधि॥जोग १५॥ उप० ए । ३ अज्ञानवर्जिने ॥लेशा० ६ ॥

३ सामायक १ छेदोपस्थापनीय २ ए बे चारित्रमां जीवनो भेद १ संज्ञिनो प्रजासो ॥ गूण० ४ छठाथी ए मां सुधि ॥ जो-

ज्ञान ने ३ दर्शन एवं ७ ॥ लेशा० ६ ॥

४ परिहार विशुद्धचारित्रमां जीवनोभेद संज्ञी प्र०१॥ गूण० २ छठुं ने सातमुं ॥जोगए। ४ मनना ४ वचनना ॥ने॥१॥ उदारिकनो ॥ एवं ए ॥ उप० ७ ॥ लेशा० ३ उपलि॥

५ सुक्ष्मसंपरायचारित्रमां जीवनो भेद १ संज्ञीनो प्र० ॥ गुण० १ दशमुं ॥ जोग ए ॥ उपयोग ७ ॥ लेशा १ शुकल ॥

६ यथाख्यातचारित्रमां जीवनो भेद१संज्ञीनो प्र०॥गुण०४ उपल्या॥ जोग११।४मनना ४ वचनना २ उदारिकना ने१कार्मणनो॥

१ सागरोवउत्तामां जीवना भेद १४। गुण० १४। जोग १५। उप० १२। लेशा ६

२ अणागारोवउत्तामां जीवना भेद १४ ॥ गुण० १३ दशमुं वर्जिने ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोका अणागारोवउत्ता १ ॥ तेहथि सागारोवउत्ता संख्यातगुणा २ इति १३ मो द्वार ॥

१ आहारकमां जीवना भेद १४ ॥ गुण० १३ पहेला ॥ जोग १४ कार्मणनो वर्जिने ॥ उप० १२ ॥ लेशा० ६ ॥

२ अणाहारकमां ॥ जीवना भेद ८॥ सात अप्रजाप्ता ने १ संज्ञिनो प्रजाप्तो । एवं ८ ॥ गुण० ५ पहिलुं बिजुं चोथुं तेरमुं ने चौदमुं ए ५ ॥ जोग १ कार्मणनो ॥ उपयोग १० ॥ मनपर्यवज्ञान १ ने चक्षुदर्शन २ ए २ वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोका अणाहारक १ ॥ तेहथि आहारक असंख्यातगुणा २ ॥ इति १४ मो द्वार ॥

१ भासगामां जीवना भेद ५ ॥ बेइंद्रिय १ । तेइंद्रिय २। चउरिंद्रिय ३। असंज्ञीपंचेंद्रिय ४ । संज्ञीपंचेंद्रिय ५ । ए ५ ना प्रजाप्ता॥गुण०१३ प्रथमना॥जोग१४ कार्म-

नंतगुणा ३ ॥ इति १६ मो द्वार ॥
१ प्रजाशामां जीवना ज्ञेद ७ ॥ गुण० १४॥ जोग १५ । उप० १२ । लेशा । ६ ॥
२ अप्रजाशामां जीवनाज्ञेद ७ ॥ गुण० ३। ते । पहेलुं ॥ बिजुं । ने चोथुं ॥ जोग ५ ॥ ते । २ उदारिकना ॥ २ वैक्रेयना ने १ ॥ कार्मणनो ॥ उप० ए ॥ ३ ज्ञान ॥ ३ अज्ञान ३ दर्शन ॥ एवं ए ॥ लेशा६॥
३ नोप्रजाशा नोअप्रजाशामां । जीवना ज्ञेद नथी ॥ गुण० नथी ॥ जोग नथी । उप० २ केवलज्ञानने केवलदर्शन ॥ लेशा नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमानो प्रजाशानो अप्रजाशा १ ॥ तेहथि अप्रजाशा अनंतगुणा २ ॥ तेहथि प्रजाशा संख्यात गुणा ३ ॥ इति १७ मो द्वार ॥
१ सुक्ष्ममां जीवना ज्ञेद २ ॥ सुक्ष्म एकेंडियनो अप्रजाशो १ ने प्रजाशो २ ॥ गुण० १ प्रथमनुं ॥ जोग ३ बे उदारिकना ने । १ । कार्मणनो । उप० ३ बे अज्ञान ॥१॥ अचक्षुदर्शन ॥ ए ३ ॥ लेशा३॥
२ बादरमां जीवना ज्ञेद १२ ॥ ते २ सुक्ष्मनावर्ज्या । गुण० १४ । जोग १५ ॥ उप० योग १२ ॥ लेशा ६ ॥
३ नोसुक्ष्मनोबादरमां जीवना ज्ञेद नथी ॥

६७ सुक्ष्म वाउकाया अप्रजाप्ता विसेषाही०
६८ सुक्ष्म तेउकाया प्रजाप्ता संख्यातगुणा०
६९ सुक्ष्म पृथ्वीकाया प्रजाप्ता विसेषाही०
७० सुक्ष्म अपकाया पर्याप्ता विसेषाहीया
७१ सुक्ष्म वाउकाया पर्याप्ता विसेषाहीया
७२ सुक्ष्म निगोदीया अपर्याप्ता अ०
७३ सुक्ष्म निगोदीया प्रजाप्ता सं०
७४ अभव्य अनंतगुणा
७५ पडिवाइ समद्रष्टी अनंतगुणा
७६ सिद्धभगवंतजी अनंतगुणा
७७ बादर वनस्पति प्रजाप्ता अनंत०
७८ बादर प्रजाप्ता विसेषाहीया

७९ बादर वनस्पति अपर्याप्ता असं०
८० बादर अप्रजाप्ता विसेषाहीया
८१ समुचय बादर विसेषाहीया
८२ सुक्ष्म वनस्पति अपर्याप्ता असं०
८३ सुक्ष्म अपर्याप्ता विसेषाहीया
८४ सुक्ष्म वनस्पति पर्याप्ता संख्यात०
८५ सुक्ष्म पर्याप्ता विसेषाहीया
८६ समुचय सुक्ष्म विसेषाहिया
८७ भव्य सिद्धीया विसेषाहीया
८८ निगोदीया जीव विसेषाहीया
८९ वनस्पति जीव विसेषाहीया
९० एकेंद्रीया जीव विसेषाहीया

नाराच संघयण ने ॥ १ ॥ समचउरंस संठाण जाणवुं ॥ स्त्री पुरुषना रूप सोजाग्य । घणा । दिपे । ए आराने विषे अठम जक्ते आहारनी इछा उपजे। तेवारे शरीर प्रमाणे आहार करे । धरतिनी सरसाइ साकर सरखी जाणवी । उतरते आरे खांम सरखि जाणवि । ए आराने विषे ॥ १० ॥ दश प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछीत सुख पहोचाम्हे । ते कल्पवृक्षनां नाम गाथा । कहे छे मतं गायजिंगा तुमियंगा । दिव जोइ चित्तगा । चित्तरसा मणवेगा । गिहगारा अणियगणाउ ॥ १ ॥ ए गाथा सूत्र पाठे कही तेनो अर्थ कहे छे ॥ मतंगाय कहेता । मिठा मधुरा रसना कल्पवृक्ष थइ आवे ॥ १ ॥ जिंगा कहेता। रत्नजमाव जाजनना कल्पवृक्ष थइ आवे ॥ २ ॥ तुमियंगा कहेता ॥ ४ए ॥ उगणपचास जातिनां वाजिंत्रना । क० थ० ॥ ३ ॥ दिव कहेता । रत्नजमाव दीवीउना क० ॥ ४ ॥ जोइ कहेता । सूर्यनी जोतिना क० ॥ ५ ॥ चित्तगा कहेता । चित्रामणसहित फूलनी मालाना क० ॥६॥ चितरसा क० चितने गमे तेवा रसवति जोजनना । क० ॥ ७ ॥ मणवेगा क० । रत्नजमाव आजरणना । क० ॥ ८ ॥ गिहगारा क० । बेतालीस जोमिया अवासना । क० ॥ए॥ अनिय-

तेवारे शरीरप्रमाणे आहार करे। धरतिनि सरसाई खांरू सरखि । उतरते आरे गोल सरखि जाणवी। ए आरे १० प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछीत सूख पोचारू।ठेक थाकतां।जूगलना आउखा आरू ॥ ठ मास रहे। तेवारे जुगल परज्ञवनुं आउखुं वांधे। तेवारे जूगलिणी एक जोरूलुं प्रसवे। ढोरुनी प्रतिपालण ॥६४ दिन करे। जुगल जुगलीणीने। क्षण मात्रनो विजोग न परू। एकने ठीक ने एकने बगासूं आवे। मरिने देवता थाय। एना शरीरनुं निहरण देवता करे॥ गति १ देवतानि जाणवि। इति बिजो आरो संपूर्ण ॥ हवे बीजो आरो उतरीने। त्रिजो आरो बेठो तिवारे। अनंता वर्ण गंध रस स्फर्सना पर्यव अनंताहीणा थया। ए आरो ॥ बे कोराकोरू सागरोपमनो जाणवो। ए आरो सूखम दुखम नामा जाणवो। सुख घणुं ने दुख थोरुं जाणवुं ॥ ए आराने विषे एक गाउनुं देहमान ने ॥ १ एक पल्योपमनुं आउखुं जाणवुं ॥ उत्तरते आरे ५०० पांचसें धनुषनुं देहमान ने कोरू पूर्वनुं आउखुं जाणवुं। ए आराने विषे वज्रऋषभनाराच संघयण। ने समचउरंस संठाण जाणवुं। ए आराने विषे ॥ ६४ चोसठ. पांसली जाणवी। उत्तरते आरे ३२ बत्रिस पांसली जाणवि। ए आराने विषे चौथ ज्ञक्ते

आदि देईने ७२ बोतेर कला सिखवि । अनुकंपा निमिते ॥ २० विस लाख पूर्वलगे कुवरपणे रह्या ॥ ६३ त्रेसठ लाख पूर्वलगे राज्य जोगव्युं । भरतने राज्य आपिने । चार हजार पुरुष संघाते संजम लिधो । एक लाख पूर्व लगे संजम पाल्यो ॥ केवल पामिने । अष्टापद पर्वत उपरे । पद्मासने बेसीने । दसहजार साधु संघाते स्वामि निर्वाण पधार्या । ते स्वामिना ६ कल्याणिक थया । पेहेले कल्याणीके उत्तरासाढा नक्षत्रमां सर्वार्थसिध विमान थकी चविने मातानि कुंखे उपना ॥ १ ॥ बीजे क० उ० जन्म्या ॥ २ ॥ त्रीजे क० उ० राज्य बेठा ॥ ३ ॥ चोथे क० उ० संजम लिधो ॥ ४ ॥ पांचमे क० उ० केवलज्ञान उपनुं ॥ ५ ॥ ए ५ ने ६ ठुं क० अभीच नक्षत्रमां मोक्ष पधार्या । ए ६ ॥ ए आराने विषे गति पांच जाणवि मोक्षवधी । इति त्रीजो आरो संपूर्ण ॥३॥ हवे त्रीजो आरो उतरीने चोथो आरो बेठो । तेवारे अनंता वर्ण गंध रस स्फर्सना पर्यवहीणा थया । ए आरो १ कोडाकोड सागरोपमनो बेतालीस हजार वर्ष उणो जाणवो । ए आरो दुसम सूसम नामे जाणवो । दुःख घणुं ने सूख थोडुं जाणवुं । ए आराने विषे ५०० पांचसे धनुषनुं देहमान ने । क्रोड पूर्वनुं आउखुं ॥ उतरते

वंतने वंदणा नमस्कार करीने कह्युं जे स्वामी रुडुं जाणजो हुं तमारो गर्भ साहरुं छुं । ते वारे माता देवानंदाजीने अवस्थापिनी निद्रा मुकिने नाभिथि गर्भ साहरीने त्रिसलादेवीजीनी कुखे मुक्यां तिहां स्वामि सर्वे थईने सवानव मासे जन्म्या । त्रिस वर्ष घरमां रह्या । एकाकी पणे संयम लिधो । संयम लेईने साडाबार वर्ष ने एक पखवाडिया सुधि । आकरा तप जप ज्ञान ध्यान करिने । स्वामि केवलज्ञान केवलदर्शन पाम्या । बहोतेर वर्षनुं आउखुं जोगविने । चोथा आराना ३ वर्ष ने साडा आठ महिना बाकी रह्या । तेवारे महाविरस्वामि निर्वाण पधार्या । ते स्वामिना ६ कल्याणिक थया । तेमां ५ कल्याणिक तो उतराफाल्गुनी नक्षत्रमां थया । ते चवण क० ॥ १ ॥ गर्भ साहारण क० ॥ २॥ जन्म क० ॥ ३ ॥ दिक्षा क० ॥ ४ ॥ केवलज्ञान क० ॥ ५ ॥ ए पांचने । स्वांति नक्षत्रमां निर्वाण पधार्या ॥ ६ ॥ ए आराने विषे गति ५ जाणवि ॥ महाविरस्वामि निर्वाण पधार्या तेज वखते गौतमस्वामिने केवलज्ञान उपनुं । ने ते १२ बार वर्ष केवल प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधार्या । तेहज वेलाए सुधर्मास्वामिने केवल ज्ञान उपनुं । ते ॥ ८ आठ वर्ष सुधि केवल

उतरते आरे १ छेवट्टुं संघयण नें ॥ १ ॥ हुंरु संठाण जाणवुं । ए आरानें विषे ॥ १६ ॥ सोल पांसली ॥ उतरते आरे ॥ ८ आठ पांसलिजाणवि । ए आराने विषे । दिन दिन प्रते आहारनि इछा उपजे । तेवारे शरीर प्रमाणे आहार करे । धरतिनी सरसाइ । कांइक सारेरि जाणवि । उतरते आरे कुंजारना निजाभानी छार सरखि जाणवी । हवे पांचमा आरानां लक्षण ३२ कहेछे मोटा नगर ते गामडा सरिखा थाशे ॥ १ ॥ गाम ते मसाण सरिखा थासे ॥ २ ॥ जला कुलनां छोरु ते दास दासीपणा करशे ॥ ३ ॥ प्रधान ते लालचि थाशे ॥ ४ ॥ राजा ते जम रूप सरिखा थाशे ॥ ५ ॥ जला कुलनी स्त्री ते लजा रहित थाशे ॥ ६ ॥ भला कुलनी स्त्री वेस्या सरिखि थाशे ॥ ७ ॥ पोताना पुत्र पोताने छांदे चालशे ॥ ८ ॥ शिष्य गुरुना अपवाद बोलशे ॥ ए ॥ दुर्जन लोक सुखि थाशे ॥ १० ॥ सजन लोक दुखि थाशे ॥ ११ ॥ दुर्भिक्ष दुकाल घणा पडशे ॥ १२ ॥ उंदर सर्पादीकनी दाढ घणी थाशे ॥ १३ ॥ ब्राह्मण अर्थना लोभी थाशे ॥ १४ ॥ हिंसा धर्मना परूपक घणा थाशे ॥ १५ ॥ एक धर्मनां घणा जेद थाशे ॥ १६ ॥ मिथ्याति देवता घणा पुजाशे ॥ १७ ॥ मिथ्याति लोक घणा थाशे ॥ १८ ॥ माणसने देवदर्शन दुर्ल-

। ए ःआराने त्रिपे॥ १ एक उपवास करशे ते मास खमण सरिखो थाशे॥ ए आराने त्रिपे ज्ञान तथा सूत्र सर्वे विछेद जाशे। तेमां दसवैकालिकना ॥ अध्ययन ॥ ४ ॥ पहेला रहेशे । ते उपरे ॥४॥ जीव एका अवतारि थाशे । तेनां नाम । दुपसह नामा साधु ॥ १ ॥ फल्गुणि नामा साध्वि ॥ २ ॥ नागील श्रावक ॥ ३ ॥ नागश्रि श्राविका ॥ ४ ॥ ते आषाढ सुद १५ पूनमने दिने शक्रेंद्रनुं आसन चलसे। तेवारे शक्रेंद्र उपयोग मुकि जोसे जे आज पांचमो आरो उतरीने काले छठो आरो बेससे । तेवारे शक्रेंद्र आवशे । ते ॥ ४ ॥ जीवने कहेसे जे काले छठो आरो बेससे । माटे आलवो पडिकमो निसलथाउ । ते ४ जीव सर्व जीवने खमाविने संथारो करशे । ते वारे संवर्तक वायरो थाशे । तेणे करिने पहाड । पर्वत । गढ कोठा वाव कुवा सरोवर सर्वे वीसराल थाशे ॥ वैताढ पर्वत १ गंगा २ सिंधु ३ ऋषभकुट ४ लवण समुद्र निखाडी ए ५ वर्जिने शेष सर्व स्थानक त्रुटी पडशे॥ ते ४ जीव समाधि प्रणामे काल करीने देवलोकमां जाशे तेवारे ४ बोल विछेद जाशे पेहले पोहरे । जैन धर्म विछेद जसे ॥ १॥ बीजे पोहरे ॥ ३६३ ॥ पाखंडि मिथ्यातिनो धर्म विछेद जाशे ॥ २ ॥ त्रीजे पोहरे राज नीति

७२ बीलनां मनुष्य सांझे ने प्रभाते । मठ कठ काढीने वेलुमां चारसे । सूर्य घणो तपसे टाढ घणी पडशे। तेणे करी सीझ थाइ रहेशे। तेहनो आहार करशे। तेना हाडका चांमडा तिर्यंच चाटीने रहेशे ॥ मानवीना माथानि तुंबलीमां पाणी लाविने पिशे । एणिपरे २१ एकविस हजार वर्ष पुरा करसे। पांचमा आराना प्राणी नवकार रहित समकित रहित व्रत पचखाण रहित हशे ते एहवा छठा आराने विषे आविने अवतरशे । माटे एहवुं जाणिने जे जीव जैन धर्म करशे ते जीव सुखी थाशे ॥ इति छ आराना बोल संपुर्ण ॥

॥ अथ श्री चोविस जिनांतरा. ॥

अढार कोडाकोडि सागरने आंतरे ॥ पेहेला श्री आदिनाथ तिर्थंकर थया ॥ विनिता नगरीने विषे ॥ नाभी राजा पिता । मरुदेवा राणी माता ॥ हेमवर्णे ॥ वृषभ लंछन । पांचसें धनुषनुं देहमान । चोरासी लाख पूर्वनुं आउखुं ॥ वीस लाख पूर्व कुंवर पणे रह्या । त्रेसठ लाख पूर्वनुं राज्य पाल्युं ॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ।

नाथ तिर्थंकर थया ॥ सावर्थी नगरीने विषे जीतार्थ राजा पिता ॥ सेन्यादेवी राणी माता ॥ हेमवर्णे ॥ अस्व कहेतां घोमानुं लंछन । चारसें धनुषनुं देहमान । साठ लाख पूर्वनुं आयुष्य पनर लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या । चुमालीस लाख पूर्वनुं राज पाल्युं ॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछि । चौद वर्षे केवल ज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप । चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने । एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ३ ॥ त्रीजा संभवनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछि । दस लाख क्रोम्रि सागरोपमने आंतरे । चोथा अभीनंदन तिर्थंकर थया । विनीता नगरीनेविषे । संवर राजा पिता । सीधार्था राणी माता । हेमवर्णे ॥ वानरनुं लंछन । साम्रा त्रणसें धनुपनुं देहमान । पचास लाख पूर्वनुं आयुष्य ॥ तेमां साम्रा बार लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या । साम्री छत्रीस लाख पूर्वनुं राज पाल्युं । एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछि अढार वर्षे केवल ज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने एक हजार साधु संघाते स्वामी निरवाण

श्रावक श्रावीकारुप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने। त्रोंहोंतेर साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ६ ॥ छठा पद्म प्रभ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोह्रोंता पछि ॥ नव हजार कोडि सागरने आंतरे । सातमा सुपार्श्वनाथ तिर्थंकर थया ॥ वाणारसी नगरीने विषे। पइठ राजा पिता। पृथ्वि देवि राणी माता। हेमवर्ण ॥ साथीयानुं लंछन । बसे धनुषनुं देहमान । विस लाख पूर्वनुं आयूष ॥ तेमां पांच लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या ॥ चौद लाख पूर्वनुं राज पाल्युं। एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि॥ नव मासे केवल ज्ञान उपनुं॥ साधु साधवी। श्रावक श्राविकारुप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने । पांचसें साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ७ ॥ सातमा सुपार्श्वनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछे। नवसें कोडि सागरनें आंतरे। आठमा चंद्रप्रभ तिर्थंकर थया। चंदनपुरी नगरीने विषे। महासेनराजा पिता ॥ लखमणादेवी राणी माता॥उज्वल वर्णे। चंद्रमानुं लंछन। दोढसो धनुष्यनुं देहमान। दशलाख पूर्वनुं आयूष तेहमां अढीलाख पूर्व कुंवरपणे रह्या। साडाछ लाख पूर्वनुं राज पाल्युं । एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा

आउखुं। तेमां पा लाख पुवे कुंवरपणं रह्या। अधे लाख पूर्वनु राज पाल्यु ॥ पा लाख पूर्वनं। प्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लीधा पछे। त्रण मासे केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापी द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने। एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥१०॥ हवे दशमा सितलनाथ तिर्थंकर। निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि ॥ एक कोडि सागर तेमां ॥१००॥ सागर। छासठ लाख छविस हजार वरसने उणे-आंतरे॥ इग्यारमा श्रेयांसनाथ तिर्थंकर थया। सिंहपुरी नगरीने विषे। विश्नु राजा पिता॥ विश्नु देवी राणी माता। हेम वर्णे। गेंडानुं लंछन॥ एसी धनुष्यनुं देहमान। चोरासी लाख वर्षनुं आयूष॥ तेमां॥ २१ लाख वरस कुंवरपणे रह्या॥ ४२ लाख वरसनुं राज पाल्युं ॥ २१ लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लीधा पछि छ मासे केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने। एक हजार साधु संघाते निर्वाण मोक्षने विषे पोहोंता ॥ १ ॥ हवे इग्यारमा श्रेयांसनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी ॥ ५४ सागरने आंतरे॥ बारमां श्री वासुपूज्य तिर्थंकर थया चंपापुरी नगरीने विषे। वसुपुज्य राजा

नाथ तिर्थंकर थया ॥ अयोध्या नगरीने विषे ॥ संघेसन राजा पिता । सुजसा देवी राणी माता । हेम वर्णे ॥ सकरानुं लंछन अने पचास धनुष्यनुं देहमान ॥ ३० ॥ लाख वरसनुं आयुष । तेमां साडासात लाख वरस कुंवरपणें रह्या । पन्नर लाख वरसनुं राज पाल्युं । साडासात लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ ३ महीने केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्राविकारुप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने । सातसें साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १४ ॥ हवे चौदमा अंनतनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि ॥ चार सागरने आंतरे ॥ पंदरमा धर्मनाथ तिर्थंकर थया ॥ रत्नपुरी नगरीने वीषे ॥ भानु राजा पीता ॥ सुव्रता देवी राणी माता । हेम वर्णे ॥ वज्रनुं लंछन । पिस्तालिस धनुष्यनुं देहमान ॥ दस लाख वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां अढी लाख वर्ष कुंवरपणे रह्या ॥ साडा ७ लाख वरसनुं राज पाल्युं ॥ एक लाख वर्षनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी बे महिने केवल ज्ञान पाम्यां । साधु साधवी ॥ श्रावक श्रावीका रुप ॥ चतुर्विध संघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनि पेटी आपिने ॥ आठसें साधु संघाते

पाल्युं ॥ पोणी चोवीस हजार वरस चक्रवृत्तिनी पदवी नोगवी ॥ पोणी चोवीस हजार वरसनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लिधा पठि सोल महीने केवलज्ञान उपन्युं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापिने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधु संघाते। स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १७ ॥ हवे सतरमा कुंथुनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पठी ॥ पा पल्यमांथी एक क्रोडने १ हजार वर्षने उणे आंतरे ॥ १८ मां श्री अरनाथ तिर्थंकर थया ॥ नागपुर नगरीने विषे ॥ सुदर्सण राजा पिता ॥ देवकी देवी राणी माता॥ हिम वर्णे ॥ नंदाव्रत साथीयानुं लंछन ॥ त्रीस धनुषनुं देहमान ॥ चोरासी हजार वरसनुं आउखुं ॥ तेमां २१ हजार वरस कुंवरपणे रह्या ॥ २१ हजार वर्षनुं राज पाल्युं ॥ २१ हजार वर्षनी चक्रवृत्तीनी पदवी पाली ॥ २१ हजार वर्षनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पठी ॥ त्रण वर्षे केवलज्ञान उपन्युं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधु संघाते स्वामी ॥ नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १८ ॥ हवे अढारमा अरनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पठी। एक क्रोडने एक हजार

स्वामीनाथ एकाकिपणे ॥ बे दीवसनुं अणसण करी निर्वाण मोक्षने विषे पहोंता ॥ २४ ॥ पहेला तिर्थंकर श्री ऋषभदेव स्वामी ॥ अने चोविसमां तिर्थंकर श्री महाविरस्वामी ए बेहू वचे । एक कोडाकोड सागरोपम झाझेरुं ॥ तेहमां ४२ बेंतालिस हजार वर्ष उणानुं आंतरुं जाणवूं ॥ इति श्रीचोविस तिर्थंकरनां आंतरा संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री कर्मप्रकृतिना बोल. ॥

पहेलुं ज्ञानावरणीय कर्म ते आंखना पाटा समान ॥ १ ॥ बिजुं दर्शनावरणीय कर्म ते राजाना पोळिया समान ॥ २ ॥ त्रिजुं वेदनीय कर्म ते मध तथा अफिणे खरड्या खडग समान ॥ ३ ॥ चोथुं मोहनीय कर्म ते मदिरापान समान ॥ ४ ॥ पांचमुं आयूष कर्म ते हेड समान ॥ ५ ॥ छठुं नाम कर्म ते चितारा समान ॥ ६ ॥ सातमुं गोत्र कर्म ते कुंभारना चाकडा समान ॥ ७ ॥ आठमुं अंतराय कर्म ते राजाना भंडारी समान ॥ ८ ॥ ज्ञानावरणीय कर्में अनंत ज्ञान गुण ढांक्यो-छे ॥ १ ॥ दर्शना वरणीय कर्में अनंत दर्शन

न्नाणा वरणें ॥२॥ नेत्ता वरणे ॥ ३ ॥ नेत्त विनाणा वरणे ॥४॥ घाणा वरणे ॥ ५ ॥ घाण वि-
न्नाणा वरणे ॥ ६ ॥ रसा वरणे ॥ ७ ॥ रस विन्नाणा वरणे ॥ ८ ॥ फासा वरणे ॥९॥ फास वि-
न्नाणा वरणे १० ए १० ॥ प्रकारे भोगवे । हवे ज्ञानावरणीय कर्मनि स्थिति ॥ जघ० अंतर्मुहुर्त्त-
नि । उत्० त्रिश कोडाकोडि सागरोपमनी । अने अबाधा काल करे तो । त्रण हजार वरसनि
स्थिति ॥१॥ हवे दर्शना वरणीय कर्म ॥ ६ प्रकारे बांधे ते कहे छे ॥ पहेले बोले दंशण पडिणी-
याए ॥ १ ॥ दंशण निन्हवणयाए ॥२॥ दंशण आसायणाए ॥३॥ दंशण अंतराएणं ॥४॥ दंशण
पउसेणं ॥५॥ दंशण विसंवायणा जोगेणं ॥६॥ ए ॥ ६ प्रकारे बांधे ते ॥९॥ प्रकारे भोगवे ते कहे छे ॥
चक्षु दर्शना वरणीय ॥१॥ अचक्षु दर्शना वरणीय ॥२॥ अवधि दर्शना वरणीय ॥३॥ केवल
दर्शना वरणीय ॥४॥ निद्रा ॥५॥ निद्रा निद्रा ॥६॥ प्रचला ॥७॥ प्रचला प्रचला ॥८॥ थिण-
द्धिनिद्रा ॥९॥ ए ९ प्रकारे भोगवे ॥ दर्शना वरणीय कर्मनि स्थिति जघ० अंतमुहुर्त्तनि ।
उत्० ३० कोडाकोडि सागरोपमनि । अने अबाधा काल करे तो स्थिति त्रण हजार वरसनि ॥
॥ २ ॥ त्रिजुं वेदनीय कर्म तेहना २ भेद ॥ सातावेदनीय ॥ १ ॥ असाता वेदनीय ॥२॥

गंधा ॥ ३ ॥ अमणुणा रसा ॥ ४ ॥ अमणुणा फासा ॥ ५ ॥ मणदुहया ॥ ६ ॥ वयदुहया ॥ ७॥ कायदुहया ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ प्रकारे त्नोगवे । हवे एहनि स्थिति ॥ जघ० ॥ १ सागरना ॥ ७ त्नाग करिये एहवा ॥ ३ त्नाग एक पल्य ने असंख्यातमे त्नागे ऊणानि ॥ उत्० । त्रिश कोका-कोकि सागरोपमनि । एहनो अबाधा काल ॥ ३ हजार वरसनो ॥ ३ ॥ हवे चोथुं मोहनीय कर्म ते ठ प्रकारे वांधे ॥ तिव्वकोहे ॥१॥ तिव्वमाणे ॥२॥ तिव्वमायाए ॥३॥ तिव्वलोहे ॥४॥ तिव्वदंसण मोहणिज्जे ॥ ५ ॥ तिव्वचरित्त मोहणिज्जे ॥ ६ ॥ ए ६ प्रकारे वांधे ते २८ प्रकारे त्नोगवे । अनंतानुवंधि क्रोध ते पर्वतनि राड् समान ॥१॥ अनंतानुवंधि मान ते पथरना स्तंत्न समान ॥ २ ॥ अनंतानुवंधि माया ते वांशनि गांठ समान ॥ ३ ॥ अनंताबंधि लोत्न ते किर-मजना रंग समान ॥४॥ ए ॥४ गति करे नरकनि । स्थिति करे जावजीवनि । घात करे समकितनि ॥ ४ ॥ अप्रत्याख्यानी क्रोध ते तलावना खोट समान ॥ १ ॥ अप्रत्याख्यानी मान ते हाडकाना स्तंत्न समान ॥ २ ॥ अप्रत्याख्यानी माया ते घेटाना शृंग समान ॥ ३ ॥ अप्रत्याख्यानी लोत्न ते नगरनि खालना कादव समान ॥४॥ ए चारे गति करे तिर्यंचनि । स्थिति करे वरस एकनि।

करे तो। जघ० अंतर्मुहुर्त्तनी। उत्० ॥७ हजार वरसनि ॥ ४ ॥ हवे पांचमुं आयुष कर्म। सोल प्रकारे वांधे। तेहमांहि। नारकिनुं आयुष ॥ ४ प्रकारे वांधे ते महारंभयाए ॥ १ ॥ महापरिग्गहियाए ॥२॥ कुणिमाहारेणं ॥ ३ ॥ पंचिंदियवहेणं ॥ ४ ॥ तिर्यंचनुं आयुष ॥४ प्रकारे वांधे ॥ माइलयाए ॥१॥ नियडिलयाए ॥२॥ अलियवयणेणं ॥३॥ कूडतोले कूडमाणे॥४॥ मनुष्यनुं आयुप ॥४ प्रकारे वांधे। पगइभद्दयाए ॥१॥ पगइविणीयाए ॥२॥ साणुकोसयाए ॥३॥ अमछरियाए ॥ ४ ॥ देवतानुं आयुष ॥४ प्रकारे वांधे। सराग संजमेणं ॥१॥ संजमासंजमेणं ॥ २ ॥ वालतवोकमेणं ॥ ३ ॥ अकाम निजराए ॥४॥ ए १६ प्रकारे बांधे। ते ॥४ प्रकारे भो-गवे। नारकि देवतानुं आयुप ॥जघ० ॥ १० हजार वर्ष ने अंतर्मुहुर्त अधिकनुं ॥॥ उत्० ॥३३ सागर ने पूर्व कोडिनो त्रिजो भाग अधिक ॥ मनुष्य ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ ए २ नुं आयुष ॥ जघ० अंतर्मुहूर्तनुं। उत्० ॥ ३ पल्यने पूर्व कोडिनो त्रिजो भाग अधिक ॥ ५ ॥ हवे छठुं नाम-कर्म तेहना २ भेद ॥ शुभ नाम ॥१ ॥ अशुभ नाम ॥ २ ॥ तेमां शुभ नाम कर्म ॥ ४ प्रकारे वांधे ॥ कायुजुयाए ॥ १ ॥ भासुजुयाए ॥२॥ भावुजुयाए ॥३॥ अविसंवायणा जोगेणं ॥४॥

वैक्रेय शरिर ॥ ११ ॥ आहारक शरिर ॥ १२ ॥ तेजस शरिर ॥ १३ ॥ कार्मण शरिर ॥ ॥१४॥ उदारिक अंगोपांग ॥ १५ ॥ वैक्रेय अंगोपांग ॥१६॥ आहारक अंगोपांग ॥१७॥ उदारिक बंधन ॥१८॥ वैक्रेय बंधन ॥ १९ ॥ आहारक बंधन ॥ २० ॥ तेजस बंधन ॥२१॥ कार्मण बंधन ॥२२॥ उदारिक संघातन ॥ २३ ॥ वैक्रेय संघातन ॥२४॥ आहारक संघातन ॥ २५ ॥ तेजस संघातन ॥२६॥ कार्मण संघातन ॥२७॥ वज्र ऋषभ नाराच संघयण ॥२८॥ ऋषभ नाराच संघयण ॥ २९ ॥ नाराच संघयण ॥३०॥ अर्द्ध नाराच संघयण ॥३१॥ किलकु संघयण ॥३२॥ छेवट्ठ संघयण ॥३३॥ समचौरश संठाण ॥ ३४ ॥ निगोह परिमंमल संठाण ॥ ३५ ॥ सादि संठाण ॥३६॥ वामन संठाण ॥ ३७ ॥ कुज संठाण ॥ ३८ ॥ हुंम संठाण ॥ ३९ ॥ कालो वर्ण ॥ ४० ॥ निलो वर्ण ॥४१॥ रातो वर्ण ॥ ४२ ॥ पिलो वर्ण ॥ ४३ ॥ धोलो वर्ण ॥ ४४ ॥ सुरभि गंध ॥४५॥ दुरभि गंध ॥ ४६ ॥ तिखो रस ॥४७॥ कमवो रस ॥४८॥ कसायलो रस ॥४९॥ खाटो रस ॥५०॥ मिठो रस ॥ ५१ ॥ खरखरो स्पर्श ॥ ५२ ॥ सुंहालो स्पर्स ॥ ५३ ॥ भारे स्पर्स ॥ ५४ ॥ हलुवो स्पर्स ॥५५॥ टाढो स्पर्स ॥ ५६ ॥ उन्हो स्पर्स ॥ ५७ ॥ चोपमयो

ण ॥१२॥ अनुपूर्वी ॥ १३ ॥ विहाय गति ॥ १४ ॥ ए ॥ १४ अने प्रत्येक प्रकृति ८ ॥ त्रशनो दशको १० ॥ स्थावरनो दशको १० ॥ एवं ४२ थइ। तथा विस्तारे चौदनि ६५ तथा प्रत्येक प्रकृति ८ ॥ त्रशनो दशको १० ॥ स्थावरनो दशको १० ॥ एवं विस्तारे ९३ प्रकृति थइ ॥ नाम कर्मनि स्थिति। जघन्य। आठ मुहुर्त्तनि। उत्०। विश कोडाकोडि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल करे तो ॥ २ हजार वरसनो ॥६॥ हवे गोत्र कर्मना २॥ भेद ॥ उंच गोत्र ॥१॥ निच गोत्र ॥२॥ तेहमां उंच गोत्र ॥ ८ प्रकारे बांधे ॥ जाइ अमदेणं ॥१॥ कुल अमदेणं ॥२॥ बल अमदेणं ॥३॥ रुव अमदेणं ॥४॥ तव अमदेणं ॥५॥ सूय अमदेणं ॥६॥ लाभ अमदेणं ॥७॥ इस्सरिय अमदेणं ॥८॥ ए आठ मद अणकरवे करि उंच गोत्र बांधे। ते ॥८ प्रकारे भोगवे ॥ जाइ विसिठिया ॥१॥ कुल विसिठिया ॥२॥ बल विसिठिया ॥३॥ रुव विसिठिया ॥४॥ तव विसिठिया ॥५॥ सूय विसिठिया ॥६॥ लाभ विसिठिया ॥७॥ इस्सरिय विसिठिया ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ प्रकारे भोगवे ॥ १ ॥ हवे निच गोत्र ॥ ८ प्रकारे बांधे ते। जाइ मएणं ॥ १ ॥ कुल मएणं ॥ २ ॥ बल मएणं ॥ ३ ॥ रुप मएणं ॥४॥ तप मएणं ॥ ५ ॥ सूय मएणं ॥ ६ ॥ लाभ मएणं ॥ ७ ॥

सर्वे मलि ॥८५॥ प्रकृति बांध्यानि जाणवि ॥ जोगव्यानि ९३ प्रकृति ते ज्ञानावरणीयनि ॥१०॥ दर्शनावरणीयनि ॥९॥ वेदनीयनि ॥१६॥ मोहनीयनि ॥५॥ ते सम्मत्तवेयणिज्जे ॥१॥ मिछत्त वेयणिज्जे ॥२॥ सम्मामिछत्त वेयणिज्जे ॥३॥ कसाय वेयणिज्जे ॥ ४ ॥ नोकसाय वेयणिज्जे ॥ ५ ॥ ए ५ ॥ आयुषनि ॥ ४ ॥ नामनि ॥ २८ ॥ गोत्रनि ॥१६॥ अंतरायनि ॥५॥ ए सर्वे मली ॥९३॥ प्रकृति जोगव्यानि जाणवी ॥ अथवा ॥ १४८ ॥ प्रकारे पण जोगवे ते ॥ पांच ज्ञानावरणीयनि ॥ दर्शनावरणीयनि ॥९॥ वेदनीयनि ॥२॥ मोहनीयनि ॥ २८ ॥ आयुषनि ॥ ४ ॥ नाम कर्मनि ॥९३॥ गोत्र कर्मनि ॥२॥ अंतरायनि ॥५॥ एवं सर्वे मलिने ॥१४८॥ प्रकृति जाणवि तथा बंधन नामकर्मनि ॥१०॥ प्रकृति ग्रंथांतरे कहि छे ते जेलवतां ॥१५८॥ प्रकृति पण थाय ॥ अथवा मुल प्रकृति ॥८॥ तेहनि उत्तर प्रकृति ॥३१॥ ज्ञाना वरणीयनी ॥५॥ दर्शनावरणीयनि ॥९॥ वेदनीयनि ॥२॥ मोहनीयनि ॥२॥ आयुषनि ॥४॥ नामनि ॥२॥ गोत्रनि ॥२॥ अंतरायनि ॥५॥ एवं ॥ ३१ प्रकृति थाय तेहनो विस्तार ॥ १४८ कर्म प्रकृति जाणवि। ए बोल सिद्धांत प्रमाणे छे ॥ इति कर्म प्रकृतिना बोल समाप्तं ॥

आराधवी॥तिहां समय मात्रनो प्रमाद न करवो ॥चतुर्विध तीर्थनां गुण कीर्तन करवां ॥ए धर्म ध्याननो पहेलो जेद कह्यो॥१॥हवे धर्म ध्याननो बीजो जेद कहे छे ॥ अवायविजए कहेतां संसारमांहि जीव जेह थकि दुःख पामे छे तेहनो विचार चींतववो ॥ तेहनो। ए विचार ॥ मिथ्यात्व ॥ अव्रत ॥ प्रमाद ॥ कषाय ॥ असुजयोग ॥ तथा अढार पाप स्थानक ॥ छकायनी हिंसा । एह दुखना कारण जाणी ॥ एहवो आश्रव मार्ग छांडीने॥संवर मार्ग आदरवो॥ जेहथी जीव दुःख न पामे॥ए धर्म ध्याननो बीजो जेद कह्यो॥२॥हवे धर्म ध्याननो त्रीजो जेद कहे छे॥विवागविजए ॥ कहेतां ॥ जीव जे सुख दुःख जोगवे छे ॥ ते स्याथकी तेहनो विचार चिंतववो ॥ तेहनो एह विचार ॥ जीवे जेहवे रसे करि पूर्वे ॥ जेहवा शुजाशुज ज्ञाना वरणीयादिक कर्म उपार्ज्यां छे॥ ते शुजाशुज कर्मना उदयथी जीव तेहवां सुख दुःख अनुजवे छे॥ ते अनुजवता थका॥ कोइ उपर राग द्वेष न आणीये॥ समता जाव आणीए॥ मन वचन कायाना शुज योग सहित श्री जैनधर्मने विषे प्रवर्तिये॥ जेम निराबाध परम सुख पामीए॥ ए धर्मध्याननो त्रीजो जेद कह्यो ॥ ३ ॥ हवे धर्म ध्याननो चोथो जेद कहे छे ॥ संठाणविजए कहेता ॥ त्रण लोकना आकारनुं स्वरुप

आराधवी॥तिहां समय मात्रनो प्रमाद न करवो ॥चतुर्विध तीर्थनां गुण कीर्तन करवां ॥ए धर्म ध्याननो पहेलो भेद कह्यो॥१॥हवे धर्म ध्याननो बीजो भेद कहे छे ॥ अवायविजए कहेतां संसारमांहि जीव जेह थकि दुःख पामे छे तेहनो विचार चींतववो ॥ तेहनो। ए विचार ॥ मिथ्यात्व ॥ अव्रत ॥ प्रमाद ॥ कषाय ॥ असुभयोग ॥ तथा अढार पाप स्थानक ॥छकायनी हिंसा । एह दुखना कारण जाणी ॥ एहवो आश्रव मार्ग छांडीने॥संवर मार्ग आदरवो ॥ जेहथी जीव दुःख न पामे॥ए धर्म ध्याननो बीजो भेद कह्यो॥२॥हवे धर्म ध्याननो त्रीजो भेद कहे छे॥विवागविजए ॥ कहेतां ॥ जीव जे सुख दुःख भोगवे छे ॥ ते स्याथकी तेहनो विचार चिंतववो ॥ तेहनो एह विचार ॥ जीवे जेहवे रसे करि पूर्वे ॥ जेहवा शुभाशुभ ज्ञानावरणीयादिक कर्म उपार्ज्यां छे ॥ ते शुभाशुभ कर्मना उदयथी जीव तेहवां सुख दुःख अनुभवे छे॥ ते अनुभवता थका ॥ कोइ उपर राग द्वेष न आणीये॥समता भाव आणीए॥मन वचन कायाना शुभ योग सहित श्री जैनधर्मने विषे प्रवर्तिये॥ जेम निराबाध परम सुख पामीए॥ ए धर्मध्याननो त्रीजो भेद कह्यो ॥ ३ ॥ हवे धर्म ध्याननो चोथो भेद कहे छे ॥ संठाणविजए कहेता ॥ त्रण लोकना आकारनुं स्वरुप

पतिना ज्ञवन छे॥एहवा त्रण लोकनां सर्व स्थानक समकित रहित करणी विना सर्व जीवे अनंती वार जन्म मरणे करी फरसी मूक्या छे॥एम जाणी समकित सहित श्रुत अने चारित्र धर्मनी आराधना करीये॥जेम अजरामर पद पामीये॥ए धर्म ध्याननो चोथो ज्ञेद कह्यो ॥४॥ हवे धर्म ध्यानना ४ लक्षण॥तेमां धर्म ध्याननुं पहेलुं लक्षण कहे छे ॥ आणारुइ कहेतां वीतरागनी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे तेहने आणारुइ कहिये॥ए धर्म ध्याननुं पहेलुं लक्षण कह्युं ॥१॥ हवे धर्म ध्याननुं बीजुं लक्षण कहे छे ॥ निसर्गरुइ कहेतां ॥ जीवने स्वज्ञावेज तथा जाति स्मरणादिक ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म करवानी रुचि उपजे॥ तेहने निसर्ग रुचि कहिये॥ए धर्म ध्याननुं बीजुं लक्षण कह्युं॥हवे धर्म ध्याननुं त्रीजूं लक्षण कहे छे ॥ सूत्तरुइ कहेतां॥सूत्रना बे ज्ञेद॥अंग पविठ ॥१॥ अने अंग बाहिर ॥२॥ अंग पविठ ते आचारांगादि १२ अंग ॥ तेमां ॥११ अंग ॥कालिक॥अने बारमुं अंग दृष्टिवाद ॥ ते। उत्कालिक १ अंग बाहिरनां २ ज्ञेद॥आवश्यक १ अने ॥ आवश्यक व्यतिरिक्त ॥ आवश्यक ते सामायकादिक ठ अध्ययन ते उत् कालिक॥ तथा उत्तराध्ययनादिक कालिक

कह्युं ॥ ४ । हवे धर्म ध्यानना चार आलंबन कहे छे ॥ वायणा ॥१॥ पूछणा ॥ २ ॥ परियट्टणा ॥ ३ ॥ धर्म कथा ॥४॥ हवे धर्म ध्याननुं पहेलुं आलंबन कहे छे॥ वायणा ते केहने कहिए॥ विनय सहित ज्ञान तथा निर्जराने अर्थे ॥ सूत्रना अर्थना जाण गुर्वादिक समीपे सूत्र तथा अर्थनी वांचणी लेवी॥ तेहने वायणा कहीए॥ए धर्म ध्याननुं पहेलुं आलंबनकह्युं ॥ १ ॥ हवे धर्म ध्याननूं बीजूं आलंबन कहे छे ॥ पूछणा ते केहनें कहिए ॥ अपूर्वज्ञान पामवाने अर्थे ॥ तथा जैनमत दीपाववाने अर्थे ॥ तथा संदेह निवारवाने अर्थे ॥ तथा परनी परीक्षा लेवानें अर्थे यथा योग्य विनय सहित गुर्वादिकने प्रश्न पूछीए ॥ तेहने पूछणा कहिए॥ ए धर्म ध्याननुं बीजूं आलंबन कह्युं ॥ २ ॥ हवे धर्म ध्याननुं त्रीजूं आलंबन कहे छे ॥ परियट्टणा ते केहनें कहिए॥ पूर्वे जे जिनभाषित सूत्र अर्थ भण्या छे ॥ ते असखलित करवाने अर्थे ॥ तथा निर्जराने अर्थे सुद्ध उपयोग सहित सुद्ध सूत्र अर्थनी वारंवार सझाय करे तेहने परियट्टणा कहिए ॥ ए धर्मध्याननूं त्रीजुं आलंबन कह्युं ॥ ३ ॥ हवे धर्मध्याननूं चोथुं आलंबन कहे छे ॥ धर्मकथा ते केहनें कहिए॥ वीतरागे जे भाव जेहवा परुप्या छे ॥ ते भाव पोते

प्रकारनी कथा अक्षेवणी ॥ १ ॥ विक्षेवणी ॥ २ ॥ संवेगणी ॥ ३ ॥ निर्वेगणी ॥४॥ ए चार कथा विस्तारपणे कहे तेहने धर्मकथा कहीए ॥ ए धर्मध्याननुं चोथुं आलंबन कह्युं ॥ ४ ॥ अक्षेवणी प्रमुख ४ कथानो विस्तार ॥ चोथे ठाणे उद्देशे बीजे सूत्र ५८ मां मध्ये छे ॥ हवे धर्मध्याननी चार अणुप्पेहा कहे छे ॥ अणुप्पेहा ते केहने कहिए ॥ जीवद्रव्य अने अजीवद्रव्य तेहनो स्वभाव स्वरूप जाणवाने अर्थे सूत्रना अर्थ विस्तारे चींतवीए ॥ तेहने अणुप्पेहा कहिए ॥ हवे धर्मध्याननी पहेली अणुप्पेहा कहेछे ॥ एकत्वाणुप्पेहा ते केहने कहिए ॥ जीव असंख्यात प्रदेसी अरुपी सदा स उपयोगी ते ॥ चैतन्यरूप एहवो एक माहरो आत्मा निश्चय नये छे ॥ तेम सर्व आत्मा निश्चय नये एहवाज छे ॥ अने व्यवहार नये एहवो आत्मा अनादि कालनो ते अचैतन जड वर्णादि २० रूप सहित पुद्गलनो संयोगी थको ॥ त्रस ने स्थावर रूप लेइने अनेक नृत्यकार नटुयानीपरे अनेक रूप ॥ अनेक ठांदे प्रवर्ते छे ॥ ते त्रसनो त्रसरूपे प्रवर्त्ते तो जघन्य अंतर्मुहुर्त्त उत्कृष्टो बे हजार सागर झाझेरा सुधी रहे ॥ अने स्थावरनो स्थावरपणे प्रवर्त्ते तो जघन्य अंतर्मुहुर्त्त उत्कृष्टो अनंती उत्सर्पणी अवसर्पणी ॥

अठ्यावीस कोड सतावन लाख चौद हजार वसे अठ्यासी उपर पांच पल्यनी ए एटली देवि भोगवी तोपण तृप्ति न पाम्यो ॥ मनुष्य मध्ये स्त्रीवेद पुरुषवेद देव कुरु उत्तरकुरु मध्ये युगल युगलणी थयो ॥ तिहां महा मनोहर रुप मनवंछित सुख भोगव्यां ॥ दस प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछित सुख लिधां ॥ स्त्री पुरुषने क्षिण मात्रनो वियोग न पडे ॥ ३ पल्योपम निरंतर सुख विलस्यां ॥ हरिवास रमकवास मध्ये २ पल्योपम ॥ हेमवय क्षेत्र एरणवय क्षेत्र मध्ये १ पल्य ॥ छपन अंतरदीपा मध्ये पल्योपमनो असंख्यातमो भाग ॥ युगल युगलणी पणे अनंती वार ॥ स्त्री वेद पुरुष वेदनां रुप लेइ खेल्यो पण आत्मा तृप्ति न पाम्यो ॥ वली चक्रवर्तिने घरे स्त्री रत्नपणे लक्ष्मी सरिखा रुप अनंतीवार ॥ स्त्री वेद पुरुष वेदना रुप जीव लेइ खेल्यो ॥ पण तृप्ति न पाम्यो ॥ वासुदेव मंडलीक राजा ॥ प्रधान व्यवहारीयाने घरे ॥ स्त्री वेद ॥ मनोज्ञ सुख वंछित भोग ॥ दीर्घ पूर्वकोडादिकनां आउखा पणे प्रवर्त्यो ॥ वलि तेह ज जीव मनुष्य मध्ये कुरुपवान दुर्भागी निच कुल ॥ दरीद्री भर्तार ॥ स्त्री पण अलछरुप दुर्भागिणी पणे जीव नटवापणे प्रवर्त्यो ॥ तोहि मनुष्य-

नय आत्मा जाणवो ॥ ते माटे शुद्ध व्यवहारे प्रवर्त्ते ॥ अशुद्ध व्यवहार मटाके ॥ तेवारे सिद्ध होय एहवो माहरो एक आत्मा छे॥ जे जणी अपर परिवार ते स्वार्थ रूपी छे ॥ अने पडगसा १ मीससा २ वीससा ३ पुद्गल ते वर्ण पर्यवे करी जे जेहवे स्वभावे छे ॥ ते तेहवे स्वभावे न रहे ते पण असास्वता ते माटे एक माहरो पोतानो आत्मा पोताना कार्यनो साधक सास्वतो जाणीने पोताना आत्मानुं साधन करीये ॥ ए धर्म ध्याननी पहेलो अणुप्पेहा कही ॥ हवे धर्मध्याननी बीजी अणुप्पेहा कहे छे ॥ अणी चाणुप्पेहा ते केहने कहिये रूपी पुद्गलने अनेक प्रकारे यतना करिए ॥ तोपण अनित्य ॥ नित्य एक श्री जैनधर्म परम सुखदायक पोताना आत्माने ॥ ते माटे आत्मा नित्य जाणीने समकितादिक संवरे करि पुष्टो करीये ॥ ए धर्म ध्याननी बीजी अणुप्पेहा कही ॥ २ ॥ हवे धर्म ध्याननी त्रीजी अणुप्पेहा कहे छे ॥ असरणाणुप्पेहा ते केहने कहिये आ भवने विषे अने परभव पहोंचतां जीवने एक समकित पूर्वक जैन धर्म विना जन्म जरा मरणना दुख निवारवा बीजो कोइ सरण समर्थ नथी ॥ एम जाणी श्री जैन धर्मनुं सरण करीये ॥

द्वार ॥ ३ ॥ चोथो ज्योतिषीनो द्वार ॥ ४ ॥ पांचमो वैमानिकनो द्वार ॥ ५ ॥ हवे पहेलो नरकनो द्वार कहे छे ॥ पहेले नाम ॥ १ ॥ बिजे गोत्र ॥ २ ॥ त्रिजे अर्थ ॥ ३ ॥ चोथे पिंक ॥ ४ ॥ पांचमे पोलार ॥ ५ ॥ छठे अलोक ॥ ६ ॥ सातमे आधार ॥ ७ ॥ आठमे आंतरा ॥ ८ ॥ नवमे पुष्पाविकीर्ण ने आवलिका वंध ॥ ९ ॥ दशमे अंधकार ॥ १० ॥ इग्यारमे नारकि ने उपजवाना स्थानक ॥ ११ ॥ बारमे क्षेत्र वेदना ॥ १२ ॥ तेरमे पनर परमाधामिना नाम ॥ १३ ॥ चौदमे जीव अजीवना परिणाम ॥ १४ ॥ पनरमे नारकि ने अवधिनुं देखवुं ॥ १५ ॥ सोलमे संघयण ॥ १६ ॥ सतरमे कोण जीव कइ नरके उपजे ॥ १७ ॥ अढारमे ॥४॥ बोल कहेवाशे ॥ पहेले नाम कहे छे ॥ घमा ॥१॥ वंशा ॥ २ ॥ शिला ॥३॥ अंजणा ॥ ४ ॥ रिठा ॥ ५ ॥ मघा ॥ ६ ॥ माघवइ ॥ ७ ॥ ए साते उंधा छत्रने आकारे छे ॥ १ ॥ बीजे गोत्र कहे छे ॥ रत्न प्रभा ॥ १ ॥ शर्कर प्रभा ॥ २ ॥ वालु प्रभा ॥ ३ ॥ पंक प्रभा ॥ ४ ॥ धूम प्रभा ॥ ५ ॥ तम प्रभा ॥ ६ ॥ तमतमा प्रभा ॥ ७ ॥ रत्न प्रभा ते स्यामाटे सोल हजार जोजननो खरकांड छे ॥ ते ॥ सोल जातिना रत्नमय छे । एकेकुं रत्न हजार हजार जोज-

एक हजार जोजन निचुं मुकिये ॥ वचे १ लाख ने अठोत्तेर हजार जोजननी पोलार ठे ॥ ते मांहि ॥ १३ पाथरा ने ३० लाख नरकावासा ठे ॥ १ ॥ बीजी नरके एक लाख ने बत्रिश हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंरु ठे । तेहमांथि एक हजार जोजन उंचु मुकिये ॥ एक हजार जोजन निचुं मुकिये ॥ वचे एक लाख ने ३० हजार जोजननि पोलार ठे ॥ तेमांहि ११ पाथरा ने ॥ २५ लाख नरकावासा ठे ॥ २ ॥ त्रिजी नरके एक लाख ने अठ्याविश हजार जोजननो पृथ्वी पिंरु ठे । तेहमांहि ॥ १ हजार जोजन उंचुं मुकिये ॥ १ हजार जोजन निचुं मुकिये वचे ॥ एक लाख ने ठविश हजार जोजननो पृथ्विनो पिंरु ठे । तेमांहि ॥ ए पाथरा ने १५ लाख नरकावासा ठे ॥ ३ ॥ चोथि नरके एक लाख ने २० हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंरु ठे ॥ तेहमांथि ॥ १ हजार जोजन उचुं मुकिये ॥ १ हजार जोजन निचुं मुकिये वचे ॥ एक लाख ने १७ हजार जोजननि पोलार ठे । तेमांहि ॥ ७ पाथरा ने ॥ १० लाख नरका वासा ठे ॥ ४ ॥ पांचमि नरके एक लाख ने अढार हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंरु ठे । तेहमांथि एक हजार जोजन उंचुं मुकिये एक हजार जोजन निचुं मुकिये ॥ वचे एक लाख ने १६ हजार जो-

आधार कहे छे । साते नरक सेने आधारे रहि छे ॥ २० हजार जोजननो घनोदधि जाडपणे छे॥ असंख्याता जोजननो लांब पणे पहोल पणे छे ॥ असंख्याता जोजननि परिधि छे ॥ ते थिणा घी सरिखो जाणवो ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय छे ॥ ते विघर्या घी सरिखो जाणवो ॥ असंख्याता जोजननो तनुवाय छे ॥ ते तपाव्या घी सरिखो जाणवो ॥ तेहने आधारे ७ नर्क रहि छे ॥ एकेकि नरके त्रण त्रण वळाका छे ॥ असंख्याता जोजननो आकाशास्तिकाय छे । विश हजार जोजननो घनोदधि जाडपणे छे छेहडे जाता छ जोजननो रह्यो ॥ पेहली नरके ६ जोजननो घनोदधि ॥ १ ॥ बिजी नरके ६ जोजन ने ॥ १ त्रियोभाग ॥२॥ त्रिजी नरके ६ जोजन ने ॥ २ त्रियाभागे ॥ चोथी नरके ॥ ७ जोजननो घनोदधि ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ७ जोजन ने ॥ १ त्रियोभाग ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ७ जोजन ने ॥ २ त्रियाभाग ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ ८ जोजननो घनोदधि ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय छे छेहडे जातां साडाचार जोजननो रह्यो पहेलि नरके साडा चार जोजननो घनवाय छे ॥ १ ॥ बिजी नरके पोणा पांच जोजननो घनवाय छे ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ॥ ५ जोजननो घनवाय छे ॥ ३ ॥ चोथी

१६१६६ ॥ सोल हजार एकसो छासठ जोजन ने ॥ २ त्रिश्रा भागनुं आंतरुं ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ॥ ५ पाथडा ने ॥ ४ आंतरा ॥ अकेका पाथडाने २५२५० ॥ सवा पचीश हजार जोजननुं आंतरुं ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ३ पाथडा ने ॥ २ आंतरा ॥ एकेका पाथडाने ॥ ५२५०० ॥ साडा बावन हजार जोजननुं आंतरुं ॥ ६ ॥ सातमी नरके १ पाथडो छे ॥ आंतरुं नथि ॥७॥८॥ हवे नवमे पुष्पाविकीर्ण ने आवलिका बंध नरकावासा कहे छे ॥ पहेली नरके २९९५५६७ ॥ ओगणत्रीश लाख पंचाणु हजार पाचसें सडसठ पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ४४३३ चुमालिसें तेत्रीस पंक्तिबंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मळीने ३० लाख ॥ १ ॥ बिजी नरके २४९७३०५ ॥ चोविस लाख सताणु हजार त्रणसें पांच पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे । अने २६९५ छविसें पंचाणु पंक्ति बंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ २५ लाख ॥ २ ॥ त्रिजी नरके १४९८५१५ चौद लाख अठाणुं हजार पांचसें पंदर पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे । अने १४८५ चौदसें पंच्यासी पंक्ति बंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ १५ लाख ॥ ३ ॥ चोथी नरके ९९९२९३ ॥ नव लाख नवाणुं

॥ ५ ॥ ज्वर ॥ ६ ॥ नय ॥ ७ ॥ शोक ॥ ८ ॥ खरज ॥ ९ ॥ परवश ॥ १० ॥ ए १० प्रकारनि अनंति वेदना छे ॥ १२ ॥ तेरमे ॥ १५ परमाधामिना नाम कहे छे ॥ अंब ॥ १ ॥ अंबरिस ॥ २ ॥ शाम ॥ ३ ॥ सबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महा काल ॥८॥ असि पत्र ॥९॥ धनूप ॥१०॥ कुंत्त ॥११॥ वालु ॥१२॥ वेतरणी ॥१३॥ खर स्वर ॥१४॥ महाघोप ॥१५॥ ॥१३॥ हवे चौदमे जीव अजीवना परिणाम कहे छे॥ जीवपरिणामना ॥१० नेद ते ॥ गति परिणाम ॥१॥ इंद्रिय परिणाम ॥२॥ कसाय परिणाम ॥३॥ लेसा परिणाम ॥४॥ जोग परिणाम ॥५॥ उपयोग परिणाम ॥६॥ नाण परिणाम ॥७॥ दंसण परिणाम ॥८॥ चरित्त परिणाम ॥९॥ वेद परिणाम ॥१०॥ हवे अजीव परिणामना १० नेद कहे छे ॥ बंधन परिणाम ॥ १ ॥ गतिपरिणाम ॥२॥ संठाण परिणाम ॥३॥ नेद परिणाम ॥४॥ वर्ण परिणाम ॥५॥ गंध परिणाम ॥६॥ रस परिणाम ॥७॥ स्पर्स परिणाम ॥८॥ अगुरु लघु परिणाम ॥९॥ शब्द परिणाम ॥१०॥ १४ ॥ पनरमे अवधिज्ञाने देखवुं कहे छे ॥ पहेली नरकना नारकि । जघ० साढा त्रण गाउ देखे । उत्० चार गाउ देखे ॥ १ ॥ बिजीना । जघ० ३ गाउ । उत० साढा त्रण गाउ देखे ॥२॥

आवि उपजे ॥ ७॥ १७॥ अढारमे अशुभ वर्ण ॥ १ ॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥ ३ ॥ स्पर्स भोगवता थका नारकि विचरे छे ॥ १८ ॥ इति नारकिनो बोल समासं ॥ १ ॥ हवे बिजो भवनपतिनो द्वार कहे छे॥ पहेले नाम ॥१॥ बिजे चिन्ह ॥२॥ त्रिजे वर्ण ॥३॥ चोथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥ ५ ॥ छठे आत्म रक्षक ॥ ६ ॥ सातमे देवांगना ॥ ७ ॥ आठमे अणिका ॥ ८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥ ९ ॥ दशमे उद्योत ॥ १० ॥ इग्यारमे परिषद् ॥ ११ ॥ बारमे लोकपाल ॥ १२ ॥ तेरमे त्रायत्रिंशक ॥ १३ ॥ चौदमे ४ बोल ॥ १४ ॥ पहेले नाम कहे छे ॥ असुर कुमार ॥ १ ॥ नाग कुमार ॥ २ ॥ सुवर्ण कुमार ॥ ३ ॥ विज्जु कुमार ॥ ४ ॥ अग्नि कुमार ॥५॥ द्वीप कुमार ॥६॥ उदधि कुमार ॥ ७ ॥ दिशा कुमार ॥ ८ ॥ पवन कुमार ॥९॥ थणित कुमार ॥ १० ॥ १ ॥ बिजे चिन्ह कहे छे ॥ असुर कुमारने चुडामणि मुगटनुं चिन्ह ॥१॥ नाग कुमारने फेणनुं चिन्ह ॥२॥ सुवर्ण कुमारने गरुडनुं चिन्ह ॥३॥ विज्जु कुमारने वज्रनुं चिन्ह ॥४॥ अग्नि कुमारने कलशनुं चिन्ह ॥५॥ द्वीप कुमारने सिंहनुं चिन्ह ॥ ६ ॥ उदधि कुमारने घोडानुं चिन्ह ॥ ७ ॥ दिशा कुमारने गजनुं चिन्ह ॥ ८ ॥ पंवन कुमारने मगरमछनुं

गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ सुन्नट ॥ ६ ॥ महीष ॥ ७ ॥ ८ ॥ नवमे बोले अणिकाना अधिपति एमज जाणवा ॥ ९ ॥ हवे १० मे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो उद्योत ॥ १ ॥ देवीउंनो उद्योत ॥ २ ॥ आन्नरणनो उद्योत ॥ ३ ॥ शुन्न पुफलनो उद्योत ॥ ४ ॥ १० ॥ हवे ११ मे त्रण परिषद कहेछे ॥ दक्षिण दिशाना चमरेंद्रनी ३ परिषद । समीया ॥ १ ॥ चंम्रा ॥ २ ॥ जाया ॥ ३ ॥ समीयानो ॥ २४ हजारनो परिवार ॥ १ ॥ चंम्रानो ॥ २८ हजारनो परिवार ॥ २ ॥ जायानो ॥ ३२ हजारनो परिवार ॥३॥ समीया तेम्या आवे ने मोकल्या जाय ते साथे गुफ वात करे ॥ १ ॥ चंम्रा तेम्या आवे ने अणमोकल्या जाय ते साथे गुफ वात न करे अने करणकरावण करे ॥ २ ॥ जाया अण तेम्या आवे ने अणमोकल्या जाय एहने कामकाज दिये ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनी कायमा देवतानि ॥ ३ परिषद तेमांहि अभ्यंतर परिषदना ॥ ६०००० ॥ साठ हजार ॥ १ ॥ मझम परिषदना ॥ ७०००० ॥ सितेर हजार ॥ २ ॥ बाहिरलि परिषदना ॥ ८०००० ॥ ऐंसी हजार ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशना चमरेंद्रनि देवीउंनी ॥ ३ परिषद तेमांहि अभ्यंतरनि ॥ ३५० देवीउं १ मझम परिषदनी ॥ ३०० देवीउं ॥२॥ बाहिरली परिषदनी

॥ २५० ॥ देवीऊं ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि देवीऊंनि ॥ ३ परिषद् तेमांहि अभ्यंतरनि ॥ १७५ देवीऊं ॥ १ ॥ मझमनि ॥ १५० देवीऊं ॥ २ ॥ बाहिरलीनि ॥ १२५ देवीऊं ॥ ३ ॥ ए सर्व परिवार दक्षिण दिशना चमरेंद्रनो जाणवो ॥ एमज उत्तर दिशना वलेंद्रनि ३ परिषद् जाणवी पण एटलो फेर ॥ पहेलीना ॥ २० हजार देवता ॥ १ ॥ बिजीना ॥ २४ हजार देवता ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ २८ हजार देवता ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि ॥ ३ परिषद् ते पहेलीना ॥ ५० हजार ॥ १ ॥ बिजीना ॥ ६० हजार ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ ७० हजार ॥ ३ ॥ वलेंद्रनि देवीऊंनी ॥ ३ परिषद् ॥ पहिलीनि ॥ ४५० देवीऊं ॥ १ ॥ बिजीनि ४०० देवीऊं ॥२॥ त्रिजीनि ॥ ३५० देवीऊं ॥३॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि देवीऊंनि ॥ ३ परिषद ॥ पहेलीनि ॥ २२५ देवीऊं ॥ १ ॥ बिजीनि ॥ २०० देवीऊं ॥ २ ॥ त्रिजीनि ॥ १७५ देवीऊं ॥ ३ ॥ ११ ॥ बारमे लोक पाल कहे छे । सोम ॥१॥ जम ॥ २॥ वरुण ॥३॥ वेसमण ॥४॥ सोमनो वारो पूर्व दिशे ॥१॥ जमनो वारो दक्षिण दिशे ॥ २॥ वरुणनो वारो पश्चिम दिशे ॥ ३ ॥ वेसमणनो वारो उत्तर दिशे ॥४॥ सोमने वारे सुख शाता होय ॥ १ ॥